

# Universitätsbibliothek Wuppertal

**Xenophontis, Philosophi Et Imperatoris Clarissimi, Qvae  
Exstant Opera**

**Xenophon**

**Francofurti, 1596**

Liber quintus

---

**Nutzungsrichtlinien** Das dem PDF-Dokument zugrunde liegende Digitalisat kann unter Beachtung des Lizenz-/Rechtehinweises genutzt werden. Informationen zum Lizenz-/Rechtehinweis finden Sie in der Titelaufnahme unter dem untenstehenden URN.

Bei Nutzung des Digitalisats bitten wir um eine vollständige Quellenangabe, inklusive Nennung der Universitätsbibliothek Wuppertal als Quelle sowie einer Angabe des URN.

[urn:nbn:de:hbz:468-1-331](#)



μάδι, ἐφοκύρες, οὐκέχωρε. Διλέγω, ἔφη,  
τίνα διηγέρυμασσοι αὐτῶν. καὶ δῆ-  
ταστε μὲν εἰς τὸ δομόν εἰς τὴν σκιάν αὐτῆς  
διαφθορά, οὐ διέγνωμεν αὐτῶν. χαρά τε  
γέροντός τοι, καὶ αἱ δε εἴσπαιναι πᾶσαν πε-  
ρι αὐτῶν. καὶ τοῖς αἷς ὁμοίαν ταῖς δύναμις εἶχε  
τὴν ἑδύτα. ἐπειδὴ δὲ, γνῶνας βουλέμνους ποία  
εἴη δέσμοινα, πάσας τετέλεσθαί μν, τα-  
χὺ γραμμής \* καὶ πασῶν ἐφάγετο Διαφέρου-  
σα τῷ ἄλλῳ, καὶ αἵρετο διηγέρυμα, κεκαλυμ-  
μένη τε καὶ εἰς γῆν ὥραστα. ὡς δὲ αἰαστῆναν Β  
τὴν ἀκελλοσαῦρην, σχιστεῖσαν μὲν αὐτῇ  
πᾶσαν αἱ ἀμφὶ αὐτῶν, διένεγκε δὲ ἐνταῦ-  
θα, πεφθονταὶ τῷ μεγέθῃ, ἐπειτα δὲ τῇ ρώ-  
μῃ γε τῇ ἀρετῇ καὶ τῇ διδημοσιώῃ, καὶ αἵρε-  
σι ταπεινῇ δήμασι ἐπικύα. δῆλα δὲ τοῦ αὐ-  
τῆς καὶ τὰ διάφρα κατασάζοντα μὲν τοῦ  
πεπλων, τὰ δὲ καὶ ὅπερ τὰς πόδας. ὡς δὲ ἕ-  
ρημόν γεράτερος εἶπε, θάρρος ὁ γυνάμ. κα-  
λὸν μὲν γέροντός τοι ἀγαθὸν ἀκεύομεν καὶ τὸ σὸν  
αἴδρα εἴρη, μὲν μέρη τοι διηγέρυμα αἴδρι σε δι-  
βαδί ὅπου τε διεῖδος ἀκείνου χείρου, οὔτε τοῦ  
τυράννου, οὔτε τὴν διάμαντα. Διλέγω, ὡς ἕ-  
ρημοί γε νομίζομεν, εἴτις καὶ ἄλλος αὖτος, καὶ ὁ  
Κύρος ἀξιός θειαν μάζεαδα, οὐ σὺν ἐποδί-  
στο τούτῳ. ὡς δὲν τῷ τοῦ πονοστήριαν, τελε-  
κατερρίξατο τε τὸ αἴθεν πέπλον, καὶ αἰω-  
δύσετο σπινατεῖσαν δὲ αὐτῇ καὶ διψά. Καὶ  
τύτασθε ἐφαίνετεν αὐτῆς διπλόν μέρος  
τῆς περιστοπῆς, ἐφαίνετε δὲν δέρη καὶ αἱ χεῖρες.  
καὶ διέστι, ἐφη, ὁ Κύρε, ὡςέμοι τε ἔδοξε καὶ  
τοῖς ἄλλοις πᾶσι τοῖς ἴδομοι μήπω φιναίμη-  
δεν γένεσθαι τυνάγεται τὸ διητόν τοι αὐτῶν τοῦ  
τῆς αἵρετα. διλάδα πούτως, ἐφη, καὶ σὺ τὸ δέρη αὐ-  
τῶν. καὶ ὁ Κύρος ἐφη, ναὶ μάζα πολύ γεντι-  
τον εἰ τοιαύτη θεῖν, σίαν σὺ λέγεις. τί δα; ἐφη  
οὐ γενισόχες. ὅπι, τὸν ἐφη, καὶ τινα συάκευσας ὅπι  
καλέσθιν, εἰ πρεσβύτορεν ἐλθεῖν θεασόμενος,  
οὐ πολὺ μοὶ χρῆντος οὔσης, δέδοικα μὴ πολὺ  
θαῖτον ἀκείνη με αὐτῆς αἰαπείσῃ καὶ πάλιν ἐλ-  
θεῖν θεασόμενον. ἐκ δὲ τέτταίσιων αἱ ἀμελήσας Ε  
ῶν με δέ τοι περάτην, καὶ θούμην ἀκείνην θεώ-  
ρημος. καὶ ὁ γενισόχες αἰαγέλεσσας εἶπεν, οἴσσοι,  
ἐφη, ὁ Κύρε, ικανὸν ἐβή καλλος τὸ αἰδερόπη  
αἰαγκάζειν τὸν μὴ βουλέμνους περάτην τοῦ  
επεφύκει, πολὺ τοι αἱ λιάνην τενόμοισα.

A Non profecto, ait Cyrus. Ego verò inquit Araspes, hanc vidi, quum eam tibi sclige-  
rem. Ac sane quum tabernaculum eius in-  
gredemur, primum eam non adgnoui-  
mus. Nam & humili sedebat, & circum eam  
sedebant ancillæ omnes, habebatque ve-  
stem illarum vestibus similem. Quum au-  
tem studio cognoscendi, quænam esset  
hera, circumspectaremus vniuersas; mox  
alias omnes excellere visa est, tametsi se-  
deret, ac velata terram intueretur. Post-  
quam vero surgere eam iussimus, confur-  
  
B rexere cum ea cunctæ, quæ aderant. Tum  
vero præstabat hæc primum proceritate,  
deinde robore, virtute, gestuum elegan-  
tia, licet habitu vili vestita constitisset. Et  
iam lacrumas videre erat destillantes par-  
tim in vestem, partim ad ipsos usque pe-  
des. Quumq; natu inaximis inter nos di-  
ceret: Bono animo sis, mulier: nam tam-  
etsi præstare virum tuum corporis & ani-  
mibonis audiamus, tamen ei te modo se-  
ligimus, quem scire debes neque formæ  
elegantia illi cedere, neque ingenio, neq;  
potestate. Nimirum si quisquam alias, Cy-  
rus certe nostra sententia dignus est admir-  
atione, cuius tu deinceps eris. Id ubi mu-  
lier audiuit, dilacerato superiore veste ce-  
pit eiulari, ancillis yna vociferantibus. At-  
que heic iam maxima ex parte facies eius  
adparuit, & collum & manus adparue-  
runt. Adeoque scito, mi Cyre, tam mihi  
quam aliis eam intuentibus visum esse,  
numquam mulierem in Asia vel esse na-  
tam, vel extitisse talem ex mortalibus.  
Sed enim, inquit, omnino tu eam specta-  
bis. Et Cyrus: Immo vero multo finius,  
ait, si talis est, qualem tu prædicas. Quid i-  
ta? inquit adulescens ille. Quia si nunc, ait,  
postquam de te audiui, eam esse formo-  
sam, persuaderi mihi patiar, ut ad spectan-  
dum illam abeam, non admodum otiosus:  
vereor, ne multo citius illa mihi rursum  
persuadeat, ut spectatum redeam, ac dein-  
de neglectis fortasse rebus iis, quæ mihi  
gerendæ sunt, oculis in hanc fixis desideam.  
Et adulescens ille cum risu inquit: Ex-  
istimasne, mi Cyre, formam humanam  
tantum habere virium, ut nolentem co-  
  
C p. antibr.  
excellen-  
forma.  
  
D p. ambi-  
virtus.  
Plat. p.  
adp. 7  
In. p. 1  
z. dicit  
Ostegn  
vns. eze.  
  
E posse ne  
regere ho-  
mines et  
iam iniurias  
tes amor  
8. v. 2  
dolens  
6. v. 4  
arator  
3. v. 1  
3. v. 2  
3. v. 3  
3. v. 4  
3. v. 5  
3. v. 6  
3. v. 7  
3. v. 8  
3. v. 9  
3. v. 10  
3. v. 11  
3. v. 12  
3. v. 13  
3. v. 14  
3. v. 15  
3. v. 16  
3. v. 17  
3. v. 18  
3. v. 19  
3. v. 20  
3. v. 21  
3. v. 22  
3. v. 23  
3. v. 24  
3. v. 25  
3. v. 26  
3. v. 27  
3. v. 28  
3. v. 29  
3. v. 30  
3. v. 31  
3. v. 32  
3. v. 33  
3. v. 34  
3. v. 35  
3. v. 36  
3. v. 37  
3. v. 38  
3. v. 39  
3. v. 40  
3. v. 41  
3. v. 42  
3. v. 43  
3. v. 44  
3. v. 45  
3. v. 46  
3. v. 47  
3. v. 48  
3. v. 49  
3. v. 50  
3. v. 51  
3. v. 52  
3. v. 53  
3. v. 54  
3. v. 55  
3. v. 56  
3. v. 57  
3. v. 58  
3. v. 59  
3. v. 60  
3. v. 61  
3. v. 62  
3. v. 63  
3. v. 64  
3. v. 65  
3. v. 66  
3. v. 67  
3. v. 68  
3. v. 69  
3. v. 70  
3. v. 71  
3. v. 72  
3. v. 73  
3. v. 74  
3. v. 75  
3. v. 76  
3. v. 77  
3. v. 78  
3. v. 79  
3. v. 80  
3. v. 81  
3. v. 82  
3. v. 83  
3. v. 84  
3. v. 85  
3. v. 86  
3. v. 87  
3. v. 88  
3. v. 89  
3. v. 90  
3. v. 91  
3. v. 92  
3. v. 93  
3. v. 94  
3. v. 95  
3. v. 96  
3. v. 97  
3. v. 98  
3. v. 99  
3. v. 100  
3. v. 101  
3. v. 102  
3. v. 103  
3. v. 104  
3. v. 105  
3. v. 106  
3. v. 107  
3. v. 108  
3. v. 109  
3. v. 110  
3. v. 111  
3. v. 112  
3. v. 113  
3. v. 114  
3. v. 115  
3. v. 116  
3. v. 117  
3. v. 118  
3. v. 119  
3. v. 120  
3. v. 121  
3. v. 122  
3. v. 123  
3. v. 124  
3. v. 125  
3. v. 126  
3. v. 127  
3. v. 128  
3. v. 129  
3. v. 130  
3. v. 131  
3. v. 132  
3. v. 133  
3. v. 134  
3. v. 135  
3. v. 136  
3. v. 137  
3. v. 138  
3. v. 139  
3. v. 140  
3. v. 141  
3. v. 142  
3. v. 143  
3. v. 144  
3. v. 145  
3. v. 146  
3. v. 147  
3. v. 148  
3. v. 149  
3. v. 150  
3. v. 151  
3. v. 152  
3. v. 153  
3. v. 154  
3. v. 155  
3. v. 156  
3. v. 157  
3. v. 158  
3. v. 159  
3. v. 160  
3. v. 161  
3. v. 162  
3. v. 163  
3. v. 164  
3. v. 165  
3. v. 166  
3. v. 167  
3. v. 168  
3. v. 169  
3. v. 170  
3. v. 171  
3. v. 172  
3. v. 173  
3. v. 174  
3. v. 175  
3. v. 176  
3. v. 177  
3. v. 178  
3. v. 179  
3. v. 180  
3. v. 181  
3. v. 182  
3. v. 183  
3. v. 184  
3. v. 185  
3. v. 186  
3. v. 187  
3. v. 188  
3. v. 189  
3. v. 190  
3. v. 191  
3. v. 192  
3. v. 193  
3. v. 194  
3. v. 195  
3. v. 196  
3. v. 197  
3. v. 198  
3. v. 199  
3. v. 200  
3. v. 201  
3. v. 202  
3. v. 203  
3. v. 204  
3. v. 205  
3. v. 206  
3. v. 207  
3. v. 208  
3. v. 209  
3. v. 210  
3. v. 211  
3. v. 212  
3. v. 213  
3. v. 214  
3. v. 215  
3. v. 216  
3. v. 217  
3. v. 218  
3. v. 219  
3. v. 220  
3. v. 221  
3. v. 222  
3. v. 223  
3. v. 224  
3. v. 225  
3. v. 226  
3. v. 227  
3. v. 228  
3. v. 229  
3. v. 230  
3. v. 231  
3. v. 232  
3. v. 233  
3. v. 234  
3. v. 235  
3. v. 236  
3. v. 237  
3. v. 238  
3. v. 239  
3. v. 240  
3. v. 241  
3. v. 242  
3. v. 243  
3. v. 244  
3. v. 245  
3. v. 246  
3. v. 247  
3. v. 248  
3. v. 249  
3. v. 250  
3. v. 251  
3. v. 252  
3. v. 253  
3. v. 254  
3. v. 255  
3. v. 256  
3. v. 257  
3. v. 258  
3. v. 259  
3. v. 260  
3. v. 261  
3. v. 262  
3. v. 263  
3. v. 264  
3. v. 265  
3. v. 266  
3. v. 267  
3. v. 268  
3. v. 269  
3. v. 270  
3. v. 271  
3. v. 272  
3. v. 273  
3. v. 274  
3. v. 275  
3. v. 276  
3. v. 277  
3. v. 278  
3. v. 279  
3. v. 280  
3. v. 281  
3. v. 282  
3. v. 283  
3. v. 284  
3. v. 285  
3. v. 286  
3. v. 287  
3. v. 288  
3. v. 289  
3. v. 290  
3. v. 291  
3. v. 292  
3. v. 293  
3. v. 294  
3. v. 295  
3. v. 296  
3. v. 297  
3. v. 298  
3. v. 299  
3. v. 300  
3. v. 301  
3. v. 302  
3. v. 303  
3. v. 304  
3. v. 305  
3. v. 306  
3. v. 307  
3. v. 308  
3. v. 309  
3. v. 310  
3. v. 311  
3. v. 312  
3. v. 313  
3. v. 314  
3. v. 315  
3. v. 316  
3. v. 317  
3. v. 318  
3. v. 319  
3. v. 320  
3. v. 321  
3. v. 322  
3. v. 323  
3. v. 324  
3. v. 325  
3. v. 326  
3. v. 327  
3. v. 328  
3. v. 329  
3. v. 330  
3. v. 331  
3. v. 332  
3. v. 333  
3. v. 334  
3. v. 335  
3. v. 336  
3. v. 337  
3. v. 338  
3. v. 339  
3. v. 340  
3. v. 341  
3. v. 342  
3. v. 343  
3. v. 344  
3. v. 345  
3. v. 346  
3. v. 347  
3. v. 348  
3. v. 349  
3. v. 350  
3. v. 351  
3. v. 352  
3. v. 353  
3. v. 354  
3. v. 355  
3. v. 356  
3. v. 357  
3. v. 358  
3. v. 359  
3. v. 360  
3. v. 361  
3. v. 362  
3. v. 363  
3. v. 364  
3. v. 365  
3. v. 366  
3. v. 367  
3. v. 368  
3. v. 369  
3. v. 370  
3. v. 371  
3. v. 372  
3. v. 373  
3. v. 374  
3. v. 375  
3. v. 376  
3. v. 377  
3. v. 378  
3. v. 379  
3. v. 380  
3. v. 381  
3. v. 382  
3. v. 383  
3. v. 384  
3. v. 385  
3. v. 386  
3. v. 387  
3. v. 388  
3. v. 389  
3. v. 390  
3. v. 391  
3. v. 392  
3. v. 393  
3. v. 394  
3. v. 395  
3. v. 396  
3. v. 397  
3. v. 398  
3. v. 399  
3. v. 400  
3. v. 401  
3. v. 402  
3. v. 403  
3. v. 404  
3. v. 405  
3. v. 406  
3. v. 407  
3. v. 408  
3. v. 409  
3. v. 410  
3. v. 411  
3. v. 412  
3. v. 413  
3. v. 414  
3. v. 415  
3. v. 416  
3. v. 417  
3. v. 418  
3. v. 419  
3. v. 420  
3. v. 421  
3. v. 422  
3. v. 423  
3. v. 424  
3. v. 425  
3. v. 426  
3. v. 427  
3. v. 428  
3. v. 429  
3. v. 430  
3. v. 431  
3. v. 432  
3. v. 433  
3. v. 434  
3. v. 435  
3. v. 436  
3. v. 437  
3. v. 438  
3. v. 439  
3. v. 440  
3. v. 441  
3. v. 442  
3. v. 443  
3. v. 444  
3. v. 445  
3. v. 446  
3. v. 447  
3. v. 448  
3. v. 449  
3. v. 450  
3. v. 451  
3. v. 452  
3. v. 453  
3. v. 454  
3. v. 455  
3. v. 456  
3. v. 457  
3. v. 458  
3. v. 459  
3. v. 460  
3. v. 461  
3. v. 462  
3. v. 463  
3. v. 464  
3. v. 465  
3. v. 466  
3. v. 467  
3. v. 468  
3. v. 469  
3. v. 470  
3. v. 471  
3. v. 472  
3. v. 473  
3. v. 474  
3. v. 475  
3. v. 476  
3. v. 477  
3. v. 478  
3. v. 479  
3. v. 480  
3. v. 481  
3. v. 482  
3. v. 483  
3. v. 484  
3. v. 485  
3. v. 486  
3. v. 487  
3. v. 488  
3. v. 489  
3. v. 490  
3. v. 491  
3. v. 492  
3. v. 493  
3. v. 494  
3. v. 495  
3. v. 496  
3. v. 497  
3. v. 498  
3. v. 499  
3. v. 500  
3. v. 501  
3. v. 502  
3. v. 503  
3. v. 504  
3. v. 505  
3. v. 506  
3. v. 507  
3. v. 508  
3. v. 509  
3. v. 510  
3. v. 511  
3. v. 512  
3. v. 513  
3. v. 514  
3. v. 515  
3. v. 516  
3. v. 517  
3. v. 518  
3. v. 519  
3. v. 520  
3. v. 521  
3. v. 522  
3. v. 523  
3. v. 524  
3. v. 525  
3. v. 526  
3. v. 527  
3. v. 528  
3. v. 529  
3. v. 530  
3. v. 531  
3. v. 532  
3. v. 533  
3. v. 534  
3. v. 535  
3. v. 536  
3. v. 537  
3. v. 538  
3. v. 539  
3. v. 540  
3. v. 541  
3. v. 542  
3. v. 543  
3. v. 544  
3. v. 545  
3. v. 546  
3. v. 547  
3. v. 548  
3. v. 549  
3. v. 550  
3. v. 551  
3. v. 552  
3. v. 553  
3. v. 554  
3. v. 555  
3. v. 556  
3. v. 557  
3. v. 558  
3. v. 559  
3. v. 560  
3. v. 561  
3. v. 562  
3. v. 563  
3. v. 564  
3. v. 565  
3. v. 566  
3. v. 567  
3. v. 568  
3. v. 569  
3. v. 570  
3. v. 571  
3. v. 572  
3. v. 573  
3. v. 574  
3. v. 575  
3. v. 576  
3. v. 577  
3. v. 578  
3. v. 579  
3. v. 580  
3. v. 581  
3. v. 582  
3. v. 583  
3. v. 584  
3. v. 585  
3. v. 586  
3. v. 587  
3. v. 588  
3. v. 589  
3. v. 590  
3. v. 591  
3. v. 592  
3. v. 593  
3. v. 594  
3. v. 595  
3. v. 596  
3. v. 597  
3. v. 598  
3. v. 599  
3. v. 600  
3. v. 601  
3. v. 602  
3. v. 603  
3. v. 604  
3. v. 605  
3. v. 606  
3. v. 607  
3. v. 608  
3. v. 609  
3. v. 610  
3. v. 611  
3. v. 612  
3. v. 613  
3. v. 614  
3. v. 615  
3. v. 616  
3. v. 617  
3. v. 618  
3. v. 619  
3. v. 620  
3. v. 621  
3. v. 622  
3. v. 623  
3. v. 624  
3. v. 625  
3. v. 626  
3. v. 627  
3. v. 628  
3. v. 629  
3. v. 630  
3. v. 631  
3. v. 632  
3. v. 633  
3. v. 634  
3. v. 635  
3. v. 636  
3. v. 637  
3. v. 638  
3. v. 639  
3. v. 640  
3. v. 641  
3. v. 642  
3. v. 643  
3. v. 644  
3. v. 645  
3. v. 646  
3. v. 647  
3. v. 648  
3. v. 649  
3. v. 650  
3. v. 651  
3. v. 652  
3. v. 653  
3. v. 654  
3. v. 655  
3. v. 656  
3. v. 657  
3. v. 658  
3. v. 659  
3. v. 660  
3. v. 661  
3. v. 662  
3. v. 663  
3. v. 664  
3. v. 665  
3. v. 666  
3. v. 667  
3. v. 668  
3. v. 669  
3. v. 670  
3. v. 671  
3. v. 672  
3. v. 673  
3. v. 674  
3. v. 675  
3. v. 676  
3. v. 677  
3. v. 678  
3. v. 679  
3. v. 680  
3. v. 681  
3. v. 682  
3. v. 683  
3. v. 684  
3. v. 685  
3. v. 686  
3. v. 687  
3. v. 688  
3. v. 689  
3. v. 690  
3. v. 691  
3. v. 692  
3. v. 693  
3. v. 694  
3. v. 695  
3. v. 696  
3. v. 697  
3. v. 698  
3. v. 699  
3. v. 700  
3. v. 701  
3. v. 702  
3. v. 703  
3. v. 704  
3. v. 705  
3. v. 706  
3. v. 707  
3. v. 708  
3. v. 709  
3. v. 710  
3. v. 711  
3. v. 712  
3. v. 713  
3. v. 714  
3. v. 715  
3. v. 716  
3. v. 717  
3. v. 718  
3. v. 719  
3. v. 720  
3. v. 721  
3. v. 722  
3. v. 723  
3. v. 724  
3. v. 725  
3. v. 726  
3. v. 727  
3. v. 728  
3. v. 729  
3. v. 730  
3. v. 731  
3. v. 732  
3. v. 733  
3. v. 734  
3. v. 735  
3. v. 736  
3. v. 737  
3. v. 738  
3. v. 739  
3. v. 740  
3. v. 741  
3. v. 742  
3. v. 743  
3. v. 744  
3. v. 745  
3. v. 746  
3. v. 747  
3. v. 748  
3. v. 749  
3. v. 750  
3. v. 751  
3. v. 752  
3. v. 753  
3. v. 754  
3. v. 755  
3. v. 756  
3. v. 757  
3. v. 758  
3. v. 759  
3. v. 760  
3. v. 761  
3. v. 762  
3. v. 763  
3. v. 764  
3. v. 765  
3. v. 766  
3. v. 767  
3. v. 768  
3. v. 769  
3. v. 770  
3. v. 771  
3. v. 772  
3. v. 773  
3. v. 774  
3. v. 775  
3. v. 776  
3. v. 777  
3. v. 778  
3. v. 779  
3. v. 780  
3. v. 781  
3. v. 782  
3. v. 783  
3. v. 784  
3. v. 785  
3. v. 786  
3. v. 787  
3. v. 788  
3. v. 789  
3. v. 790  
3. v. 791  
3. v. 792  
3. v. 793  
3. v. 794  
3. v. 795  
3. v. 796  
3. v. 797  
3. v. 798  
3. v. 799  
3. v. 800  
3. v. 801  
3. v. 802  
3. v. 803  
3. v. 804  
3. v. 805  
3. v. 806  
3. v. 807  
3. v. 808  
3. v. 809  
3. v. 810  
3. v. 811  
3. v. 812  
3. v. 813  
3. v. 814  
3. v. 815  
3. v. 816  
3. v. 817  
3. v. 818  
3. v. 819  
3. v. 820  
3. v. 821  
3. v. 822  
3. v. 823  
3. v. 824  
3. v. 825  
3. v. 826  
3. v. 827  
3. v. 828  
3. v. 829  
3. v. 830  
3. v. 831  
3. v. 832  
3. v. 833  
3. v. 834  
3. v. 835  
3. v. 836  
3. v. 837  
3. v. 838  
3. v. 839  
3. v. 840  
3. v. 841  
3. v. 842  
3. v. 843  
3. v. 844  
3. v. 845  
3. v. 846  
3. v. 847  
3. v. 848  
3. v. 849  
3. v. 850  
3. v. 851  
3. v. 852  
3. v. 853  
3. v. 854  
3. v. 855  
3. v. 856  
3. v. 857  
3. v. 858  
3. v. 859  
3. v. 860  
3. v. 861  
3. v. 862  
3. v. 863  
3. v. 864  
3. v. 865  
3. v. 866  
3. v. 867  
3. v. 868  
3. v. 869  
3. v. 870  
3. v. 871  
3. v. 872  
3. v. 873  
3. v. 874  
3. v. 875  
3. v. 876  
3. v. 877  
3. v. 878  
3. v. 879  
3. v. 880  
3. v. 881  
3. v. 882  
3. v. 883  
3. v. 884  
3. v. 885  
3. v. 886  
3. v. 887  
3. v. 888  
3. v. 889  
3. v. 890  
3. v. 891  
3. v. 892  
3. v. 893  
3. v. 894  
3. v. 895  
3. v. 896  
3. v. 897  
3. v. 898  
3. v. 899  
3. v. 900  
3. v. 901  
3. v. 902  
3. v. 903  
3. v. 904  
3. v. 905  
3. v. 906  
3. v. 907  
3. v. 908  
3. v. 909  
3. v. 910  
3. v. 911  
3. v. 912  
3. v. 913  
3. v. 914  
3. v. 915  
3. v. 916  
3. v. 917  
3. v. 918  
3. v. 919  
3. v. 920  
3. v. 921  
3. v. 922  
3. v. 923  
3. v. 924  
3. v. 925  
3. v. 926  
3. v. 927  
3. v. 928  
3. v. 929  
3. v. 930  
3. v. 931  
3. v. 932  
3. v. 933  
3. v. 934  
3. v. 935  
3. v. 936  
3. v. 937  
3. v. 938  
3. v. 939  
3. v. 940  
3. v. 941  
3. v. 942  
3. v. 943  
3. v. 944  
3. v. 945  
3. v. 946  
3. v. 947  
3. v. 948  
3. v. 949  
3. v. 950  
3. v. 951  
3. v. 952  
3. v. 953  
3. v. 954  
3. v. 955  
3. v. 956  
3. v. 957  
3. v. 958  
3. v. 959  
3. v. 960  
3. v. 961  
3. v. 962  
3. v. 963  
3. v. 964  
3. v. 965  
3. v. 966  
3. v. 967  
3. v. 968  
3. v. 969  
3. v. 970  
3. v. 971  
3. v. 972  
3. v. 973  
3. v. 974  
3. v. 975  
3. v. 976  
3. v. 977  
3. v. 978  
3. v. 979  
3. v. 980  
3. v. 981  
3. v. 982  
3. v. 983  
3. v. 984  
3. v. 985  
3. v. 986  
3. v. 987  
3. v. 988  
3. v. 989  
3. v. 990  
3. v. 991  
3. v. 992  
3. v. 993  
3. v. 994  
3. v. 995  
3. v. 996  
3. v. 997  
3. v. 998  
3. v. 999  
3. v. 1000

Panthea  
virtus.

Plut. π. πολει πρα  
ποστιν οὐκούνας. p. 926  
τορει δέ οὐ κόρος δινέ βελεῖο  
μηνει ετ. 13. πάγι δεινον τετειν,  
ιαν μινιον τον τον αρχοντας ειπειν  
τει αμον τον γυναικειον ειδον. Οι  
εγνειαν δια τον αυτον πολον  
αποτελεσσον; ει γαρ ουκ  
ει πεινεις ειρηνικην παρει  
σειν, πους αγριει πολιν  
αρανησσειν ειναι αγριην, ειναι  
πολιτον ποσταν θειαν  
ει παρειαν πολιταν, προσ-  
τεινον πολιταν της οποιαν  
αρχιν. idem πιει δει πολ  
τειον ποιητικων απεισειν.  
p. 53. fin. οδει κόρος ειπει  
ιδειν πιν ποιητικων πολι-

K 4

Nam talis a natura est. At ex formosis aliis amantur: & alius alias amores habet. Est enim hæc res in voluntate posita, & unus quisque quos vult amat. Iam neque frater sororis amore tenetur, sed alius; neque pater filiam, sed alius amat. Etenim metus & lex ad coercendum amorem virium satis habent. At vero si lex promulgaretur, ut qui non comedunt, non esuriant; & qui non bibunt, non sitiant; ut que nec hieme algant, nec æstate caleant: in his ut homines parerent, lex nulla posset efficere. Sunt enim a natura sic comparati, ut his sint inferiores. Amare vero, in voluntate positum est. Unusquisque sane amat, quæ sibi conueniunt, vt vestes & caligas. Qui fit igitur, inquit Cyrus, si voluntarium quidam est amor, quod fieri nequit, ut aliquis desinat, quum vult? Vidi ego, qui præ dolore, quem ex amore percipiebant, fletent; & iis, quos amabant, seruirent; tametsi prius, quam amarent, seruitutem rem malam esse arbitrarentur: quique multa largirentur, quibus carere suo sine incommodo non poterant. Tum qui optarent, ut amore non secus atq; morbo quodam alio liberarentur, neq; tamen liberari possent; sed validiore necessitate vincit essent, quā si ferro fuissent constricti. Itaque etiam se suis amoribus exhibent amantes ad obsequia multa sine fructu, ac ne quidem au fugere conantur, quum eiusmodi habeant mala: sed potius amores suos ipsi, ne aufugiant, obseruant. Et adulescens ille ad hæc: Faciunt vero, quæ dicis, ait. Et sunt prefecto huiusmodi homines secordes & futilles. Quo fit, mea quidem sententia, semper ut optent mori, tamquam miseri: quum rationes infinitæ sint e vita excedendi, non tamen excedunt. Idem furari quoque conantur, & ab alienis haud abstinent. Verum ubi quid vel rapuere, vel furto subtraxere, vides ipse, inquit, te primum increpare furantem & rapiētem, quum nulla necessitas eos ad furtū adigat; neque veniam dare, sed pœnas sumere. Sic ergo neque formosi ad amandum se cogunt, nec ad adipetendum ea, quæ adipetenda non sunt: sed nullius momenti homunciones in omnibus cupiditatibus sunt impotentes; ac deinde in amorem culpam conferunt. At honesti probique viri tametsi & aurum, & equos bonos, & mulieres formosas, expetant: nihilo tamen minus ab his omnibus, facile semet abstinere possunt, ut per iniuriam ea non adtingant.

πέφυκε γέ τοις τον. τούτη καλων τη μη ἐρωσι, οὐχί διός γε διήγετε λέγοις γέ, ἔφη, διτι, καὶ εἴρη ἐκαστος ὡν αὐτός βέλη). αὐτίκε γέ τη ἐρᾶ ἀδελφὸς ἀδελφῆς, διός γέ τάντης: γέδε πατέρη θυγατρές, διός γέ τάντης. καὶ γέ φόβος καὶ νόμος ἵχεις ἐρωτα καλύψει. εἰ δέ γέ, ἔφη, νόμος τετελέσθαι μὴ εσθίοντας μὴ πάντη, καὶ μὴ πίνοντας μὴ δι-  
ψήν, μηδὲ ριγήν τη χαλκίδας, μηδὲ θαλπετείς τη  
θέρας, διτις αὐτόνος διωντείν εὔξεστρά ξενά  
αὐτεργίας τάντα πετέσθαι. πεφύκεσθαι υπό<sup>τη</sup>  
τάπτων κατέβασθαι. Θηλέαν εἴτε λέγονταν εῖτιν. ε-  
καστος γέντι καθ' αὐτὸν ερᾶ, ὡστριματίων  
καὶ παραμητή. πάντας, ἔφη, οἱ Κύρες, εἰ εἴτε-  
λεγονταν διτις δέ ερεστίνα, οὐ καὶ πάντας οὐ ερεσ-  
τίνα οὐτον πιστόλην); διλλέγω, ἔφη, εώσεσθαι  
καὶ καλάσθαι ταῦτα λύπης δι ἐρωτά, καὶ δουλεύ-  
οντας γε τοῖς ἐρωτάδοις, καὶ μάζα κακὸν νομί-  
ζοντας τοῖς ἐρωτάδοις διλλεγόντες, καὶ διδόντες γε  
πολλὰ, ὡν αὐτός βέλη πάντας δέρεσθαι. καὶ διχομέ-  
νος ὡστριματίν τον διῆντας διπλάσια  
καὶ διωντάς μέρες μέρη τοι απαλλαγήνα,  
καὶ διωντάς μέρη τοι απαλλαγήνα, διλλά  
διδεμένης ισχυρότερα την αιδίκη, η εἰ σιδήρῳ  
εδέδειτο. παρέχοσι γέντιν εάν τάς τοις ἐρωτάδοις  
πολλὰ καὶ εἰκόνικην πηγήντας καὶ μάζας διλλέ-  
διδράσκειν διτιχρόποταντα κακά ερεστίνες, δι-  
λλέγω καὶ φυλακτίστας τάς ἐρωτάδοις, μή ποιάπο-  
δραστιν. καὶ οὐταίσιος εἰ πετρός τάντα, ποιάς  
γέ, ἔφη, τάντα εἰσὶ μέρη τοι ερωτάδοις, ἔφη, μο-  
ρίσθιοι δέρεσθαι, οἵματα, καὶ διγόντα μέρη αἰσίως  
\* αὐθίλιοι οὐτες διπλάσια, μετίαν δι οὐσῶν  
διπλάσιαν απαλλαγήν τη βίου, σόκον απα-  
λλαγήντας. οἱ αἰσίως δέ γε οὖτοι κακά κλέψαντε-  
πιχρέδοι, καὶ σόκον απέχοντας τη διλλο-  
τίστας διλλέγοντες πηγάδωντιν κακά δι-  
πλάσια, καὶ οὐ συγκίνωσκός, διλλά καλά-  
ζεις; οὖτε μέρη τοι, ἔφη, καὶ οἱ καλοὶ σόκοι αι-  
ακάριστοιν ερεστίν εάν τη δι, σόκος ἐφίεσθαι αι-  
δερφοῖς οὐ μή δεῖ, διλλά πα μορθοφέρα αι-  
δερφοῖς πασῶν, οἵματα διπλάσιαν ακρατή-  
σθαι, καὶ πετράς ἐρεστάς αἰτιάντας οἱ δέ καλοὶ  
κακάδοι, διπλάσιαντες καὶ χρεούσιν κακά δι-  
πλάν αἰσθαντας γεγαγκάν καλάν, οἵματα δι-  
πλάτων τάπτων ράδιας διπλάσια απέχονται,  
ώστε μή αἰτιάδας αἰτηθεῖται τη διπλάσια. Θηλέαν  
ἔγαν

έγαγεν θν., ἐφη, Τάντις ἑωρακώς, καὶ πόμον μοι  
καλῆς δοξάσως εἴ<sup>τ</sup>), ὅμοις παράστασίς είμι, καὶ π-  
τεύω καὶ ταῦλα τὰ ἔμοι παρεστήκησα ἀπότε-  
ται· λα. ναὶ μὲν δι', ἐφη οὐ Κλεοψότας γένθησον α-  
πῆλθες οὐδὲ σταχυόν τοι εἴρηται ηγετία  
μὴ διθύρα καθέαται, καὶ τὰ ξύλα τούτα διθύρα  
λέμπε. ὅμοις δέ ἐγαγε σύτε πυρὸς ἐκάνει εἴ<sup>τ</sup>  
ἀπομεγά, γέτε τὸς καλὺτεσσορῶ. γέδεισοι συμ-  
βουλέω, ἐφη, καὶ Αράσσω, σὺ τοῖς καλοῖς γέδαι  
\* τὸν φίνοντας θέλειν. οὐδὲ πῦρ τὸς απλού-  
μένος καθί, οἰδεις καλοῖς καὶ τὸς ἀποθετούσιν  
ὑφάποιοιν, οἵτε αὐτοῖς δέ ἐρωτι. θάρροι, ἐφη, καὶ  
Κόρε, γέδειν μιδέ ποιε παύσιμη θεώρηνος, καὶ  
μὴ κρατήθω, ὡς τοῖσιν πῶν μὴ χεὶ ποιεῖν. καὶ  
λισα, ἐφη, λέγετο. Φύλαξ πετούσιν, ἐφη, οἵτοι  
σεκελέω. γέθηται μελῶ αὖτο. ίσως γένθαι πα-  
τυντον τὸν καρπὸν τη γένοιτο αὐτοῦ γανή. τότε  
μὴν δὴ ταῦτα εἰ πόλεις μιελύθηροι ὁμοίων  
άμα μὴ ὄραν τὸν αφρικαλῆ τὸν γανάκα, ἀμα  
οἱ αἰσθόμηνος τὸν καλακαγαθίαν αὐτοῖς, ἀμα οἱ  
τερεπέλων αὐτοῖς, καὶ οἴομηνος χαρίζεατοι αὐ-  
τοῖς, ἀμα οἱ αἰθανόμηνος οὐκ αὐχαρίσοντοι τοῖσιν,  
δὲλλ' αὐτεπιμελευμένοις οὐκέτι τοις αὐτοῖς οἰκε-  
τῶν, οἵτε κατίσιοντι εἴναι αὐτῷ τὰ δέοντα, καὶ εἰ ποιε-  
αδεινόσφεν, οἵτε μηδενὸς αὐτοῖς δέοντο. σὺ πομάτων  
τὸτων ἥλισκετο ἐρωτι, καὶ ίσως θεσέν θαυμα-  
στὸν ἔπαχε. καὶ ταῦτα μὴ δὴ τὰς ἐπεράπετος  
βουλέμηνος δὲ οὐ Κλεοψότελον τὰς μέντην μὴ  
έαντο τὸς τε μήδοις καὶ τὸς συμμέχοντος, συνε-  
κάλεσε πομάτα τὸς τοῦτον τὸν οἰκετόντος εἶπει δὲ  
οὐκέτητον, ἐλεξειοίδε. Ανδρες μῆδοι καὶ πομά-  
τεοι παρέντες, ἐγὼ οὐ μᾶς οἶδα σαφαῖς οὐπι-  
τε χειροῦ δεοφθοισιν ἔμοι δέξηλθετε, γέτε  
Κναζαρόντοι μίζοντες τὸ τοιούτον πρέσην δὲλλ'  
ἔμοι βαλέμηνοι τὸ τοιούτον πρέσην, καὶ ἔμετο-  
μῆτες γένθαι \* νυκτοπορέντες καὶ κινδυνεύοντες  
ἔμοι οὐτελόστετε. καὶ καλέντες τὸτων ἐγὼ οὐ μην  
μὴ, εἰ μὴ ἀδικῶ, δέποδιδόναμ δὲ οὐ ποτε αἴτια  
διώματιν ἔχοντος δοκῶ. καὶ τὸτο μὴ δικαιού-  
νομού λέγων. δέλλ', οὐ μήτε παρέμοι, δέτο-  
δώσω, δέλλ' ιστε οὐτὸν αἰχματοίμων αὐτοῖς  
νομίζομεν γένθαι μαντὸν ἐσικένατο λέγοντα ταῦ-  
τα | τὸτε \* ἐνεκα τὸ οὐ μᾶς οὐτελειν μᾶλλον  
παρέμοι καταμένειν. αὐτοῖς τὸτε τὰς δέ λέγω.

A Ego quidem certe, tametsi hanc consper-  
xerim, perque mihi venusta visa sit: tibi  
tamen adsum, & equito, & cerea, que mei  
sunt officij, præsto. Profecto, inquit Cy-  
rus, discessisti fortasse citius, & ante id  
tempus, quo solet a natura machinis suis  
amor homines occupare. Nam fieri po-  
test, vt etiam ignem quis tangens, non sta-  
tim vratur: & e lignis flammanon statim  
emicat. Ego tamen nec ignem vltro tan-  
gere, nec formosos adspicere soleo. Ne  
tibi quidem consulo, mi Araspa, vt oculos  
formosissimis diutius immorari sinas. Nam i-  
gnis quidem non nisi tangentes vrit, ac  
formosi etiam eos, qui e longinquos spe-  
ctant, sic accendunt, vt amore flagrent.  
Bono animo sis, ait, mi Cyre. non enim  
futurum, vt ita capiar, ne quidem si num-  
quam hanc spectare desinam, vt aliquid  
præter decori rationem admittam. Re-  
ctissime, inquit, ais. atque adeo hanc mi-  
hi adseruato, quemadmodum iubeo, eius-  
que curam gerito. Nam fortasse mulier  
haec opportune nobis usui magno fuerit.  
His dictis ab se inuicem tunc discesserunt.  
C Adulescens autem ille tum quod supra  
modum formosam mulierem videret, tum  
quod eius honestam bonitatem animad-  
uerteret, tum etiam, quod coleret eam, se-  
que putaret ei gratificari, & illam non in-  
gratam esse sentiret, quæ vicissim per fa-  
mulos suos curam adhiberet, vt venienti  
necessaria suppeterent, ac si quando ægrot-  
aret, nihil vt ei deesset: his igitur omni-  
bus factum, vt amore caperetur, nec mis-  
rum aliquid ei fortassis accidit. Atque haec  
quidem hoc modo gerebantur. Quum  
D autem Cyrus & Medos & ceteros socios  
vltro secum manere vellet, conuocauit o-  
mnes, quos adesse duceret opportunum;  
& vbi conuenissent, huiusmodi protulit:  
Equidem, Medi, vosque omnes, qui ade-  
stis, certo scio, non ob penuriam pecuniaæ  
vos mecum profectos esse, nec quod exi-  
stimaretis in hoc voluntati Cyaxaris in-  
seruiri, sed quia mihi gratificari, meque  
honore prosequi velletis, libitum vobis est  
me cum & nocturnum iter ingredi, & sa-  
lutem in discriminem coniicere. Quas ob  
E res equidem vobis gratiam habere debeo,  
ni es in iustus velim; nec dum tamen ex  
dignitate referendi facultatem habere mi-  
hi videor, quod quidem me minime pudet  
dicere. Sed quo minus dicam, si mecum  
manferitis, me relaturum; pudore præpe-  
dior. nam existimarem videri posse, me di-  
me remanere velletis. Itaq; pro eo haec dieo:

\* Ego apud vos, etiam si nunc Cyaxarim o-  
rem gerendo discesseritis, id efficere co-  
nabor, si quid prospere gessero; vt vos ipsi  
me laudetis. Non enim iam discedo, sed  
Hyrcaniis, quibus & iusurandum, & dex-  
tram dedi, fidem seruabo; neq; vñquam  
committam, vt hos deseruisse conuincar.  
Atq; etiam facere conabor, ne Gobryam,  
qui modo & munitiones, & regionem, &  
copiae nobis tradidit, vñquam itineris ad  
me suscepit peneiteat. Quod denique ma-  
ximum est, qum Dij tam manifesto bo-  
na nobis largiantur, & metus eorum, &  
pudor retinere me debet, quo minus reli-  
ctis his temere discedam. Hoc euidem,  
ait, facturus sum. Vos quod ex animi vestri  
sententia visum vobis fuerit, agite; & mi-  
hi, quæ vestra sententia sit, indicate. Hęc e-  
ius verba fuerunt. At is, qui Cyri se cognatum  
esse dixerat aliquando, primus ad-  
hac: Ego vero sic aio, mi rex, inquit. Nam  
regem natura nihilo te minus ortum arbit-  
ratur; quam ille rex est, qui dux apum in

*Apum erga regem suum studia.*  
alioe nascitur. Illi enim semper apes vltro  
parent, ac quocumque loco manserit, ab  
eo nulla earum discedit. Quod si aliquo  
prodierit, nulla ipsum deserit. tam mirifi-  
cus eis amor erga principem hunc suum  
innascitur. Itidem erga te mihi quodam  
modo videntur hi homines affecti esse.  
Nam quo tempore a nobis in Persiam pro-  
ficicebantur, quisnam Medorum vel iuue-  
nis vel senex absuit, quo minus te sequere-  
tur, donec Astyages nos retrogredi iussit?

*Nominum erga cyrum studia.*  
Postquam vero domo nobis e Perside op-  
pitulator aduenisti, videbamus iterum amicos tuos prope omnes sponte suate se-  
qui. Qum rursus expeditionem in hac  
loca suscipere cupiuisti, omnes te Medi lu-  
bentes sequuti sunt. Et nunc adeo sic ad-  
fecti sumus, vt te presente etiam in hosti-  
co simus animosi, & absque te domum re-  
uerti formidemus. Itaque ceteri quid fa-  
cturi sint, ipsi exponent: ego vero, mi Cyre,  
atq; illi, qui mea in potestate sunt, ma-  
nebimus apud te: te intuendo, quævis su-  
stinebimus: te beneficiis nos adficiente,  
tolerantes erimus. Posthac Tigranes ita  
loquutus est: Nolim mireris, ait, mi Cyre,  
quod taceam. Animus enim meus non ad  
consultandum paratus est, sed ad faciun-  
dū, quidquid imperaueris. Hyrcanus au-  
tem: Dicerē ego, inquit, si iam discedere-  
tis Medi, numinis id alicuius voluntate fie-  
ri, quod valde beatos vos fieri non sineret.

*ἀπέλθοιτε, δαίμονος αὐτούς φάγετε τὸν Βεληνόν εἰς*

A ἐγώ γέ υμῖν, καὶ ἔδη πάπιτε Κυαζάρφη θεό-  
μνοι, ὅμως οὐ πάρα δὲ τοις πρόσωποις, πρόσωποι  
οὐ τοις ποιήσῃ, ὥστε καὶ υμᾶς ἐμὲ ἐπαγνῦν. ἡ γέ δὴ  
αὐτός γε ἀπέκμιτι. Διὰ τὴν υρχανίας, οἷς τὰς ὄρ-  
κεις καὶ δάση, αἱ ἐδῶνται, ἐμπεδώσω, καὶ γέ ποτε  
τέτοις προστίθενται αλώσομεν. καὶ ταῦτα μὲν  
τὰ παδίδια τῆς Γαβρίας, καὶ τείχη, καὶ γέ-  
ρας, καὶ διώραμα, πρέσσομεν ποιήσῃ μή ποτε  
μεταμελῆσαι τὸ περιόδος ἐμὲ ὁδοῦ. καὶ θέμεγισσον  
δὴ, οὐ τοις προστίθενται τῷ θεάτρῳ σιδόντων αγα-  
θα, καὶ φοβούμενοι αὐτὸντας, καὶ αἰχμαλώτους,  
ἀπόλιτων τελεταῖς εἰκόνα πελθεῖν. ἐγὼ μὲν δὲν,  
έφη, γέ τοι ποιήσω. οὐ μηδέ ὅπως γέ \* γινώ-  
σκητε, γέ τοι καὶ ποιήστε. καὶ ἐμοὶ εἴπατε δέ, τι αὐ-  
τὸν δοκεῖ. οὐ μὲν γέ τοις εἴπε. πρόστος δέ ὁ Φί-  
στας ποτὲ οὐ γένεται τὸ Κύρον εἰς, περιόδος τελε-  
έλεξεν. Διὰ τὴν ἐγώ τοι μὲν, έφη, καὶ βασιλέας. Βασι-  
λές μὲν γέ ἐμοι γέ δοκεῖ σὺ φύσῃ περιχέναι  
οὐδὲν τίποτα, οὐδὲν δοκεῖ φύσην τοι με-  
λιτῶν τὴν γένεσιν. σκέψατε γέ αἱρεῖται μέλιται  
Cέρωσαν πείσονται. ὅπε δέ αὐτὸν, καὶ τοδεμία  
στρατείαν απόρχεται. οὐδέ πατέται, τοδεμία  
αὐτῷ διπλείπεται. γέ τοι δεινός τις αὐτοῖς ἐρεις  
τὸ περιχέναι τὸν ἐκείνοντας τὸν εἴ-  
περ τοις σε δέ μοι δοκεῖσι τοῦτο πλοίοις πανοιαίς  
αὐτῷ περιποιεῖται. καὶ γέρεις από-  
στασίτε παρ' ιμβράπηδες, οὐδὲ μηδων οὐ νέος οὐ  
γέρων σχολείοις απελείφηται μήσοι ακελουθοῖς, τέ-  
τεντος δέ οὐτε Αγυάγης ήματις απέτρεψεν; οὐ πελε-  
δεὶς εἰς περσῶν Βονδός ήμιν ὠρμήθης, ζεδόν τις  
D αὐτὸραί μητέρες φίλοις σχολείοις από-  
στασις πομπόις. οὐτε δέ αὐτὸν διέρει πρατείας μηδε-  
έπειρυμησας, πομπέσσοι μηδοι ἐκέντες πηγ-  
λαύησαν. τινὶ δὲ αὖ οὐτοῖς ἐγένετο, οὐσὶ σοὶ  
μηδὲ οὐκέτι πολεμία οὐδὲ θάρρου μηδὲν, ἵνα  
αὖ δὲ σοῦ γέρεις απέλεναι φοβούμεθα. οἱ  
μηδὲν αὖτοι οὐπάσσονται, αὐτοὶ εὔρεσον εἴ-  
λατο, οὐδὲ Κάρε, καὶ οὐ γέρεις απέλεναι, καὶ μηδομένοι  
πολεμεῖσθαι, καὶ ὄρωντες σε αἰτεῖσθαι, καὶ περι-  
ποσμένοι πολεμεῖσθαι δέργεται μηδομοι. οὐτε τοῖς δέ  
E Τιγραῖς ἐλεξεν αὖτε σὺ έφη, οὐδὲ Κάρε, μηδὲ  
θαυμάσῃς, οὐδὲ γέρεις. Τί γέρεις \* ψ-  
χή, έφη, καὶ οὐδὲ λεύσσα παρεσκείαται,  
δέργεται, οὐδὲ ποιόσσοις, οὐδὲ παρεγέλλης. οὐδὲ  
υρχαῖος εἴπεν. Διὰ τὴν ἐγώ τοι μὲν, οὐδὲ μηδοι, εἰς τοῦ  
αἰδεφ-

αν. Θεοπίνη ἡ γράμμη τίς αὐτήν Φθεγγόντων πο-  
λεμίων στο βέποιτο, ή ἐπλα τοῦ θεομίδοντων  
οὐκ αὐτοὺς λαμβάνοι, η ἔστι τὸ τοῦ θεομίδοντων καὶ  
τὰ ἔαυτῷ οὐκ αὐτοῖς δέχοιτο; διῆγεστε γὰρ τῷ ήγε-  
μόνος ήμῶν ὅντος τοιάτοις, οὐ εἶμοι δοκεῖ (ώς θέμινο-  
μένην πολύτελης τῆς θεούς) εὖ ποιαν ήματις μοδῆ-  
λον καὶ δεσμόν, η ἔαυτον πλαγίζων. Ήπει τόπῳ πολύ-  
τεσοὶ μηδοι τοιαῦτα ἐλεγον· σὺ ω̄ Κύρε οὐκέ-

καρόσθ- γαγειημάς ηγοίκεδε ὅτι μαπίένται ταχεός  
 κή, σωι σοι ιημάς απάγαγε ούτι Κδ-  
 σσε. ερες Ταῦτα ακέύσας, ἐπειδή ξαπο· Ένν' ωζεῖται Ε

μέγιτε, αὐτῷ μάχεσθαι, δός μοι τὸς ἐμὲ πιθῆτας  
νικῆσαν διὰ ποιῶντα. οὐ τότε σκέλευσε τὸς  
μὴ μήγε Φυλακῆς κατασκονταῖς, αὐτῷ αὐ-  
τὸς ἥδη ἔχειν, τὸς δὲ φρούριος σφραγίζεσθαι σκη-  
ναῖς, τοῖς μὲν ἵπποις τὰς τρέπεσθας, τοῖς  
δὲ πεζοῖς τὰς τρέπεσθας καὶ ὑπωνομαζ-  
οῦσας ποιῶντες οἱ τοῦτο σκηναῖς ἀπόδητες  
τὰ δέοντα φέρωντες τὰς τάξεις τοῖς φρούριοις,  
καὶ τὸς ἵπποις τὰς τρέπεσθας παρέχωσι.

**περισσοί** καὶ τὸς ἄπων τετέφερτο μήνας παρέχων.  
**μέντης** οὐδὲν δέ τι τούτην τὴν τάσσην τοιοῦτην.

περούς δε μηδεν αλλο ή τε εργον τα περού  
πόλεμον στικ ποιεν. Ταύτην μάρτυτω την μέρεσιν  
διήγαμον. περούς δ' αιδασάλες ἐπορεύουστο περούς  
τη Γαβρύαι, Κλεος μάρτυρε φίππω, καὶ οἱ αφροῦν  
ιππεῖς, γελυπηθόνοι ἀμφὶ τὸς διχρίας· οἱ δὲ  
πατέτων γέρρα καὶ τὰς κερπίδας ἔγεινες ἐπὶ τέ-  
τοις εἴ ποντο, ιστούντες την σφριθμόν. καὶ η ἄλλη δὴ  
εραστιὰ ἐπορθύετο τεταγμένη. ἐκαστον δὲ σκέ-  
λωσε τοῖς κερνοῖς ἑαυτῷ θεραπευον εἰπεῖν,  
ὅτι ὅσιος αὐτῷ οὐτῷ τὸ πισθοφυλάκιον φάγιν<sup>2)</sup>

οὐπατέν, ἢ τὸ μετώπιον \* περιφένειν, ἢ καὶ πλάνην.  
για τὸ οὐρανόν των αἰλίσκων), καλαθί-  
στα. Έλληνες δὲ αἱματίδειλους γίγνονται

περὶ τὰ Γαρύγχων, καὶ ὄρμοιν ἐστιν  
εἴν τε θέρμα, καὶ ὅπερ τὴν πόλιν παρε-  
σκευασμένα, ὡς αἱ καράπισα ἀπομάζειν το. καὶ

βές ἐπολλός ή πάμπολλα τοεύσαται τὸ  
έρυμα τὰ τέρυμα τοεύσημένα εώρων. πέμψας  
δέ οἱ Γαβρίας σκέλουσε τὸ Κλεοντελέ-

Ἐντασθεὶς τοιούτῳ περιεστή, εἰσω  
πέμψας πρόσειπτον την πάτην ημας, οἵ περ εἰπεῖσθαι τοῦ Ε  
πενθόντος ιδόντες ἀπαγέλλοντο. Στρατός οὐδὲ Καρχηδόνας

<sup>Αὐτὸς μὲν δούλοις βαλέμενος ιδεῖν, εἰ πη εἴναι πέ-  
στιον τὸ τέχνης ἡ θευδὴς τὰ φαινόμενα. Γαβρίας,  
αλλ. αἱ τοιχίαι συνεπειώτεραι, ἔσωρα τείχουροτερα πάλι  
γαβρίας. Ταῦτα προσθήθειν δέ οὐ ἐπειδή τορὸς Γαβρίας,</sup>

Humanæ quidem mentis iudicium quod adtinet, quis vel hoste fugiente se patiatur auerti, vel arma tradente non ea capiat, vel se cum suis rebus dedente non recipiat? Præsertim quum eiusmodi ducem habeamus, qui mihi videtur, quod iuratus equidem deos omnes testor, maiorem ex eo voluptatem capere, si bene de vobis mereatur, quam si seipsum locupletet. Tum deinde Medi omnes hæc dixerunt: Tu nos eduxisti, Cyre. Tu domum nos, vbi tibi visum erit commodum; tecum abducito. Cyrus his auditis, hoc votum adiecit: Te vero maxime Iupiter oro, fac vt eos, qui honore me prosequuntur, beneficiis superem. Ex eo iussit, vt ceteri quidem locatis excubiis, corpora curarent: Persæ vero tabernacula distribuerent, in equites ea, quæ equitibus conuenirent: in pedites, quæ his sufficerent. Vt item hoc modo res constituerent, quo vniuersi, qui essent in tabernaculis, necessaria conficerent, ac Persis ad ordines ipsorum adferrent, & equos etiam curatos eis exhiberent: Persis autem nihil aliud negotij relinquaretur, quam vti res bellicas elaborarent. Hoc modo diem hunc exegerebant. Mane autem quum surrexissent, i-

ter ad Gobryam ingressi sunt, Cyrus quidem in equo, cum Persarum equitibus, qui iam ad duo millia excreuerant. Hos sequebantur, qui crates & copides eorum habebant, numero eis pares. Itidem exercitus reliquus instructus iter faciebat. Et iussit Cyrus, ut quisque famulis suis noctiis futurum diceret, ut quisquis eorum vel post agminis postremi custodes con-

spiceretur, vel ante frontem, vel ab utro-  
que latere extra eos, qui essent in ordine,  
deprehenderetur, poenas daret. Postri-  
die circa vesperam ad locum Gobryæ per-  
ueniunt, & munitionem supra modum  
firmam vident, & in mœnibus parata o-  
mnia quibus egregie locus propugnare-  
tur. Quin etiam multos boues, & per-  
multas pecudes subter munitiones addu-  
ctas cernebant. Gobryas autem misso ad  
Cyrum quodam, dici iussit, vt Cyrus cir-  
cumiectus disperceret, vbinam accessus  
esset facillimus; atq; etiam fidos quosdam  
homines intro ad se mitteret, qui renuntia-  
rent ei, que intus vidissent. Itaq; Cyrus re-  
ipsa videre volēs, num alicubi castellū capi  
posset, an Gobryas mendax esse deprehen-  
deretur; vndiq; obequitabat, & omnia mu-  
nitiora videbat esse, quā vt \* accedi posset.  
Illi vero, quos Cyrus ad Gobryam miserat,

sententia renuntiant Cyro; tantam intus bonorum A  
est, Vedit esse copiam, quanta in hominum ætatem,  
omnia munitione de suo quidem iudicio, suffectura iis, qui  
ra esse, essent in castello, videretur. Cogitabat, se-  
quam Gobryas cum Cyrus, quænam illæ res esent; quum  
predixe- Gobryas ipse ad eum egreditur, & omnes,  
rat. Si quo- quotquot intus erant, educit: alios quidem  
mūnītō. Sev, ferentes vinum & farinas, alios vero agen-  
munitione- tes boues, & sues, oves, capras: & quidquid  
e longin- esculenti requiretur, id omne adfere-  
quo. Gobryas bant, vt totus Cyri exercitus egregia cœ-  
Cyrum na exciperetur. Quapropter iij, quibus id  
cum exer- erat datum negotij, distribuebant hæc, &  
citu exci- tænam adparabant. Gobryas vero, quum  
pit. suos omnes eduxisset; Cyrus ingredi ius-  
fit eo modo, quem arbitraretur ipse tutissi-  
mum. Itaq; Cyrus præmissis speculatori-  
bus & agmine suorum, tamdem & ipse in-  
greditur. Quum esset ingressus, portas te-  
nens apertas, amicos omnes & præfectos  
militum aduocabat. Postquam hi iam in-  
tus erant, Gobryas depromtis pateris au-  
reis, & gutturniis, & vrnulis, & omnis ge-  
neris ornamenti, & immensa vi Darico-  
rum, & vniuersis rebus pulchris; ad extre-  
mum etiam filia (quæ quidem erat admir-  
anda forma & proceritate, lugubri habi-  
tu, propter mortem fratri) producta, dixit:  
Pecunias hasce tibi trado, mi Cyre, ac fi-  
liam hanc tibi committo; vt de ea, sicut i-  
pse voles, statuas. Obscuramus vero te sup-  
plices, ego quidem etiam antea, vt filij; hæc  
vero nunc, vt fratribus ipsius vltor sis. Ad quæ  
Cyrus inquit: At ego tibi tunc quoque po-  
licitus sum, me vltorem tibi futurum pro-  
viribus, si minime nos mendacio falleres.  
Nunc quia te veracem video, reus sum  
promissi. Quin & huic policeor eadem me,  
Diis iuuantibus, facturum. Ac pecunias  
quidem istas accipio, & huic puellæ, atque  
illi, cum quo nuptura est, dono. Munus ta-  
men vnum abs te accipiens, discedam; pro  
quo mihi donato ne quidem ea, quæ Ba-  
bylone sunt, tametsi plurima, nec quæ sunt  
vñiam, lubentius habiturus sim, ac dis-  
cessurus. Et Gobryas miratus, quid tam-  
dem illud esset, ac suspicatus, an filiam di-  
ceret, interrogauit: Quid istud est, mi  
Cyre? Tum respondens Cyrus: Multos  
arbitror esse homines, ait, mi Gobrya, qui  
nec impij, nec iniusti esse velint, ac spon-  
te sua ne quidem mentiantur aut fallant.

Ταυριάσσεις οὐ ποτε τῷ τοι εἴη, καὶ ταῦτα αἱ μάστιχαι μὴ τὸν θυγατέρα λέγει, οὐτας ἡρέο, καὶ τί τῷ τῷ οὐτι, ἐφη, ὁ Κύρε; καὶ ὁ Κῦρος ἀπεκρίνατο, ὅτι, ἐφη, ὁ Γαβρύα, πολλοῖς μὲν οἰόμενοι τοιαὶ αἱ Δερέπους, οἱ οὐτε αἱστερέψῃ αἱ θελωτερέψῃ, οὐτε αἱδικεῖν, οὐτε αἱ ψάλμοιντο ἔκριντες εἴναι.

Απίπτελον ταῦ Κύρω ὅπι ποσαῖτα εἴη ἔνδον  
ἀγαθά, ὅπα ἐτόπιον τὸ φρέπεν τὸν θρεψάς, ὡς γενεαὶ &  
σφίσι δοκεῖ, μὴ αὐτὸν λείπειν τὸν ἔνδον τὸν  
τελεῖον. ὁ μὲν δὴ Κλεος σὺν Φερετίδῃ ἵνα ὁ, τι πο-  
τε εἴη Ταῦτα. ὁ δὲ Γαβρύας αὐτὸς τε ἔχει  
πορεύεσθαι αὐτὸν, καὶ τὸν ἔνδον ποντίας δέχεται,  
..... Φέρεντας οἶνον, ἀλκυρεῖ, ἀλλὰς δὲ  
ἐλαχύνοντας τὸν βοῦς καὶ ὑπόστης, οἶνος, αἷγας καὶ βοῦς, αἱ-  
εῖ πιθρωτὸν, πορταίκαντα πορεύεται, ὡς δι-  
πνηστρα καλαῖς ἀπασαντὸν τὸν Κύρωντα πιθρωτόν.  
Β Παν. οἱ μὲν δὴ διπλῶς τὰ τελεῖα παρθένες τὸν διηργήν-  
το τε Ταῦτα καὶ ἐδειπνοποιοῦσσι. ὁ δὲ Γα-  
βρύας, ἐπειδὸν πομπέες οἱ αἵδρες αὐτῷ εἰχαν  
εἰσένει τὸν Κλεοντὸν ποτὸν τὸν νομίζει  
μίζει ἀσφαλέστατα. πορευετέμνας δῶν ὁ  
Κλεος πορεύεται καὶ διώμαριν, καὶ αὐτὸς  
οὗτος εἰσῆκται. ἐπειδὸν εἰσῆλθεν αἰστηταμέ-  
νας ἔχων τὰ πύλας, παρεκάλεσε ποντίας τὸν  
φίλοντος καὶ δέχοντας τὸν μῆνας ἐδίδυ. ἐπειδὸν  
οὗτον, σκέφερων ὁ Γαβρύας φιάλας  
Χρυσᾶς, καὶ πορεύεται, καὶ καίπειται, καὶ  
κρομον πομποῖον, καὶ διαρεικεῖ ἀμέτριες τί-  
νας, καὶ πομπά καλά, καὶ τέλος τὸν θυγα-  
τέρα (τὸ δεῖνον δέξα καλλος καὶ μέγεθος, διόν τι  
πενθικῶς δὲ ἔχουσαν τὸν ἀδελφὸν τεθηκέντα)  
τὸν Σαγανάν, τάδε εἶπεν ὁ Κύρε, ἐξάρσων,  
γάστοι τὰ μέρη γέματα Ταῦτα διώμαρι. τὸν  
δέ θυγατέρα Ταῦτα διπλῶς παρθένα  
ὄπως αὐτὸν Βούλη· ικέτευορδην δὲ, ἐγὼ  
μὴν καὶ πορεύεται τὸν ψυχόν, αὕτη δὲ ηὕτω τὸν  
Δελφὸν πιμερέν τομέαθα σε. ὁ δὲ Κλεος  
πορεύεται εἰπεν, δὲλλ' ἐγώ σοι μὲν καὶ  
τότε ποτερόμενος, ἀπέδιδει τὸν ποτερόμενον  
μερισθεῖς διώμαριν. μῶν δέ οὔτε σε αἰλιθεύον-  
τα ὄραντα, ὁφείλω τὸν ποτερόμενον καὶ Ταύ-  
τη ποτερόμενον τὸν αὐτὸν Ταῦτα \* οὐδὲ  
οἶσι ποτέσθι. καὶ τὰ μέρη γέματα, ἐφη, ἐγὼ  
Ταῦτα διώματα, διώματα μέλαντα ταῦτα Ταύ-  
τη, καὶ σκένεια, ὃς μὲν γῆρας αὐτῶν. ἐν δὲ δι-  
ειδοῦ ἀπέμενε ἔχων ταῦτα σθ, αὐτὸν οὐ ἐγὼ οὐδὲ  
Ε αὐτὰ ἐν τῷ Βασιλῶν, στρατεύεσθαι, οὐδὲ τῷ Βασιλῶν  
τὰ πομπάχου, δρυπέστης, οὐδὲ μοι δεδώρηται  
σαμ, οὐδιον αὐτὸν αἰτέλειον. καὶ ὁ Γαβρύας,  
καὶ μὴ τὸν θυγατέρα λέγει, οὐτας πρέσο, καὶ τί  
ατο, ὅπι, ἐφη, ὁ Γαβρύας, πολλοὶ μὲν οἰκορει  
οὐτε αἰδικεῖν, οὐτε αὐτὸν φύσιδοντο ἐκέντες εἴναι.

Εἰς δὲ μιδένα αὐτοῖς οὐ πεληκέναι περιέστη  
μήτε χείμαλα πολλά, μήτε λυρανίδα, μήτε  
τείχη ἔρυμά, μήτε τεκνα ἀξιέρασα, δύπλην  
σκεισι περιέργη, τῷριν δῆλοι γνέας, οἴοι δῆδ.  
ἔμοι δὲ σὺ νῦν καὶ τείχη ἔρυμά, καὶ πλάγιον ποδο-  
πόδα πόνον, καὶ διώματιν τὸ σῶν, καὶ θυγατέραν  
ἀ-  
ξιόκτητον εὐχείσας, πεποίκησ με δῆλον  
γνέας πᾶσιν αἱ δεσφόροις, οἵτούτοις αἱ αστέρει  
περὶ ξένοις ἐθέλομε, οὕτως αἱ αδικηὶ χειροπέ-  
νεκεν, οὔτε σωθίκας θευδίμους αἱ ἔκαν  
εῖ). τὴν δὲ σῶματά σου, δίδιδι, ἔως αὐτῷ δι-  
χειροσῶ, καὶ δοκῶν εἶ) τοιούτος ἐπαγναμηνούπ-  
αἱ δεσφόρων, γάποτ' ὑπειλίσσομεν. διλλὰ πειρά-  
σομεν ταῖς πιπιμῆσι πᾶσι τοῖς καλοῖς. καὶ αὐ-  
δρὸς δὲ ἕφη, τῇ θυλαβίᾳ μὴ φοβέας ἀπορόσδ,  
αξιός ταύτης. πολλοὶ γάρ καὶ αγαθοὶ φίλοι εἰσὶν  
ἔμοι, ὄντος γαμοῦ αὐτοῦ, εἰ μάτιοι χείματα  
ἔξι ποσαῦτα, οἵσα δίδωσι, καὶ διηγά πολλαπλά-  
σια τάτων, οἷς αἱ ἔχομεν εἰπεῖν σὺ μάτιοι δί-  
διδι, οἵτεισι τίνες αὐτῷ, οἱ δὲ μάτιοι σὺ δίδωσι  
χειροπέ-  
νεκεν, τοιούτοις ταῖς πιπιμῆσι πᾶσι τοῖς φίλοις, τοῖς  
δὲ πολεμίοις τοιούτοις αἱ υφέντο ζωντες, εἰ  
μή θεος βλέψοις αὐτὸις δὲ αρετῆς καὶ δόξης αἱ μά-  
τιοι οἵπις δὲ αἱ πάσιν ποσαῖς τοῖς σοις, καὶ αὐ-  
στοις πομπαῖς ποσαῖς τοῖς σοις τοῖς τοις αἱδρασ εῦ-  
τοις εἰσὶν, οἷα σε τάτων πινά αἱτίσματα πάμδα  
μοι γνέας. ἀμέλει, ἕφη, τοιούτοις σε δεῖσος  
πιπιμέας, διλλὰ σὺ σῶμα ἡμῖν επη, αὐτὸς σὺ  
εἶδες καὶ διῆρας αὐτὸν εἰπεῖν. περὶ δὲ εἰ-  
πὼν δέξιατ τὸ ἔλευθερόν Γαβρύα, καὶ αἰασαὶς εἴ-  
ηδ, καὶ τὰς σου αὐτῶν πομπάς διηγαγεῖ πολ-  
λαὶ δεομένης τὸν Γαβρύα εἴδον δέξιπνον, οἷς οὐ-  
λησεν, διλλὰ σὺ τῷ ερατοπέδῳ εδείπνοις, καὶ τὸ  
Γαβρύα σου δέξιπνον παρέλαβεν. οὗτοι δὲ βασιλεῖς  
οὐκαταλιθίτεις ἥρετο αὐτὸν ὁδεῖς εἰπέ μοι, ἕφη,  
ὦ Γαβρύα, πότερον οἴδι εἴναι σοι πλείω, οὐ πολὺ<sup>τέλεια</sup>  
εἴκαστη τρώμαλα; καὶ οὐ εἴπεν οὐ μηνὶ τὸ δίδι  
οἰδι οὐτε τρώμαλα πλείω δέστη καλίνας, καὶ οἰκία  
γε πολλῷ μείζων οὐ μετέρα τέμνεις, οἱ γε οἰκία  
μὲν χειροπέδην καὶ θρασῷ καλίνας δὲ οὐ μηνεῖσιν,  
quam mea, quibus terra & cælum domus usum præbent. Etiam tot vobis lecti sunt,

A Sed quia nemo potestati eorum permittere voluerit nec pecuniae vim magnam, nec regnum, nec castella munita, nec amabiles liberos; eo sit, ut prius moriantur, quam quales sint, cognosci possit. Tu vero, quum mihi iam mœnia munita, & omnisi generis opes, & copias tuas, & filiam dignam sane, quam sibi quis adquirat, in manus tradideris: fecisti sane, ut apud omnes homines constet, eum me esse, qui nec in hospites impius esse velim, nec pecuniae causa iniustus, nec in præstandis pactis, quod me quidem volente sit, fallax. Igitur huius ego tibi, sat scio, donec vir iustus ero, & ob existimationem eiusmodi laudem mortalium promerebor, numquam obliuiscar: sed omnibus te rebus honestis ac bonis vicissim ornare conabor. Neque verendum est tibi, filiam quod adtinet, ne viro sis cariturus, qui hac dignus sit. Nam multos ego, & egregios amicos habeo, quorum quisquis tamdem hanc duxerit, an eas quidem pecunias sit habiturus, quantæ abs te dantur, vel etiam alias multo iis plures; equidem dicere nequeo. Te quidem certo scire volo, esse quosdam inter eos, qui ob pecuniam, quam tu largiris, ne tantillo quidem magis te sint admiraturi. Me autem hoc tempore suspiciunt, & omnes deos precantur, ut declarare possint, se quoque nihilominus, quam me, fideles amicis esse, hostibus numquam cedere, dum vita sit eis superstes, nisi numen obstet. Virtuti vero, & existimationi bona, ne Syrorum quidem, & Assyriorum omnia bona, tuis addita, prætulerint. Tales viros certo scias heic iam consedisse. Adeo Gobryas quum adrisset: Per Deos immortales, inquit, indica mihi mi Cyre, ubinam illi sint, ut abste petam, liceat mihi horum aliquem adoptare filium. Nihil profecto, ait, opus est ex me sciscitari, sed si nobiscum sequaris, poteris ipsemet etiam alij quemlibet horum ostendere. Haec loquutus, prehendit Gobryæ dextram, & surgens abiit, suis omnibus secum educatis. Quumque multum a Gobrya rogaretur, ut intus cœnaret, noluit: sed in castris cœnauit, & Gobryam in cœna conuiuam adhibuit. Accumbens autem stramineo in toro, sic eū interrogauit. Dic mihi mi Gobrya, inquit, utrum existimas plura tibi esse toralia, quam cuique nostrum? Profecto, inquit, vobis plura sunt, sat scio, tum stragula, tum lecti: & domus vestra longe amplior est, quam mea, quibus terra & cælum domus usum præbent. Etiam tot vobis lecti sunt,

quot supra terram cubilia. Præterea lanas  
ouium non habetis pro stragulis, sed quæ-  
cumque sarmenta tum montes, tum cam-  
pi suppeditant. Ac Gobryas quidem tunc  
primum apud eos cœnans, quum cibo-  
rum, qui adponerentur, vilitatem cerne-  
ret; multo illos liberalius suis degere iudi-  
cauit, eorum in vescendo moderatione  
Persarum temperantia. considerata. Etenim ad nullum neque ci-  
bum neque potum Persam disciplina in-  
stitutum gentilicia sic commoueri vel o-  
culis adparet, vel rapacitate, vel animo;  
minus ut prouidus sit, quam si cibus non  
adesset: sed ut homines equestres propter-  
ea, quod in equis non perturbantur, inter  
equitandum & cernere, & audire, & dice-  
re, quæ sit necesse, possunt: ita & illi pru-  
dentiam ac moderationem in vescendo  
exhibendam censem, ac prorsus caninum  
bellui huiusq; ducunt, a cibis & potu com-  
moueri. Animaduertit etiam eos de rebus  
eiusmodi sese interrogare, de quibus iu-  
cundius esset interrogari, quam non inter-  
rogari: & false quædam dicere, quibus  
perstringi iucundius esset, quam non per-  
stringi: & ita iocari, ut omnis contumelia  
longe abesset, longe turpis actio, longe a-  
nimorum ex indignatione contra se inui-  
cem commotio. Maximum vero ei visum  
est, quod quum essent in expeditione, ne-  
mini eorum, qui periculum idem adibant  
plura putarent adponenda: sed epulum id  
laetiissimum ducerent, si eos, quos belli so-  
cios habituri essent, quam fortissimos & o-  
ptimos efficerent. Quum autem Gobryas  
domum iturus surgeret, dixisse perhibe-  
tur: Evidem, mi Cyre, non amplius mi-  
rror nos copiam maiorem poculorum, ve-  
stium, auri possidere, quam vos: sed vobis  
tamen multo esse minoris æstimandos.  
Quippe nobis est curæ, vt copia illorum  
adfluamus: vos id eniti studiose mihi vi-  
demini, vt longe præstantissimi sitis. Hæc  
Gobryas quū dixisset, subiecit Cyrus: Vi-  
de mi Gobrya, cras mane cum equitibus  
armatis adfis, vt copias etiam tuas inspi-  
ciamus: simulque per agrum tuum nos du-  
cas, vt sciamus, quæ pro amicorum, quæ  
hostium rebus nobis habenda sint. At tunc  
quidem his dictis, vterq; ad sua discessit.  
Quum autem illuxisset, aderat cum equi-  
tribus Gobryas, & præibat. At Cyrus, ve-  
ratoris misericordia in per-

Bon: imper-  
tatoris mu-  
nus in per-  
sona Cyri.  
declarata.

μέσιν. τοτε μὲν δὴ ταῖς εἰπόντες ἀπῆλθον ἐκάτερος ὅπερι τὰ περισσήσητα. ἐπεὶ δὲ οὐ μέρα ἔλθετο, παρὸν ὁ Γαβρύας ἔχων τύς ἵππας, καὶ οὐκέτι. ὁ δὲ Κύρος, ὡς αὐτῷ περισσήσηκεν αἱρεῖται χορτι-

οὐ μόνον τῷ πορθέαται τὸν ὄδον περισσήχε  
τὸν νοῦν, ἀλλά ἄμα τὸ περιστών ἐπεσκοπεῖτο,  
εἴπι διωατὸν εἴν τὸς μὲν πολεμίους ἀδε-  
νεψέοις ποιεῖν, αὐτοὺς δὲ οἰχυεστέοις. καλέ-  
σας δὲν τὸν υρκηνὸν καὶ τὸ Γαβρύα, (τέ-  
τος γέρας ἀνόμιζε μάλιστα εἰδένειν ἦν αὐτὸς  
ἄντο δεῖθα μαθεῖν) ἔχων, ἔφη, αἱδρες φί-  
λοι, οἰόμενοι ύπερ ὡς πιστοῖς βουλεύομε-  
νος ποὺ τὸ πολέμου τύδε σὸν αὐτὸν πε-  
πλένειν. ὁρᾶ γέρας ὑπὲπι μᾶλλον ἐμοὶ σκε-  
ταζέον γένον, \* ὅπερας ὁ ἀστυειος ἡμῶν μὴ τῆς Β-  
κεστήσι. ἐμοὶ μὲν γένος, ἔφη, τῷδε διποσφα-  
λέντι ἔτιν οἶσας καὶ ἄλλη διποσφορή· ύπερ δὲ εἰ  
οὐπος θετικεστήσι, ὁρᾶ ἀποδεικτὰ ὄντα ἀλ-  
λέται γιγνόμενα. καὶ γέρας ἐμοὶ μὲν πολέ-  
μος ὑστερῶν, σὸν ἐμέ μισῶν, ἀλλά οἰόμενος τὸ  
σύμφορον εἶ) αὐτῷ, ἡμᾶς μεγάλοις εἶ). καὶ  
\* ὅπερας τετράδεκά τὸ το εφέ μαζεῖς ύμας δὲ καὶ  
μισοῖ, καὶ ἀδικεῖθα νομίζεις ύφε ύμδη. ποὺς  
ταῦτα ἀπεκρίνατο ἀμφότεροι, τὸ καὶ τὰ αὐ-  
τὰ μερινέοντι \* μέλλεις ταῦτα εἰδότι σφί-  
σι, καὶ μέλεν αὐτοῖς ἴσχυρας, ὅπη τὰ νῦν παρ-  
όντα διποσφοριτο. Οὐταῦτα δὲ πρήγματο ὡδελέ-  
ξατέ μοι, ἔφη, ύμας μόνοις ἀνόμιζε πολεμί-  
κος ἔχειν ὁ ἀστυειος ποὺς ἔσατον, ητοίσα-  
δε καὶ ἄλλον γένοντα πολέμους; ναὶ  
μᾶδι, ἔφη ὁ γέρας, πολεμιώτατοι μὲν εἰ-  
σιν αὐτῷ καδόύσιοι, ἔθνος μέλετ πολὺ καὶ  
ἄλκιμον σάκει γε μικρὸν, ὅμοροι ἡμῖν, οἱ πολ-  
λαὶ κακὲ πεπόνθασιν τὸ τὸ ἀστυείου. ἐ-  
πειράτο γέρας καὶ σκένεοις, ὡς πορητὴ μαζεῖ,  
καταστρέψασθα. Σόκοιοι οἴεσθε, ἔφη, τι  
αὖτες ἀμφοτέρους ἡδεῖς αὐτὸν πειθεῖν αὐτοῖς  
ἡμῖν τῷ ἀστυείῳ; ἔφασαν, καὶ σφόδρα γέ-  
ειπη διεύμεντο συμμίξα. τί δὲ σὺ μέσα, ἔ-  
φη, δέ τὸ συμμίξα; ἀστυεῖοι, ἔφασαν, οἱ  
αὐτὸς ἔθνος δι οὐδετὸν νῦν πορθεῖ. ἐπεὶ δὲ ταῦ-  
τα ἤκουσεν ὁ Κύρος, τί γέρας, ἔφη, ὁ Γαβρύα,  
οὐ σὺ τὸ γενισόχου τὸ το, ὃς νῦν εἰς τὸν βα-  
σιλείαν καθέστηκεν, ταῦτα πολλών π-  
να τὸ Σέπτεκτην γρέες; τοιαῦτα γέρας γίμνει, \* Ε-  
ἔφη ὁ Γαβρύας, ἐπαθον τὸ αὐτό. πότεροι  
δῆται, ἔφη ὁ Κύρος, εἰς τὸ μόνον ἐγένετο τοι;  
αἷλον π-  
τος, ηγετεῖς τὸν τίνας; ηδι, ἔφη ὁ Γαβρύας;  
ηγετεῖς ἄλλας πολλάς. ἀλλὰ τὸς μὲν ἀστενοῖς  
διωατατέρους ηγετῶν, ηγετεῖς τὸν τίνας;

Anon solum itineri faciendo intentus erat, sed inter progrediendum considerabat, fierine posset, ut hostes imbecilliores rediderentur, ipsi firmiores. Itaque arcessito Hyrcani & Gobrya, quos in primis ea scire putabat, quibus sibi cognitis opus esset. Arbitror, inquit, amici me nequaquam in consiliis de hoc bello meis aberraturum; si vos, homines fidos, eis adhibeam. Vobis enim magis etiam cogitandum esse video, quam mihi, ne superior nobis Assyrius euadat. Nam me quod attinet, si frustratus in his fuero, fortassis aliud est quo me vertam: a vobis, si superior hic euaserit, omnia quae possidetis, alienatum iri video. Etenim meus hostis est, non quod me oderit: sed quod sibi non expedire arbitratur, nos magnos esse; eaque una causa est, cur bellum nobis faciat. At vos & odit, & affectum se a vobis iniuria ducit. Ad quem respondit veterque curae sibi esse, res istas ut ita peragerent, quod ipsi haec non ignorarent: ac præterea sibi vehementer esse curae, qui negotiorum præsentium futurus sit exitus. Ibi tum ipse sic orsus est dicere: Velim mihi significetis, ait, an vos solos Assyrius existimat erga se hostiliter affectos, an & alium quemdam infestum ei nouistis? Immo, inquit Hyrcanius, maximi profecto eius hostes sunt Cadusij populosi gens & robusta: itidemque finitimi nobis sunt Sacæ, quos Assyrius iste multis maleficiis infestauit. Nam & illos æque, ac nos, conatus est sibi subiicere. Ergo existimatis, ait, iam libenter hos virosque nobiscum inuasuros Assyrium? Immo etiam acriter, inquiunt, si quo modo coniungere se nobis cum possent. At quid obstat, ait, quo minus coniungantur? Nimirum Assyrij, dixerre, gens ea, per quam nunc pergis. Quum haec audisset Cyrus: Quid enim mi Gobrya, inquit, an non tu adolescentem huc, qui modo regno potitur, ita accusas, ut qui moribus & indole supra modum superbarit? Nimirum talem, ait, eum expertus sum. Vtrum vero, subiecit Cyrus, in te soltim se talem gessit, an etiam erga quosdam alios? Profecto, inquit Gobryas, erga multos etiam alios. Et quibus satie contumelijs imbecilliores adficiat, quid adtinet dicere? Etiam viri cuiusdam longe me potentiores filium, sedalem a iuuentute suum, sicut & meus erat, compotantem apud se com-

*rūs cō  
um ca-  
de fo-  
pluria  
s adiis  
adis.*

prehendit & castrauit: idque propterea, quemadmodum nonnulli narrant, quod concubina regis eum laudauerat a formæ præstantia, felicemque futuram dixerat, quam ille coniugem habiturus esset: vt autem iste nunc ait, quod eius concubinæ pudicitiam tentasset. Itaque iam ille castratus est, & patre mortuo, imperium obtinet. Ergo, subiecit Cyrus, existimas hunc quoque nos lubenter conspecturum, si nos arbitraretur opem sibi laturos? Id vero sat equidem scio, ait Gobryas. Verum difficile est, mi Cyre, in conspectum eius venire. Quid ita? inquit Cyrus. Quia si quis cum eo coniungere se velit, eum necesse est præter ipsam Babylonem trâsire. Quid autem in hoc, ait Cyrus, difficultatis est? Quia profecto, inquit Gobryas, scio copias ex ea multo maiores his, quas tu nunc habes, prodiisse: atque adeo plane tibi constare volo, hanc ipsam ob caussam minus Assyrios nunc & adferre arma, & equos adducere, quam antea: quod exercitus tuus exiguus esse visus sit iis, qui cum conspexerunt, quodq; passim rumor hic iam sparsus sit. Quamobrem consultius arbitrор esse, ut caute proficiamur. Huiusmodi quum ex Gobrya Cyrus audisset, ita repondit Rechte, mi Gobrya dicere videris, qui profectionem nos instituere tutissimam iubes. Mihi vero negotium hoc considerati nullum tutius iter ad animum accedit, quam si ad Babylonem ipsam tendamus; si quidem ibi robur hostium maximum est. Nam multos istic esse, fateris ipse: qui si fidentibus animis sint, etiam terrori nobis erunt, ut equidem arbitror. Iam vero si nusquam nos conspiciant, sed delitescere nos in obscuro existiment, quasi eos metuamus: certo futurum scias, inquit, ut metu liberentur, quem conceperunt; proque hoc tanto maior in eis fiducia existat, quanto nos diutius non conspexerint. Si iam in eos pergemus, multos inueniemus, plorantes adhuc illos, qui a nobis interficti sunt; multos, quibus erunt obligata vulnera, quæ a nostris accepterunt; omnes denique recenti habebunt in memoria nostri huius exercitus audaciam, & fugam calamitatemq; suam. Scire autem plane debes, mi Gobrya, sic compаратum esse: ut pleriq; mortales, quum fiducia pleni sunt, ea sint animorum elatione, quæ sustineri nequeat. Verum ubi sibi metuant, tanto maiori stupidiioriq; formidine tenetur, quanto plures numero fuerint. Nā de multis & aduersis rumoribus iste terror eis a

Aac multis etiam consternatis exanimatis-  
que vultibus collectus. Adeoque ob ma-  
gnitudinem terroris huius facile fieri ne-  
quit, vt vel ille verbis extinguatur, vel in  
hostem ducendo robur animis addatur,  
vel ab eisdem abducendo militum spiritus  
excitentur: sed quo magis hortere, præ-  
sentibus vt animis sint, tanto se grauiori-  
bus in periculis esse putant. Quin & illud  
quo pacto se habeat, accurate considere-  
mus. Nam si deinceps in rebus bellicis a-  
pud eos futuræ sunt victorix, qui maiorem  
hominum turbam adnumerabunt; recte  
tu nobis metuis, & nos reabs in periculo  
versamur. Sin vt antea, sic etiam adhuc,  
ex virtute dimicantium de præliis decer-  
nitur; recte feceris, si bono sis animo. Nam  
Dii iuuantibus multo plures apud nos in-  
uenies, qui pugnare velint, quam apud il-  
los. Atque ut plus etiam fiduciæ sumas,  
hoc quoque tecum cogita. Sunt hostes  
iam multo minores, quam prius. post-  
quam a nobis vieti sunt; & multo nunci-  
tem minores, quam quum aufererūt. Nos  
autem & maiores nunc sumus, quam <sup>1. Clio</sup>  
prius, quum vicerimus: & firmiores quum <sup>margin.</sup>  
fortuna vsi prospera simus: & plures,  
quum vestrum accessione simus aucti. No-  
li enim deinceps ne de tuorum quidem  
honore detrahere, quando iam nobiscum  
sunt. Nam cum victoribus certo scire de-  
bet, mi Gobrya, etiam eos, qui sequuntur  
exercitum, fidentibus animis pergere. Ne  
id quidem te lateat, inquit, posse hostes  
hoc etiam tempore nos videre: sed magis  
illis strenui nequaquam parebimus, quam  
si aduersus ipsos progrediamur. Quum  
Digitur haec mea sententia sit, Babylonem  
nos recta ducito. Itaque sic pergentes, die  
quarto ad fines agri Gobryæ peruererunt.  
Quumque iam esset in hostico, secum in-  
structos consistere iussit tum pedites, tum  
equites, quot ipsi sufficere viderentur: Re-  
liquis equitibus excutendi potestatem  
fecit, hoc etiam præcipiens, vt armatos  
occideret; reliquos cum pecudibus, qual-  
cumque cepissent, ad se deducerent. Ius-  
sit & Persas cum ceteris populatum excur-  
rere, quorum multi redierunt ab equis de-  
lapsi, mulii etiam prædam amplissimam  
adduxerunt. Ea quum adesset, conuoca-  
tis Medorum Hyrcaniorumque principi-  
bus, & qualibus Persicis, sic eos adloquu-  
tus est: Gobryas, amici, nos vniuersos ho-  
spicio exceptos liberaliter habuit. Itaque  
si rite Dii eximia pro more telegerimus,

& reliquo exercitui, quantum satis erit, ac deinde prædam aliam huic dabimus: recte facturi sumus, ut statim constet, conari nos bene de nobis promerentes vicissim beneficiando vincere. Quod ubi auditum esset, & comprobatum & celebratum fuit id quidem ab omnibus, sed unus tamen huiusmodi quiddam protulit: Maxime, mi Cyre, faciendum hoc nobis est. Nam mea quidem sententia, Gobryas hic nos mendicos quosdam esse arbitratus est, quia Daricis onusti non venimus, nec aureis e pateris bibimus. At si hoc fecerimus, fortassis adgnouerit, posse homines etiā absq; auro liberales esse. Ite igitur, inquit, atq; ubi Diis debita Magistrideritis, & quæ exercitui suffecerint, selegritis; cetera Gobryæ arcessito donate. Quamobræa conceptis illi rebus omnibus, quibus opus erat, cetera Gobryæ dederunt. Secundum hæc ad ipsam Babylonem progressus est Cyrus, instructo exercitu eodem modo, quo instructus pugnæ tempore fuerat. Quum vero Assyrii contra non prodirent, Gobryam Cyrus adequantē dicere iussit, vel seipsum cum rege dimicaturum, si rex egressus pro regione dimicare vellet. Si regionem suam nō defenderet, necessario viatoribus parendum sciret. Itaq; Gobryas eo profectus, ubi dicere tutum erat, hec dixit. Is vero quemdā ad eum prodire iussit, quiverbis huiusmodi respoderet. Hæc ait dominus tuus, Gobrya: Non me pœnitet, quod filium tuum interfeci: sed quod præter ipsum, non etiam te occiderim. Quod si pugnare vultis, ad diem ab hoc trigesimum adeste. Nunc enim nobis haud vacat, adparatu belli occupatis. Gobryas autem: V-D

Cyrus Af-  
fyrō duel  
lum offert.

Cyrus co-  
silium ca-  
pit de in-  
cunda no-  
ua socie-  
tate.

\* Lectio  
marginis.

inter nos libere colloquuti sumus. Quanto igitur commodum tibi videtur, hominem accedito, ac primum quidem sic facito, \* quemadmodum ipse tibi significabit. Vbi vero cum eo congressus fueris, si quidem animaduertes, eum nobis amicum esse velle; prorsus hoc struendum erit, ut clam sit, eum a nobis amicum esse.

Liberalis  
enius/dam  
homines  
vox.

γύ τῇ ἄλη \* σραπιά πάνταν, δοίημν Τάλ-  
λων τότε λείαν, ἀρ αὐ, ἐφη, Τκαλέν ποίσαμ-  
νην τῷ Δῆμος Φανεροῖ εἰ) ὅπι τὸς δῶ ποι-  
πάταις περάμαται δῶ ποιώντες. ως ἢ τὸτ  
πάχυσαν, πάντες μὲν ἐπήνοια, πάντες δὲ σκε-  
καμίαζον. εἰς ἢ καὶ ἐλέξει ἀδε πάρν, ἐφη, ω  
Κύρε, τῷ ποιόσαμν. καὶ γέμοι γε δοχη, ἐφη,  
ο Γαβρίας πλωχοί πιας στόμιζεν μαῖς, ὅπι  
δαρεκάν μεσοὶ πάχημη, δῆλος σκηνοῖ φια-  
λαῖ θετίνομην. εἰς ἢ τῷ ποιόσαμν, γοῖν αὐ,  
ἐφη, ὅπι ἐλαθείοις εἴ) καὶ αὖτις χροίσθεν.  
ἴτε δὴ, ἐφη, τὰ τηρεῖν διπόλιες τοῖς μάρτιοις,  
καὶ οὐσα τῇ σραπιά πάνταν ἐλέόντες, πάλλα  
καλέσαντες τῷ Γαβρίας δότε αὐταῖ. οὐ πάδη  
λαβόντες σκηνοῖσα ἔδι, πάλλα ἐδοσαντα  
Γαβρία. σκηνοῖσα ἔδι τοῖς αὐτοῖς αὐτοῖς βασι-  
λεῖα, σραπιάνδρος ωστερ ὅπε ημέχη  
ιο. ως δὲ σκηνοῖσαν αὐτοῖς αἰσθέσαι, σκέ-  
λουσιν ο Κύρες τῷ Γαβρίας παρεσελθοντα  
εἰπεῖν, οὐτοῖς βούλεται στέιλον ο βασιλέας Κύρ  
τῳ χρειας μάχαδα, καὶ αὐτοῖς σκηνοῖσα  
μαχοτο. εἰ δὲ μὴ ἀμείψῃ τῷ χρέα, ὅπι αἴσ-  
τη τοῖς κεχετοῖς πείθεσθαι. οὐδὲ δὴ Γαβρίας  
παρεσελθοντας εἴτα δοφαλές ιο, ταῦτα εἴ-  
πεν. ο δὲ αὐτοῖς στέπεμέντοι διποριόμενον  
τοιάδε δεσπότης ο σὸς λέγει, ω Γαβρία, δῆλος  
οπι απέκτηνα σου τῷ ψοι μεταμέλειμοι, δῆλος  
οπι οὐκ στεπεσαπεκτήτα. μάχαδα δὲ αὐ  
βούλησθε, ἵκετε εἰς τὰ τεικεστήν πρέσαν  
ιο. οὐδὲν οὐπωρολό. ἐπι γέρε σραπιά  
αξόμετα. ο δὲ Γαβρίας εἴπει. ἀλλὰ μή πο-  
τε σοι λησθεῖ αὐτοῖς μεταμέλεια. δῆλον γέρε  
οπι αἴστη στέγη, οὐδὲ οὐτοῖς σκηνοῖσα  
ἔχει. οὐδὲ δὴ Γαβρίας απήγειτε τῷ πασ-  
σοντοι ο δὲ Κύρες ακρύσας ταῦτα, απήγε-  
γε σραπιά, καὶ καλέσας τῷ Γαβρίας  
εἰπέμοι, ἐφη, σκηνοῖσαν τοι σκηνοῖσα  
σκητμήστε. ταῦτα τῷ δαιτείνει σκηνοῖσα  
ιοιν γένεσθαι; δῆλοι τοι, ἐφη, δοκειδέ-  
ναι. πολλὰ γέρε σραπιά παλλίδοις. οπότε σκηνοῖσα  
λαῖσσοι δοχεῖ εχάριστοι παρεσελθονταί, καὶ  
παρεσελθοντο μηδενούτω ποιεῖ, οπότε αἴταισι ο, παλλίδοι  
λέγει, εἰδῆτε επιθέμετε στρατηγούντων, ἐπιθέμετε  
μηδενούτων φίλοντοι μηδενούτων εἴ), ταῦτα  
ηδη μηχανᾶτε, οπότε λαζανού φίλοντοι μηδενούτων  
οὔτε.

οὐτε γέρας φίλοις τις ποιόσθεν ἀλλως πως  
πλέοντα αγαθὰ σὺ πολέμω, οὐ πολέμως δοκῶν  
εἰ). οὐτε αὖ θροὺς πλείω πις βλέψειν διῆς  
πιως οὐ φίλος δοκῶν εἰ). καὶ μή, ἐφη οὐ Γω-  
βρύας, οἷς ὅπι καὶ τρίατο Γαδάταις οὐ μέ-  
γαλον ποιόσακ κακόν τι μᾶς βασιλέα δασυρίων  
διλό, πιαι διώματο, τοῦτο καὶ ήμας δισκοφῆν  
λέγει διλό, οὐ φη Κιέρος, εἰς τέτο οὐ φρούριον  
οὐ πολέμου, ἀραιοῖς, οὐ φη, τὸ τε Β  
φευχάρχου παρεδίησα τὸ δίνοιχον ἐλέγο. Καὶ  
οὐ διώματο; σαφαῖς γε, οὐ φη οὐ Γωβρύας, εἴ-  
σθι αὐτοπόλος ὁν, οὐσιών μὲν οὐ δινός, αφίκιστο  
περισσόν. οὐχιοῦ, οὐ φη, αὐτοπόλοτος αὐ  
εῖν, εἰ περισσόν. αλοιμέγα πολέμου τὰ χωρία άν-  
το, οὐ λαζήν βουλέμηνος, οὐ πομάχητο διέ-  
κενος αὐτούς καὶ λαζήνοις μὴν αὐτούς πιέγα,  
αὐτούς δὲ κακίοις ημένην διῆστιν τινας, οὐ  
καὶ αὐτούς περιπομήσοις οὐτούς εμοὶ πολέμους  
τούτους οὐς φατε πολεμίους ταῖς ασυείσαι. Καὶ  
καὶ οἱ μὲν ληφθέντες λέγειν ὅπι διπλοὶ στρατού-  
μα αὐτοῖς ταῖς κλίμακας τούς οὐ φευ-  
ριον αὐτούς οὐ δὲ δίνοιχος αχένος πολέ-  
μοιούσα τοπογράφηλα βουλέμηνος Ταῦτα  
παρέμενοι οὐ Γωβρύας εἶπεν. οὐτοις μὲν γιγα-  
νήσιν οὐφασοῖδας ὅπι παρείναι αὐτούς, καὶ δεο-  
τογα αὐτούς μέντοι εστε σὺ απέλθης. οὐχιοῦ  
αὐ, οὐ φη Κιέρος, εἰ γε απάξιοις οὐτοις  
αὐτοῖς οὐτοις ποιόσα τὰ χωρία; εἰκός  
γειοῦ, οὐ φη οὐ Γωβρύας, Καὶ οὐδὲν οὐκείνου  
οὐκ οὐδεοκενάζοντος, τὰ διέξαθεν σὺ ισχυρό-  
τερα προσάγεντος. οὐτοις, οὐ φη, καὶ πραξία Ταῦ-  
τα διδάξας καὶ διέπραξαμηνος παρέμενος. πιστά  
δὲ αὐτῷ οὐτοις μείζω οὐτε εἰ ποιοῖς αὐ, οὐτε δει-  
ξας, οὐτοις σὺ οὐκέντησπαρήμηνειλφώς.  
οὐτοις οὐχειρένοις οὐ Γωβρύας, αὐτομενος δὲ ί-  
δων αὐτούς δίνοιχος, στινωμολέγει τε πολύ-  
τα καὶ συμέτεστο αὐτοῖς. οὐτε δὲ απήγελεν οὐ  
Γωβρύας ὅπι πολύτα δοκεῖν ισχυράς ταῖς δίνοι-  
χας οὐχιοῦ πολιτείας, οὐτοις πολέμους ταῖς δίνοι-  
χας. Ταῦτα καὶ οὐτοις πολέμους οὐ Γωβρύας, οὐτοις  
οὐ φη οὐ Γαδάταις. \*Ταῦτα δὲ αὐτοῖς, οὐτοις οὐ-  
πειπολεμεῖν Κιέρος, περιπάτων οὐ πορθύσοντες  
μὲν εἰσενοῦν οὐ Γαδάταις οὐτοις πολέμους, οὐτοις αὐτοῖς ταῖς στρατούματα, καὶ ταῖς κλίμακας κομιζούσιεν

A Nec enim aliquis in bello amicos vlla ratione alia pluribus beneficiis adfecerit, quam si hostis esse putetur: nec inimicos vlla ratione alia quis adfecerit detrimentis pluribus, quam si amicus esse videatur. Noui equidem, ait Gobryas, id emturum quoque Gadatam, ut magno aliquo malo regem hunc Assyriorum adficere possit. Sed nobis considerandum est, quid possit. Dic igitur, ait Cyrus, an in castellum hoc, quod est ante regionem hanc, & quod ipsi dicitis aduersus Hyrcanios & Sacas ad eū vsum, ut bellum propugnaculum huic regioni sit, exstructum esse; in hoc inquam castellum existimas admissum iri a præsidij magistro castratum illum, si cum copiis accedat? Prorsus, inquit Gobryas, si quidem haud suspectus, vti nunc est, ad eum veniat. Ergo, ait, quamminime suspectus fuerit, si ego castella ipsius adoriar, tamquam ea capere velim, & ille totis viribus defendat: & capiam ego quiddam, quod ipsius sit; ille contra vel quosdam alios nostrum capiat, vel etiam nuntios eos, qui mittentur a me ad illos, quos regi Assyriorum infestos dicitis. Ex his qui capti fuerint, ad exercitum se proficiisci dicant, ut scalas ad illud castellum deportent. Atiste castratus, his auditis, adesse se simulet, velut hæc indicaturum. Et Gobryas: Si res ita geratur, ait, certo scio recepturum, atq; etiam eum rogaturum, ut secum maneat, donec tu recedas. Ergo ait Cyrus, si semel castellum ingrediatur, an nostram illud in potestatem redigere possit? Ita videtur, inquit Gobryas, siquidem intus ille adparando iuuet, ac tu foris impetu vehementiori Dexercitum admoucas. Ito igitur, inquit Cyrus, & enitere, castratum ut istum hæc edoceas, & re confecta nobis præsto sis. Fidem vero neq; dederis, neq; ostenderis ei maiorem illa, quam a nobis ipse acceperisti. Secundum hæc discessit Gobryas, cuius conspectus quum gratus illi castrato fuisset; ita cum eo conuenit & pactus est, ut oportuit. Quumq; renuntiasset Cyro Gobryas, videri sibi apud eunuchū certiam & firma esse omnia, quæ mandasset: tum deinde copias postero die Cyrus admouit, Gadatas ex aduerso sua propugnante. Castellum a Cyro captum, id erat; quod Gadatas iussit oppugnari. Nuntios autem, quos Cyrus miserat, prædicētis eis, quo proficiisci deberent, alios Gadatas elabi suuit, ut copias adducerent, & scalas adferrent:

<sup>x Lem. Alex. 6. Pro. p. 265, 13. Vide ad Sophacl. Antigon. v. 662.</sup>

quos vero cepit, quæstionibus in multorum præsentia subiecit. Quinque audisset, ad quæ proficisci se dicerent: statim rebus ad iter adparatis, tamquam hæc enuntiaturus, noctu profectus est. Tamdem quum ei fides habita esset, velut opem latus castellum ingreditur: ac primum quidem vna cum eo, qui castello præfectus erat, omnia pro viribus adparabat. Posteaquam vero Cyrus accessit, castellū Gadatas occupat, usus ad hoc etiam captiuorum de Cyri copiis opera. Quo confessio, statim Gadatas eunuchus rebus in eo constitutis ad Cyrum egreditur, quem vbi pro more adorasset: † Gaudere, inquit, te Cyre iubeo. Gaudeo vero, subiecit ille. Nam tu cum Diis non solum me iubes, sed etiam cogis gaudere. Nam plane scias, magnime facere, quod sociis heic nostris castellum hoc pacatum relinquo. Tibi vero Gadata, liberum quidem procreandorum, vt videtur, facultatem Assyrius admittit, amicos parandi facultatem non abstulit, sed velim tibi persuadeas, te nos hoc facto tibimet amicos adiunxisse; qui tibi conabimur, si poterimus, haudquam deteriores opitulatores esse, quam si vel filios, vel nepotes haberemus. Huiusmodi verba Cyri fuerunt. Atque heic Hyrcanius, qui iam primum animaduerteret, quid esset gestum, adcurrit ad Cyrum, prehensa que ipsius dextra, inquit: O ingens tu bonum amicis, Cyre, quantam vt Diis gratiam modo debeam, effecisti; quod tibi me coniunxerunt. Tu vero abito, inquit Cyrus, & recepto in potestatem tuam castello, cuius causa me tantopere completeris, ita res eius componito; vt & tibi amico nostro, quantius pretij sit; & reliquis sociis, inque primis huic Gadata, qui captum nobis tradit. Quid igitur? inquit Hyrcanius, an vbi Cadusij Sacæque venerint, & ciues mei, hunc etiam vocabimus; vt omnes, ad quos res pertinet, in commune consulamus, quo paclio maxima cum utilitate nostra castello fruamur? Placuit hoc Cyro. quumque conuenissent, ad quos castelli cura pertinebat, hoc consilij ceperunt; vt communiter ab iis custodiretur, quibus expediret illud habere pacatum: quo ipsis belli propugnaculum esset, ac aduersus Assyrios munimentum. Id vbi factū esset, multo alacrius Cadusij, Sacæ, Hyrcanij militiae societatem amplectebantur. Coactusq; hinc est exercitus, ex Cadusis, ad vices mille cetrati,

*Salutatio  
Greca. Sio  
& Horas  
tus: Cel/o  
gaudere.*

*vt & na-  
zioni ve-  
stire.*

*Cyrus ex-  
ercitum  
auget in-  
dustria  
singulari.*

A ḡς δι' ἔλασσε, βασανίζων στρατίον πολλά. ὡς  
δηπρουσενέφ' ἀ ἐφασαν πορθεσται, οὐτέως  
Τσιμεσκιδασμένος ὡς ἔξαγελαν, τὸν γετός συστενα-  
ἐπορθέτο. τέλος ἢ πιστεύεις, ὡς βοηθος εἰς-  
έρχεται εἰς θερέτρον καὶ τέως μὴ \* συμπαρε-  
παρεσκήαζεν, πιδιώματο τῷ Φευράρχῃ.  
ἐπειδή οἱ Κύρεοι εἰπλε, καταλαμβανεῖς θα-  
ρίον, σιμεργεῖς ποιοπάρθρος καὶ τὰς τοῦ Κύ-  
ρων αἰχμαλώτας. ἐπειδή τότε ἐθύμετο, οὐτέ  
Γαδάτας οἱ δινάχος τὰ ἐνδον καταστήσας ἔξ-  
ῆλθε τοῦ τοῦ Κύρου, καὶ δινόμως περικαθη-  
σας, εἶπε, χαῖρε ὁ Κύρε. διῆλα ποιῶ ταῦτα, ἐφη.  
σὺ γάρ με σὺν τοῖς θεοῖς καλεύεις μόνον, δι-  
γέγεκκαντας χαῖρεν. οὐδὲ γάρ, ἐφη, ὅτι  
ἔγενε μέγα ποιόμεν φίλοι τῷ τῷ θεοῖς τοῖς  
σύνταξε συμμάχεις τὴν πατέρα πέμψαντες. σὲ δέ, ἐφη, καταλι-  
ῶ Γαδάτα, οἱ ασύριοι πάγδας μὴν, ὡς εἴσικε,  
τὸ ποιναρέλετο, καὶ μὴ τοι πότε φίλοις κτᾶ-  
ται, γε \* διάσασθαι ἀπειρόποιν. Δλλού  
διότι ήμας διέργω τόπῳ φίλοις πεποίησα,  
C οἱ σοι, οὐδειώνδα, πρεσσόθα μὴ χείρεσ  
βοηθοὶ τοῦ θεοῦ τοῦ, η εἰ πάγδας η σκέψης  
σκέπτησο. οἱ μὲν ποιάτα ἐλέξειν σὺ οὐ τόπῳ  
ὑρχάντος, σχετικούς \* τῷ γερμανίδιον, πόλεων  
πορθετεῖ τῷ Κύρῳ, καὶ λαβὼν τὸ δέξιαν αὐτῷ,  
εἶπεν. οὐ μέγα αἴγαδον σὺ τοῖς φίλοις Κύρε, ὡς  
πολλῶ με τοῖς θεοῖς ποιέσθαί εἰν οφείλων οὐτε  
σοὶ με σωήσαγεν. Τι τοῦ Γύριων\*, ἐφη οἱ Κύ-  
ρεοι, καὶ λαβὼν θαρεῖον διηρέει με ασπά-  
ζη, διετί οὐτός οὐτες \* ὡς αὐτὸν προμετέρω πολύ-  
D φίλω πλείους ἀξιοντο, καὶ τοῖς ἄλλοις συμμά-  
χοις, μάλιστα δὲ ἐφη, Γαδάτα τόπῳ, οἱ ήμιν  
λαβὼν αὐτὸν τοῦ θεοῦ μάρτιον. Τί δέ, ἐφη οἱ Υρχάντος,  
ἐπειδή μεταδόντοι ἐλθωσι, καὶ σάκσι, καὶ οἱ εμοὶ  
πολίται, καλέσω μὲν τόπον, οὐα καὶ τοῦ Βου-  
λού μεταποθέτες, οἵσσις περιστήσι, πῶς αὐ-  
συμφορώτερα χρώμα τῷ Φευράρχῳ; Τοῦ-  
τα μὲν οὐτες σωήσετε καὶ οἱ Κύρεοι. ἐπειδή  
σωτῆλον οἷς ἐμελεταῖς τῷ Φευράρχῳ, ἐσου-  
λέσαντο καὶ Φυλάρχην οἵστερον αἴγαδον εἴη + διπ-  
E φίλοιον οὐ, ὅπως εαυτοῖς μὴ πρεσσόβολος εἴπο-  
λέμει, τοῖς δὲ ασύριοις τὸ θετικόν θλιμένον. ἐ-  
πειδή τότε ἐθύμετο, πολὺ δὲ \* περιθυμότερον νομένον  
καὶ καδούσιοι σωτεράτοντο, καὶ σάκσι, καὶ \* περιθυ-  
μότεροι καὶ σωτελέγηστοι θράτερα μότερον @  
καδούσιον μὲν πελασταί εἰς δυσμενίους, πλείον  
καδούσιον μὲν πελασταί εἰς δυσμενίους, πλείον  
καδούσιον μὲν πελασταί εἰς δυσμενίους, πλείον

καὶ ἵπατες εἰς τετρακισχιλίους, στακῶν δὲ το-  
ὗστας εἰς μυρίους, καὶ ἵπατο ξότας εἰς δισ-  
χιλίους καὶ ὑρχιλίους δὲ πεζοῖς τε ὅσσις ἐδύ-  
νατο τοφεῖς ἐπεμβαν, καὶ ἵπατες τοφεῖς  
ἐπλήρωσαν εἰς δισχιλίους. Οὐ γάρ τοφέται  
καταλειπειμόνοις ἡστεν πλείους οἵκει αὐτῷ  
ἵπατες, ὅποι καθδύσιοι καὶ οἵσανται τῷ ασ-  
συεῖσιν πολέμῳ ἥστεν. ὅσσον δὲ χρόνον ὀκα-  
νέζετο ὁ Κλεός ἀμφὶ τῷ τοφῇ τῷ Φεργύειον  
οἰκενομίαν, τῷ ασυείσιν τῷ κατὰ Ταῦτα  
Τάχασια πολλοὶ μὲν ἀπῆγον ἕπασι, πολ-  
λοὶ δὲ ἀπέφερον ὄπλα, φοβούμνοις ἥδη  
πολὺτες τὸς τοφεῖς γέρεις. Όκλ δὲ τότε τοφεῖς  
έρχεται τῷ Κύρῳ Γαδάτας, καὶ λέγει ὅτι  
ῆκεισιν αὐτῷ ἀγέλει, ὡς ὁ αἰσθέρος, ἐπει-  
ταῦτα  
Τόποιστα τοφῇ τῷ Φεργύειον, χαλεπῶς  
τε στέγυκει, καὶ συκοβάζοιτο ὡς ἐμβαλλεῖ  
εἰς τὸν αὐτόν γέρεν. Ήδη δινάφης με, ὁ Κύ-  
ρος, τὰ τείχη αὐτούς τοφεῖς θλασσῶσα, τῷ  
δὲ ἄλλων μείσιν λέγος. καὶ ὁ Κλεός εἶπεν, ἵν  
οὖν ἴησκει, πότε ἔσῃ οἴκοι; καὶ ὁ Γαδάτας  
εἶπεν· εἰς τούτην δεῖπνόσαν τὴν ἡμέτερα.  
Ὕκει τὸν αἰσθέρον, ἔφη, οἵσι ὄκλος ἥδη πατα-  
λήφειδα; δῆ μὲν οὖν, ἔφη, οἵδα· πολύσιος  
ὑπὸ τούτην τοφῶν δοκεῖσι λέγει. ἐγὼ δὲ, ἐ-  
πειστο  
Φη ὁ Κλεός, ποσαῖος αὐτῷ σὺν τῷ στρατού-  
σιν. ματὶ σκείσει ἀφικοίμειν; τοφεῖς τότε δὴ δ  
Γαδάτας λέγει· πολὺ ἥδη, ὁ δέσποτας, ἔ-  
χει τὸ στρατόν μα, καὶ σύ αὐτὸν διώσαο Γαεί-  
ον· \* σύ εὖ πέποιθα ἡμέρας ἐλθεῖν τοφεῖς τὸν  
ἔμπλακον. σὺ μὲν τούτων, ἔφη ὁ Κλεός, Γ  
αδάτας λέγει τοιάδε· αἱρέσει σύμμαχοι, Γαδά-  
τας διέτοφεν, αἱ ἐδόκει πᾶσιν ἡμῖν πολλοῖς  
ἀξιαῖσιν, καὶ Ταῦτα φρίνει καὶ ὅποις ἀγα-  
θὸν ὑφ' ἡμῖν παθεῖν. τοῦ δὲ ὁ αἰσθέρος εἰς  
τὸν γέρεν αὐτῷ ἐμβάλλειν ἀγέλεται, δη-  
λονταί μα μὲν πιμφεῖσθαι αὐτὸν βουλέμε-  
νος, ὅπις δοκεῖ μέχα βεβλαφθεῖστος αὐτῷ  
ἄμα δι' ἵστας καὶ σκείνονται, ὡς εἰ οἱ μη-  
νον κακὴν πείσονται, οἱ δὲ σὺν σκείναις ὄντες  
βιβλίον  
εἰκάσεισιν αὐτῷ \* βούλεσθαι εἶναι. μηδὲν δι-

Aquatuor circiter equitum millia: de Sacis, decies mille sagittarij, & duo sagittariorum equitum millia: & Hyrcanij quantum poterant, peditum suorum numerum auxerunt, & equitum numerum expleuerunt ad duo millia. Nam domi antehac ab eis maior equitum pars reliqua erat, quod Cadusij & Sacæ hostes Asyriorum essent. At toto illo tempore, quo Cyrus hærebat heic, ut castelli res constitueret, multi Asyriorum, qui his locis erant vicini, equos adducebant, multi deferebant arma, quod iam finitimos omnines metuerent. Postea venit ad Cyrus Assyriam  
Gadatas  
agrum in  
uadat. Gadatas, & nuntios ad se venisse dicit, qui narrarent Assyrium, posteaquam de castello inaudiuisset, grauiter molesteque tulisse, seque ad incursum in Gadatae agrum parare. Quamobrem si me Cyre dimiseris, ait, saltem tueri munitiones enitar. quippe res ceteras minoris facio. Et Cyrus: Si ergo iam discesseris, inquit, quando futurus es domi? Nimirum die tertio mea in ditione coenabo, inquit Gadatas. An & Assyrium istic, ait Cyrus, offensurum te iam arbitraris? Sat scio, inquit Gadatas. Tanto magis enim festinabit, quanto tu abiisse longius videris. Verum ego, subiecit Cyrus, quo die cum copiis eo peruenire possim? Et Gadatas ad hæc: Magnæ iam tibi, mi domine, copiæ sunt; vixque poteris sex septemque diebus meum ad domicilium peruenire. Tu sane, ait Cyrus, quam celerrime te eo confer: ego pro viribus iter faciam. Discessit ergo Gadatas. Cyrus autem coactis omnibus sociorum principibus, qui Diam multi, ac præclari fortisque viri videbantur adesse, huiusmodi orationem in parat. eorum cœtu habuit: Perfecit nobis Gadas, socij, quæ nos omnes magni æstiman- da duximus, atque etiam prius, quam vlla a nobis beneficio esset affectus. At nunc Assyrus fines eius inuadere nuntiatur, qui nimirum eadem vult opera supplicium de illo sumere, a quo se magnum accepisse detrimentum putat: & fortassis etiam cogitat, si nihil ab ipso accidat illis malis, qui ad nos deficiunt, & ipsius socij ad internecionem a nobis deleantur; par esse creditu, breuiissimo tempore neminem ab ipso futurum. Præclarum ergo quiddam facere videbimus,

si alacribus animis opem Gadatæ tulerimus, homini bene de nobis promerentis: & iuste fecerimus, si gratiam referamus: atq; etiam, mea sententia, rebus nostris recte consuluerimus. Nam si videbimus in oculis omnium eniti, ut eos, qui nos laedunt, laedendo vincamus, & bene merentes beneficiis superemus: consentaneum est, multos amicitiae se nostræ libenter adiungituros, & neminem futurum, qui nos sibi hostes esse cupiat. Sin Gadatam negligere videamur, quo ore per Deos immortales aliis, persuaserimus, ut nobis gratificantur? qui nos mett audeamus laudare? qui possit aliquis nostrum Gadatam intueri, si tot ipsi numero, beneficiis ab uno superemur, & quidem hoc modo rebus ipsius comparatis? Hæc Cyrus dixit, eaque consenserunt omnes acriter esse facienda. Agite igitur, inquit, quando vobis hæc etiam placent, relinquamus singuli eos apud iumenta & vehicula, qui quam maxime sint ad inter cum his faciendum idonei: & Gobryas his præfectus sit, qui eos præcedat. Est enim peritus itinerū, & ad quævis alia idoneus. Nos autem cum equis & viris qui bùsque valentissimis, trium dierum comitatur instructi, pergamus. Quanto quidē leuius & vilius nos onerauerimus, tanto sequentibus hisce diebus proximis iucundius & pransuri, & cœnaturi, & dormituri sumus. Nunc vero iter hoc modo instituamus. Primum tu Chrysantaloricatos ducito, quando plana & lata via est; cohortiumque præfetti omnes in fronte tibi sunt, & cohors qualibet ita procedito, ut singuli singulis succedant. Quippe cateruatum & celerime & tutissime iter fecerimus. Loricatos ea de causa præire iubeo, quod exercitus ea pars maxime grauis sit. Gratissima vero si præcant, facilius omnia sequantur necesse est, quæ leuiora sunt. Quod si pars expeditissima noctu præeat, mirum non est, diuelli copias. Tunc enim id, quod prima est in acie, celerius aufugit.

*Cyrus ex exercitu qui bus modis expeditissimi rediderit.*

\* al. Artabatas: Post hos \* Artabazus Persas, qui cetrati sunt, & sagittarij, ducat: post eos Andramias Medus, peditatum Medicum: post eos peditatum Armeniorum, † Embas: post eos, Artuchas Hyrcanios: post eos, \* Thambradas peditatum e Sacis: post eos,

† Embas: post eos, Artuchas Hyrcanios: post eos, \* Thambradas peditatum e Sacis: post eos, \* al. Artabatas: Post hos \* Artabazus Persas, qui cetrati sunt, & sagittarij, ducat: post eos Andramias Medus, peditatum Medicum: post eos peditatum Armeniorum, † Embas: post eos, Artuchas Hyrcanios: post eos, \* Thambradas peditatum e Sacis: post eos,

A ei ταχθύμος Γαδάτη βοηθόσαριν, αἰδρί θεργάτη καὶ ἄμα δίκαια ποιοῦμεν αὐτὸν, χά- ειν ἀποδίδοντες. ἀλλὰ μήτε καὶ τὸ σύμφο- σιμονες εγράψαι, ὡς ἐγαδοκῶ, ταχθόμενον ἡμῖν αὐτοῖς. εἰ γέρη πᾶσι Φανοίμετα τὰς μὴ κα- κῶν ποιουμένας τυπῶν πειρώμενοι κακῶν ποι- οῦντες, τὰς δὲ θεργητούμενας αἰγαδοῖς ὑ- φρέαλορμοι, εἰκάσι τῷ ποιούμενον φί- λοις μὴ τὸν πολλοὺς βούλεατα γίγνεσθαι, ἔχθρον δὲ μηδένα ἀποθυμεῖν εἴτε. εἰ δὲ ἀμε- βλησταὶ δόξαιροι Γαδάτα, ταχθέντες τὸν θεάν ποιοις λέγοις ἄλλοις πειθοῦμεν αὐτὸν γέριζε- οδαί τοις ἡμῖν; πῶς δὲ αὐτὸν τολμημένον ἡμᾶς αἴτοις ἐπαγνέν; πῶς δὲ αὐτὸν αἰτησεντα τοῖς ἡ- μῖν διωάρτο Γαδάτα, εἰ πάθεμετα αὐτὸν δὲ ποιοῦντος, ποσὶδε ὄντες ἐνός αἰδρός, καὶ τύττας οὐταντα Φανειρμόνος; οἱ μὲν δὲν οὐταντα εἶπεν· οἱ δὲ πομπές σωστήνοντας ιχυράς ταῦ- τα ποιεῖν. ἀγέτε τοίνυν, ἔφη, ἐπεί τορ καὶ οὐ- μῖν σωδοκεῖ ταῦτα, ὅπερ μὴ τοῖς Ἀσσυ- Σνίοις καὶ τὸ ὄχιμασι καταλείπωμεν ἐκεῖστι χείμασι τοὺς μετὰ τούτων ἀποτιθεοτάτους πορφύ- οδας· Γαβρύας δὲ ἡμῖν δέχεται αὐτὸν, καὶ ἡγείστα αἴτοις. καὶ γέρη ὁδῶν ἔμπειρος, καὶ τολλαὶ ικανός. ἡμεῖς δὲ, ἔφη, σὺν ἴπωσις τοῖς διωτωτάτοις καὶ αἰδράσι πορφύρα- μεθα, τὰ ἀπτητήδεια τειλινήμεραν λαβόντες. οὐαὶ δέ αὐτούς τοις συκοβαλώμετα καὶ δύτελέτερον, ποσύπτω τὰ ἀπτητήδειας ἡμέ- ετες οὐδεὶς αὐτὸν δέχεται τε, καὶ δειπνόσ- μην, καὶ καθευδρόσαριν. οὐδὲ δέ, ἔφη, πορφύ- ραμεθα ὁδε. ταχθότον μὴν ἀγέτε σὺν Χρυσάν- τα τὰς θωρακοφόρους, (ἐπεὶ ὁμελή τε καὶ πλατφαὶ οὐδέδη) τὰς ταξιαρχούς ἔχων σὺ μετώπῳ πομπέας. οὐδὲ ταῖς ἐκάστη φέ- νεται. ἀρέσοι γέρη ὄντες, καὶ ταχισταὶ αἴσφαλέσαται αὐτὸν πορφύραμεθα. τούτου δὲ ἔ- νεκα, ἔφη, τὰς θωρακοφόρους κελύω οὐ- γείστα, ὅπι τύττο Βαρύτατον δέσι τῷ ερα- τύματος. τῷ δὲ Βαρύτατου ἡγεμόνου, πάτη τα- Ε ανάγκηραδίως ἐπεστατεῖ πομπέα ταχθέ- ται. οὐδὲ δέ ταχιστονήγητας σὺν κατέ, οὐ- πάτη πο- δραμίας οὐδέδης τὸ μήδων πεζικόν, οὐδὲ δέ τούτοις ταχθέταις Αντας δραμίας οὐδέδης τὸ μήδων πεζικόν, οὐδὲ δέ τούτοις ταχθέταις Αρτοχας οὐρανίους, οὐδὲ δέ τούτοις \* Θαμβερίδας τὸ σακῶν πεζικόν, οὐδὲ δέ τούτοις ταχθέταις Ταμάχος κατε-

A\* Damatas Cadusios. Atque omnes hi sic  
ducant, ut cohortium præfectos in fronte  
habeant, cetratos ad dextram, ad lœvam  
agminis sui sagittarios. Nam si hoc modo  
incedant, etiam paratiores quemlibet ad  
vsum fuerint. Post hos, inquit, calones  
cum impedimentis omnium sequantur,  
quorum præfecti dent operam, ut omnes  
cōuasent prius omnia, quam somnum ca-  
piant, ac mane cum impedimentis loco  
constituto assint, & ordine sequantur.  
Post impedimenta Persas equites\* Mada- AL. D<sup>o</sup>s  
tatas  
B tas Persa ducat, & centuriones equitum  
itidem in fronte habeat. Quilibet autem  
centurio cohortem ducat singillatim, per-  
inde atq; peditem etiam præfecti faciunt.  
Post hos Rambacas Medus equites itidem  
suos, & post eos tu Tigranes tuas equestres  
corias. Reliqui deinde magistri equitum  
ducant eos, cum quibus ad nos quisq; ve-  
nit. \*Secundum hos Sacæ ducunto. Cadu- Lectio  
marginis  
C sij quemadmodum vltimi venerunt, ita et-  
iam postremo sint in agmine: tuq; Alceuna  
ductor eorū studiose curam gerito in hoc  
quidem tempore omnium, qui vltimo  
sunt in agmine: neque permittito, ut quif-  
quam equites tuos sequatur. Date vero et-  
iam operam vos præfecti, & omnes, qui  
sapitis, ut cum silentio progrediamini.  
Quippe noctu magis auribus, quam oculis,  
singula tum percipi, tum agi oportet.  
Quia & maioris res est negotij, sed atque  
difficilior, si perturbatio noctu incidat,  
quam interdiu. Quapropter & silentium  
teneri diligenter, & ordines seruari neces-  
se est. Nocturnæ vero excubiæ, quoties  
noctu castra mouenda vobis erunt, sem-  
per quam breuissimæ constituendæ sint,  
& frequentes; ne cui vigiliæ in excubiis, si  
diuturniores sint, in itinere noceat. Quum  
autem proficisciendi tempus erit, cornu si-  
gnatum est dandum. Denique singuli a ne-  
cessariis rebus instructi, ad viam Babylo-  
nem versus ineūdam adelste. Quisquis ve-  
ro progrederetur,\* semper a tergo iter fa-  
cientem ad secundum hortetur. Secun- al. temp.  
ultimo  
ante se,  
proximum  
dum hæc ibant ad tabernacula, & inter eu-  
dum colloquebantur inter se, quātum me-  
moria valeret Cyrus, si quid cum aliquib.  
E esset constituendum, quo modo nomina- Cyrus  
moris.  
tim adpellatis suis præciperet. At Cyrus  
hoc studiose faciebat, cui per quam mirum  
videbatur, eos, qui opificia sordida profi-  
terentur, tenere singulos instrumentorum  
opificij sui adpellationes, sicut medicus  
& instrumentorum & medicamentorum  
omnium, quibus vtitur, nomina notiti-

*Cur impe- rator no- mina suo- rum tenere ei tamquam instrumentis necessario esset debat.* imperatorem vero tam stolidum esse , vt ducum sub se nomina ignoraret, quibus utendum, siue quid occupare, siue custodire, siue aliquibus animos addere, siue terrere cuperet. Quinetiam si quem honore adficere aliquando vellet, decori rationem postulare putabat, vt nominatim hunc compellaret. Præterea existimabat eos, qui principi se notos esse arbitrarentur, magis hoc expetere, vt præclarum aliquid gerentes conspicerentur, & a facinore turpi maiore studio abstinerent. Hoc quoque stolidum esse statuebat, imperatorem, quum aliquid geri vellet, ita præcipere, quemadmodū domini quidam domi suæ imperant: Eat aliquis ad aquam, ligna quis findat. Nam si hoc modo iubéat, mutuo se respicere putabat omnes, neminemque imperata facere, & omnes eadem culpateneri, neq; tamen quemquam vel pudore ob culpam adfici, vel sibi metuere, quod ea cum multis ipsi communis esset. Has ob cauñas quoties aliquid imperaret, omnes adpellabat nominatim. Atque hæc Cyri erat de his sententia. Milites vero tum cœnati, locatis excubii, & necessariis rebus omnibus conuasatis, quieti se dede- runt. Nocte media cornu signum est da- tum. Quumq; Cyrus Chrysantæ dixisset, illum in itinere mansurum. ante exerci- tum; ad paritoribus suis secum sumptis, e- grediebatur. Paulo post aderat Chrysantas & loriciatos ducebat. Itaque Cyrus datis ei ducibus itineris, pedetētim vt perge- ret, iussit; donec nuntius adesset. nec dum enim viam omnes ingressi erant. Ipse con- fiftens eodem in loco, quemlibet adueniē tem ordine progreendi iubebat; cunctantem vero, missis nuntiis, arcessebat. Quum o- mnes essent in itinere, misit equites ad Chrysantam, qui omnes in via iam esse nuntiarent; vtque propterea celerius du- cendo progrederetur. Ipse profectus equo ad partem anteriorem, tacitus ordines in- spectabat: & quos quidem composite & cum silentio videbat incedere, ad eos ad- equitans, qui nam essent, interrogabat; coque cognito, illos collaudabat: sin quosdam tumultuari animaduerteret, comperta rei causa, motum sedare ni- tebatur. Restat indicanda eius adhuc v- na cura diligentiaque nocturna, quod ante copias vniuersas pedites quosdam expeditos, eosque non multos præmisit,

Cyri no-  
ēturno in  
ātinere sin-  
gularis in-  
dustria.

εφορωμένους τὸν Χρυσάντα, καὶ ἐφορᾶν.  
Ταῖς αὐτὸν, ὡς ὑπαγυσοῦτες, καὶ εἴπως ἀλ-  
λως διώαρητο ἀμαθίαεαδά τι, σημεύοιεν τῷ  
Χρυσάντᾳ ὃ, πικρέσ δοκεῖν εἶ). Δέχων δὲ  
καὶ τὸ θητεῖταιν εἰς αὐτόν, οὐ καὶ τούτοις ἐκόπιδ.  
Οὐ, οὐτί καὶ διάξιον μὴ λέγειν ἐσῆμενε, δὲ μή, οὐκ  
τέτω; Τοῦτο διάξιον μὴ λέγειν. τὰ μὲν δὴ νύκτας οὔτες ἐπο-  
δητά τε τῶν εἰς ἄνθρωπον, ρέμοντο. ἐπειδὲ ημέρας ἐγένετο, τὸς μὲν τὸν  
καθδιοῖσιν ἵπτεας, ὅπι αὐτῷ καὶ οἱ πεζοὶ ἔχα-  
ζοι ἐπορθόντο, τοῦτο τάποις κατέλιπεν, ὡς Β-  
ρυτοῖς οὗτοι Φιλοί ἵπτεαν ήσον. τὸς δὲ ἄλλους  
εἰς διασχόντες παρελαύνειν σκέλελυσεν, ὅπι  
καὶ οἱ πολέμειοι σὺν τῷ πορφόρῳ ἥσαν. ὅπως  
τείπι που στάρτιον αὐτῷ τοσαντών, οὐδὲ αὐ-  
τοῖς αὐτοῖς ἀποτέλεσθαι τοῦτο τὸν ιδεῖν μάχειτο. εἴτε πι-  
πον φεύγειν ὁ φεύγειν, ὅπως δὲ ἐπομοτάτου διώ-  
χον τὸν ιδεῖν. ἥσαν δὲ αὐτῷ μέρει τελεγμένοι, [εἰ δέοι δι-  
πέξει, καὶ αγροδοτοῦσι τεδιώκειν δέοι, καὶ οὖς παρέσα-  
μαχοτο. τῷ μὲν διαφέρειν. πᾶσαν δὲ τὰ τάξιν τὸ λυθῆναι  
συστέποτε εἴτα. Κρέος μὲν δὴ οὔτες ἥσε δι-  
τράτθυμα· οὐ μόνοι αὐτοί γε μᾶλλον καὶ οὐδὲ  
ἐχεῖτο, δὲ μὲν ἄλλο τε ἄλλαχθι ποιειλαύνων  
ἐφεώρει τὸ καὶ ἐπεμελέστο εἰ τούς δέοιντο. οἱ  
μὲν δὴ αἱρεῖται Κρέον οὔτες, ἐπορθόντο. σὺν δὲ  
διωσασθαι τὸ Γαδάτα ἵπτειν τὸν τὸν τὸν αἱ-  
ραν, ἐπειδὲ ἐώρει αὐτούς ἀφειπηγέται σύντο τοῦ  
ἀσυρίου, σύρματον, εἴπι τούτοις πάθοι, αὐτοὺς αὐ-  
τοῖς αὐτοῖς τοῦτο τὸ Γαδάτα κατέβοι οὐδὲ τῷ Γα-  
δάτα· οὕτω δὲ πέμπτει πάντα τὸν ἕαυτὸν πι-  
γῶν ποτε τὸν ἀσυρίου, καὶ κελεύει τὸν ιόν-  
τα, εἰ καταλαχέσοι οὐδὲ τῷ Γαδάτα καρά δι-  
ἀσυρίου διτράτθυμα, λέγειν τῷ ἀσυρίῳ ὅπι,  
εἰ βιβλούτο σύνεδρευσατο, λαχεῖν αὐτὸν τῷ Γαδάτῳ  
καὶ τὸν οὐδὲ τὸν αὐτῷ. δηλουσῶν δὲ σύντελετο οὐ-  
σιν πεῖχε διώαριν τὸν Γαδάτα, καὶ ὅπι Κρ-  
έος οὐ συστέπειτο αὐτῷ· καὶ τὰ οδοί οὐ μέλ-  
λει ποτε σύνενεψαν οὐδὲ πλωσε. ποτε σύνεπειταί δὲ καὶ  
τοῖς αὐτῷ οἰκέταις, ὡς πιστύοιτο μᾶλλον, καὶ  
διτεῖχος ὁ ἐτύγχανεν αὐτὸς ἔχων σὺν τῷ Γα-  
δάτα καρά, τοῦδε δοιῶντα τῷ ἀσυρίῳ, καὶ τὰ  
σύρματα· οὐδὲ δὲ καὶ αὐτὸς ἐφῆ, εἰ μὲν διώαρι-  
το, διποκτεῖνας Γαδάτον, εἰ δὲ μή, ὡς σω-  
ταῖς ἀσυρίῳ ποτε πόνος οὐδέποτε. ἐπειδὲ δὲ ὁ οὐπί-  
ται τοις οἰκέταις ἐλαύνων ὡς διώατον τὸν τά-  
χιστα ἀφικεῖται ποτε τὸν ἀσυρίου, καὶ εἰδί-  
πλαστε, @ εἰον τὸν τάχιστα καταλαχέμεσαι, καὶ πολλών ἵπα-

Aqui & cōspicere int̄ntur a Chrysanta, & Chrysantam conspicerent: vt auribus captando, & alio quodam modo si persentisceret aliquid possent, Chrysantæ significarēt, quidquid offerre occasio videretur. Erat autem quidam, qui his præfectus imperabat, & eos instruebat. Ac si quid esset operæ pretium, significabat: sin autem, indicando minime molestus erat. Et nocte quidem hac iter hoc modo fecerunt. Quum vero illuxisset, quosdam Cadusiorum equites propterea, quod eorum pedites ultimi pergerent, apud eosdem reliquit; ne ab equitibus hi nudi progrederetur: reliquos in anteriorem partem præteruehi iussit, versus quam & hostes erant; vt si quid uspiam ei se opponeret, cum instructo robore occurrens dimicaret: sin alicubi cōspecti essent, qui fugerent, vt quam expeditissime persequeretur. Et erat apud eum semper instructi, si persequendum esset, qui persequi deberent; & quibus esset apud eum manendum. Nam vniuersos ordines dissolui nūquam patiebatur. Hoc modo Cyrus exercitum ducebatur. Neq; tamen ipse uno tantum loco vtebatur, sed alias alibi circumuectus inspectabat; ac si quo esset opus, id curabat. Sic ergo Cyri agmen pergebat. Quidam vero in equitatu Gadatæ vir potens, quod eum defecisse ab Assyrio videbat; arbitrabatur se, si quid illi accidisset, omnia quæ possideret Gadatas, ab Assyrio impetraturum. Itaque de suis hominem quendam fidum ad Assyrium mittit, & eunti mandat, vt si iam in agro Gadatæ Assyriorum copias offenderet, diceret Assyrio; posse ab eo & Gadatam, & qui essent cum illo, capi; si quidem insidias tendere vellet. Præterea significare iubet, quem copiarum numerum Gadatas duceret, quodque Cyrus cum eo nō veniret; indicata etiam via, qua esset accessurus. Dedit & familiæ suæ mandata, quo plus ei fidei haberetur, vt castellum, quod in agro Gadatæ possidebat, Assyrio cum vniuersis in eo rebus traderent. Se quidem venturum aiebat occiso Gadata, si posset: sin autem, yelle se tamen deinceps apud Assyrium esse. Is vero, cui datum hoc erat negotij, quum equitando quam fieri poterat celerrime ad Assyrium peruenisset, & cuius rei causa veniret, exposuisset: audita re, mox castellum Assyrius occupat, & numero cum equitatu, multis que curribus, in vicis illic frequentibus in-

M

*Gadatas  
dilates in  
insidias,  
peccat op-  
primitur.*

sidas locat. Gadatas, quum prope ab his  
vici abesset, exploratum quosdam præ-  
mittit. Aslyrius animaduerio, explorato-  
res aduenire, currus quosdam productos  
castris, duos tresque, cum paucis equitibus,  
fugere iubet; quasi qui & territi, & nume-  
ro pauci essent. Ea quum exploratores vi-  
derent, non ipsi solum persequebantur,  
sed etiam Gadate innuebant. Is deceptus,  
totis viribus insequitur. Assyrij quum Ga-  
datam capiā posse putarent, statim ex  
insidiis surgunt. His Gadatæ milites con-  
spectis, ut par erat, fugiunt: illi contra,  
quemadmodum fieri solet, insequeban-  
tur. Atque heic Gadatam is feriens, qui  
has ei struxerat insidias, aberrat ille qui-  
dem a vulnere letali: sed icto tamen hu-  
mero, vulnus homini infligit. Ea re patra-  
ta discedit, ut consequentibus se coniun-  
geret. Adgnitus autem, quis esset, alacriter  
vna cum Assyriis equo concitato, regem  
in persequendo iuuat. Atque heic iam illi  
Scilicet, quibus erant equi tardissimi, ab iis  
capiebantur, qui velocissimos habebant.  
Quumq; iam equites Gadatæ omnes val-  
de premerentur, quod itinere confecti es-  
sent; Cyrum cum exercitu aduenientem  
conspiciunt. Tum vero credi pat est eos  
tamquam in portum ex tempestate liben-  
ter & cum voluptate ad pulisse. Cyro pri-  
mum res admirationi esse. verum ubi quid  
ageretur, animaduertit: quam quidem diu  
illi aduersi contra se ferabantur, & ipse co-  
pias instructas in eos ducebant. Quum au-  
tem hostes eo, quod erat, cognito in fu-  
gam versi sunt: ibi tum Cyrus illos, quibus  
hoc negotij dederat, persequi iussit, & ipse  
cum ceteris subsequebatur, prout expedi-  
re putabat. Itaque tunc & currus aliqui ca-  
pti sunt, de quorum nonnullis aurigæ dela-  
bebantur, partim dum conuerterentur, par-  
tim aliis modis; aliqui etiā in potestate ab  
equitibus intercepti venerunt. Interficiūt  
etiam quū alios multos, tum illum ipsum,  
qui Gadatam vulnerarat. Pedites autem  
Assyrij, qui forte tunc Gadatæ castellum  
oppugnabat, partim in illam munitionem  
se fuga recipiunt, quæ a Gadata defecerat;  
partim aduentu hostium anteuerso in ma-  
gnam quamdam Assyrij regis urbem se  
conferunt, in quam & ipse cum curribus  
& equis aufugerat. His rebus confectis,  
Cyrus in regionem Gadatæ recedit; datis-  
que mandatis ad eos, quorum intererat, ut  
captiuorum curā gererent, recta pergit, ut

Gadatæ  
proditor  
interfici-  
tur.

τὸν Γαδάτην, ὅπως ἔχει ἐκ τῆς βαύματος. Α  
πορθυομένως δὲ αὐτῷ ἥδη ὁ Γαδάτης ἀπ-  
δεμερήσος δέ βαῦμα πάπιλητα. ιδὼν δὲ ὁ Κρ-  
εστόντον ἀπητὲ καὶ εἶπεν· ἐγώ τεστος σὲ πία  
ἐπισκεψόμενος πῶς ἔχεις. ἐγὼ δὲ, εἶπεν ὁ Γα-  
δάτης, ναὶ μὲν τὸς θεοῖς σὲ ἐπιμαθεασόμενος  
πία, ὃ ποῖος τις ποτὲ φάγη ιδεῖν, ὁ Σιαύτης θυ-  
χεῖ ἔχειν, ὃς τις οὐτὸς οἰδεις ἐγώ δέ, πιαῖ μοι δε-  
όμενος, οὔτε μηδὲ παροχόμενος γέ μοι ταῦ-  
τα τερψάδειν, οὔτε μηδὲ διὰ πεποιθὼς τοῦ  
ἔμοις (εἴς γε δέ ίδειν) οὐδὲ θησαῦ, διλλός τοι τὸς Β  
φίλων σοι ἔδοξά τι ὄντοσα, οὔτες ἔμοι τερψ-  
θύμος ἐβοήθησες, ωστι μὲν δέ μὴ ἐπ' ἔμοι οἴ-  
δυμεναι, δέ μὲντος σοι σέσωσμαι. οὐ μὲν τὸς θεῶν,  
οὐ Κύρε, εἰ μὲν οἷος ἔφη Ἐπαρχῆς, καὶ ἐπαγ-  
δοποιοτάμεν, οὐδὲν οἶδα εἰ σκληπάμεν πᾶ-  
δα ποτ' αὐτὸν τερψέει ἔμε. ἐπεὶ ἀλλοις τέ  
οἶδα πᾶδας, καὶ τὴν τὸν μηδὲν αἰσυείων βα-  
σιλέα, πολὺ πλείω ἥδη τὸν αὐτὸν πατέρα  
δινάσατα, οὐδὲν μηδέπατελλαν. καὶ ὁ Κρ-  
εστός τερψτα εἶπεν ὡδέως Γαδάτη, οὐ πο-  
λὺ μεῖζον τερψτας θαυμα, ἔμε νινθαυμά-  
ζεις. καὶ τί δὴ τὴν ἔδειν; ἐφη ὁ Γαδάτης. ὅτι  
Βοοῦτοι μὴν τερψτον, ἐφη, ἐπιστούμασαν τερψ-  
σε, Βοοῦτοι δὲ μήδων, Βοοῦτοι δὲ υρχεμίων  
πολύτες δὲ οἱ παρθίνες Δρυμοίων καὶ σπαχῶν  
καὶ καδμείσιων. καὶ ὁ Γαδάτης ἐπιβέβατο, διλλός  
ἐφη, καὶ Βοοῦτοις πολλὰ αὐταῖς δοῖεν οἱ  
θεοί, καὶ πλήσα ταῦτα τῷ τοις θεοῖς Βοοῦ-  
τοις εἴ). Γεγὰ \* ὅπως μὴν τοι οἵς ἐπαγνέοις Βο-

Gadatam viseret, & quo pacto se is ex vul-  
nere haberet, cognosceret. Illi pergenti  
Gadatas obligato iam vulnerc occurrit.  
Quem Cyrus vt vidit, laetus ait: Ad te ibam  
visurus, qui valeres. Ego vero, inquit Ga-  
datas, iterum te profecto spectatum veni,  
vt videam, quæ vultus tui species sit, tali a-  
nimo prædicti viri; qui sane, quum ipse ne-  
sciam, quia nunc in re mei indigeas, nec fa-  
cturum hæc te receperis, nec affectus ullo  
a me vel tætillo sis beneficio priuatim, sed  
ideo duntaxat, quod tibi visus sum aliquid  
amicis utilitatis adferre, vsque adeo alacri-  
ter opem tulisti, vt iam me quod adtinet,  
perierim; quod te, saluus sum. Deos testor,  
mi Cyre, etiam si talis essem, qualis initio  
natus sum, liberosque procreassem; haud  
scio, an filium sic erga me affectum habi-  
turus fuerim. Nam & alios aliorum filios  
noui, & hunc ipsum Assyriorū modo regē,  
multo plus doloris & molestiæ patri suo  
creasse, quā tibi iam creare possit. Ad quæ  
Cyrus respondit: Mi Gadatas, multo maio-  
ri certe miraculo prætermisso, iam me ad-  
miraris. Et quidnam illud est: ait Gadatas

**C**liratis. Et quidnam mid est: ait Gadatas.  
Quod, inquit, tot Persæ tibi nauarunt ope-  
ram; tot Medi, tot Hyrcanij, atque adeo  
quotquot adiunt Armenij, Sacæ, Cadusij.  
Et Gadatas adiecto voto: Verum his, ait, o  
Iupiter, multa Dij bona largiantur, & illi  
plurima, qui auctor est, vt & hi tales sint.  
Vt tamē eos, quos tu prædicas Cyre, egre-  
gie hospitio excipiamus: accipe hæc mu-  
nera, qualia quidem dari a me possunt. Si-  
mulq; permulta adduxit, vt & rem sacram  
facere, qui vellet, posset; & vniuersus exer-  
citus hospitio exciperetur pro rerum illa-  
rum dignitate, quæ res & præclare gestæ  
erant, & præclare successerant. Cadusius  
autem, extremi cultos agminis, quia per-  
sequendi non fuerat particeps, ac vellet et  
iam ipse facinus illustre quoddam edere:  
neq; communicata re cum Cyro, neq; ad  
eum delata, in regionem versus Babylonē  
sitam excurrit. Dispersis vero ipsis equi-  
tibus, rex Assyrius ab vrbe sua, quo confu-  
gerat, superueniens; cum instructis egregie  
copiis occurrit. Quumque solos esse hos  
Cadusios perceperet, impetum in eos fa-  
**D**icit, & tum Cadusiorum principem inter-  
ficit, tum multos alios. Quin & complu-  
**E**res Cadusiorum equos capit, quamque  
Cadusius  
excurrens  
temere, o-  
ciditur.

ξενίων· τοις, ω Κύρε, καὶ τέξενίσωμον καλάς, δέ γεν ται  
μεν οἱ δῆλοι ξένια, οἷα ἔχει μάναμα. ἀμα δὲ ταξιδῆται  
πάλι ξε- πάμπολλα, ως τε καὶ Σύρι τον Βουλέμνον, καὶ  
νια. Τ. ξενίζεσθαι πολὺ θεράπυμα αἴσιωστῷ κα-  
ξενίων-  
μεν οἱ δῆλοι λαΐς πεποιηθίσαν καὶ καλάς συμβάτων. οὐ δέ  
λας, οὐδὲ καθδύσιος ὡπιαθοφυλάκει, καὶ οὐ μετέρε  
ξενίσωμα τῆς διώξεως· Βουλέμνος δὲ καὶ αὐτὸς λαμ-  
πρόγντι τοιμῆσμα, οὐτε δινάκηνικωσάμνος οὐτε  
εἰπὼν οὐδὲν ταῖς Κύρω, κατέθή την ταχές  
Βιβευλαναγέσεν. διεσπαρρήσας δὲ τοῖς ἵστ-  
απών ποιεις αὐτὸς τὴν πειράν οἱ μάστιχος ἐκ τῆς έαυ- E  
τῆς πόλεως, οὗ Γαῖα \*κατέφυγε, σωτυγχά-  
νει μάστιχα διη \*σωτεραγμένον ἔχον θέαυ-  
μόντος οὐ τῆς τράπουμα. ως δὲ ἔγνω μόνος εἴ τὰς  
καθδύσιος, οὐπιτίτεται, καὶ τὸν τε περιεργατὴν  
τὸν πολλοὺς λαμβάνει τῷ καθδύσιον,

*Gadatāo  
Cyro grā  
sias ugik*

*Cadusius*  
- excurrens  
temere, oc-  
ciditur.

Atq; hoc modo Aslyrius Cadusios eo vi-  
que persequutus, quo tutum esse putabat,  
reuerit. Cadulij vero primi ad castra cir-  
ca vesperam salui peruenierunt. Cyrtis, vbi  
rem sic, vt gesta fuerat, cognouit: & ob-  
uiam Cadulii prodiit, & quem vulnera-  
tum videret, eum recipiens, ad Gadatam  
mittebat, vt curaretur. Ceteros in eadem  
tabernacula distribuebat, studioseq; cum  
aliis & ipse dabat operam, vt eis necessaria  
suppeterent, adsumtis in partem curatio-  
nis huius nonnullis de Persarum æquali-  
bus. nam in huiusmodi rebus viri boni li-  
benter operas suas coniungunt. Adeo ve-  
ro molestū hoc sibi accidisse declarabat,  
vt quum iam cœnarent alij, nimirum op-  
portuno cœnæ tempore, Cyrus cum adpa-  
ritoribus ac medicis nemine sua quidem  
spōte neglectum relinqueret: sed vel ipse  
met inspectoris munere fungeretur, vel i-  
pse si hoc perficere non posset, palam mit-  
teret, qui curam eorum gererent. Actum  
quidem ita se quieti dederunt. Vbi primū  
autem illuxisset, significari præconium o-  
pera iussit, vt reliquorū quidem princi-  
pes, Cadulij vero vniuersi conuenient, &  
huiusmodi quædam in medium adtulit:  
Humanum est, quod nobis accidit socij.  
Nam eos, qui homines sint, errare, mirum  
videri, mea quidem sententia, non debet.  
Merito autem ex eo, quod contigit, boni  
alicuius fructus ad nos redit: nimirum vt  
discamus, imbecilliores copias, quam ho-  
stium copiæ sint, ab exercitu toto numquā  
auellendas esse. Neque hoc a medicitur,  
ait, nō debere aliquem etiam minori cum  
agmine illuc proficiisci, quo sit opus, quam  
illud fuerit, cuim quo Cadusius modo exi-  
it: sed si quis re cum illo communicata e-  
grediatur, qui satis virium ad opem feren-  
dam habeat, fieri quidem posse, vt decipia-  
tur; at illud etiam posse fieri, vt per eos, qui  
remanent, hostes deceptos auerrat abiis,  
qui sunt egressi. Quin & alia negotia quis  
hosti facessere potest, eoq; modo atque  
in tuto collocare. Atq; ita fiet, vt ne quidē  
is, qui discesserit, absit; sed ab exercitus ro-  
bore pēdeat. Qui vero discedit, neq; com-  
municat prius, quo iturus sit: illi nihil ad-  
modū diuersi accidit ab eo, si solus aliquis  
expeditionē suscipere velit. Sedenim hu-  
ius facinoris causa, volēte Deo, non longo  
tamdem ex interuallo in hostē vindicabi-  
mus: sed vbi primum prāsi fueritis, eo vos  
equidem ducam, vbi res est gesta, simulq;  
volet, ostendemus; illic alias longe ipsis esse

A καὶ οὐδὲ δούλειος μίσχας ἀγέιται θάσφαλες  
ἄντο τοῦ, ἀπεβάπτετο οἱ τοῦ καδούσιοι ἐσώζοντο  
καὶ τὸ δραπόπεδον αὐτῷ δείλεωι τοῦ περῆποι.  
Καρος ὃς ἡθετο διηγενός, τοῖς οὐτα τε  
τοῖς καδούσιοις, καὶ ὃν πιναῖδοι τε βωμόν, αἴσ-  
λαχεισαίν, τοῖς μὴ ὡς Γαδάτην τάπει  
πεμπει ὅπας θεαπόλιστο, τὸς δὲ ἄλλους  
οὐκιατεοικέ, καὶ ὅπας τὰ σπιτίδα ἔψειν  
οἰωνεπελέσθο, τοῦτο λαχεισαίν τὸ Νόμοτί-  
νον φροντοσεωπιμελητές (συγδιποιοι τοῖς Βιώ-  
Β τοῖς οἰ αἴσαδοι σεωπιποιοῖς ἔτελεσι) καὶ αἰώ-  
μνος μὴ τοι Γαῖτος \*ιοχυρῶς δῆλος οὐδὲ ὡς καὶ  
τὸ δῆνον διπνιώτεν, πικρὴν ἀρέα οὐ, Κε-  
ρες ἐπισκοποῖς τοῖς υπηρέταις καὶ τοῖς ιατροῖς, οὐδέ-  
να ἑκάναν απημέλητον παρέλιπεν, δὲλλον διπό-  
την ἐφεώρει, οὐδὲ μὴ αἴτος Ηὔαιτοι, πέμπων  
φαρερὸς οὐτοῖς τὸ θεαπόλιστον. καὶ τότε μὴ πεποι-  
ήτως ἐκειμένοισαν. ἀμα ὃ τῇ ήμέρᾳ κηρύξας συντας.  
οἰωνείαν τὸ μὴ δῆνον τοῖς αἴρησι, τὸς δὲ κα-  
ποτεσίς πομπαῖς, ἐλεξειτοιάδε. Αἰδρες σύρμα-  
τοι, αἰθρώπινοι μὴ \*διηδυνομόνοι παθος\*.  
Συγδιπότρυνται θρώπυτος οὐτοῖς, δέδει, οἶμα,  
δαυμασόν. αἴσιοι γε μὴ τοι εἰσμὲν θεαμη-  
νότους παράγματες ἀπολαμβάνει παγαδὸν,  
θμετήμηποιει θαταῖς θποτούλης διωά-  
μινασθενερατο τὸ Νόμοπολεμίων διωάμεως.  
Ταῦτα τοῖς ἐφη, λέγω, οὐδὲ δεῖ ποτε καὶ ἐλέστη,  
σοι τὴν μοειάντει αὐτὸν αὐτὸν δέη, οὐκανδού-  
σιος ὠχετο. δὲλλον δὲ τὸ θεαπόλιστον διωά-  
πτα ικενῷ Βοηθοῖσα, εἰτε μὴ ἀπατηθεῖα, εἰτε νος  
D ὃ ταῦτα θωμάνοι ποτε πατήσαντι τὸς πολε-  
μίοις, ἀλλοσε βέβαμε πότο τὸ θεαπόλιστον  
ἔστι δὲλλα παρέργητα παράγματα τοῖς πολε-  
μίοις, τοῖς φίλοις ασφάλισαν παρέχειν. καὶ διτα  
μὴ δῆνον ὁ χωρὶς ὥνταπέσαι, δὲλλον θεαπόλιστον  
τοιχός ὃ δὲ απελθῶν, μὴ αἰαχειτασάμνος  
ὅπου αὐτῷ, δέδει ποτε φοεγν πάσῃ δὲλλον εἰ μόνος  
ἐγράιθετο. δὲλλον αὐτὸν τοῦ ποτε, ἐφη, οὐ θεος  
θέλη, αμειωθῆτα τὸς πολεμίοις οὐκ εἰς μα-  
κράν. δὲλλον ἐπιθάδην τάχιστα δειπνήσει, αἴσιο  
Ε μᾶς ἐγὼ ἔνθα διπράγματα ἐθέρετο, καὶ ἀμα μὴ  
διατομὴ τὸς τελευτήσαντος, ἀμα δὲλλον  
μὴ τοῖς πολεμίοις, ἔνθα κρατῆσαι νομίζουν,  
αἴσιοδὲ δὲλλος αὐτῶν κρείπτους, οὐ θεος θέλη  
mortuos sepeliemus, simul hostibus, si Deus  
se potiores, ubi se superiores euafisse censem:

καὶ ὅπως γε μηδὲ ὁ χρείον οὐδέως ὄφεσιν, ἔν. Α atq; etiam efficiemus, vt ne locum quidem illum lubenter intueantur, quo loco socios nostros interemerunt. Sin aduersi nō pro-  
 δierint, incendemus eorum vicos, agrum-  
 que populabimur, ne læticiam de conspe-  
 ctu eorum, quæ in nos patrarunt, capiant; sed intuendo mala propria, dolorem sen-  
 tiant. Itaque vos, inquit, alij pransum ite: vos autem Cadusij primum hinc digressi, more vestro aliquem deligite, qui cum im-  
 perio vobis præsit, & cum Diis ac nobis curam vestigerat, vbi cumque opus fue-  
 rit. Hunc vbi delegeritis, ac pransi fueritis, delectum ad me mittite. Atque hæc illi fe-  
 cerunt. Cyrus autem eductis copiis, post-  
 quam illi, quem Cadusij legerant, suum in  
 acie locum tribuisset; iussit, vt propter se  
 suorum aciem duceret, quo Cadusiorum,  
 inquit, animos iterum excitemus, si qui-  
 dem poterimus. Hoc modo profecti, quū ad locum peruenissent; & Cadusios sepe-  
 liebant, & agrum populabantur. Quod vbi Cyrus ca-  
 factum ab eis esset, commeatum ex hosti-  
 co secum ferentes, in regionem Gadata re-  
 uersi sunt. Quum autem ad animum Cyro  
 accidisset, futurum, vt qui ad se defecerāt,  
 quod a Babylone nō procul remoti essem-  
 per adfligerentur, nisi præsens ipse sem-  
 per adesset: non solum eos, quotquot ex  
 hostibus dimittebat, Assyrio dicere iussit,  
 sed missò etiam caduceatore denuntiauit;  
 se paratum, vt agricolis parceret, nullaque hos adficeret iniuria, siquidem & ipse illo-  
 gricoli-  
 rū, qui ad se defecissent, agricolis permis-  
 surus esset, suas vt operas facerent. Ac tu  
 quidem, ait, etiam si prohibere possis, non  
 nisi paucos prohibebis; quod eorum, qui  
 Dad me defecerunt, exiguus sit ager; ego ve-  
 ro permittere, amplam tibi ditionem cul-  
 tam esse. Iam eo tempore, quo fructus col-  
 ligēdi sunt, si quidem bellum fuerit, is qui  
 potentior est, hos mea sententia colliget: si  
 pacē iniuierimus, tu scilicet id facies. Quod  
 si quis vel meorum aduersus te arma sum-  
 serit, vel tuorum aduersus me: in hos, in-  
 quit, pro virili vterq; vindicabimus. Cum  
 his mandatis caduceatorem ablegauit. As-  
 syrij vero, quū hæc audiissent, omnia mo-  
 uebant ad persuadendum regem, vt hæc  
 admitteret, ac quam minimum belli rechi-  
 quum faceret. Assyrius vero, siue genti  
 suæ obsequutus, siue quod idem & ipse  
 vellet, hæc comprobauit. Itaque pactis ini-  
 tis cōuenit, vt cum agricolis pax esset, cum  
 armatis bellum. Hæc igitur de agricolis  
 τοῖς μὴ ἐργάζομέν τοῖς εἰρήνην ἔχοντος, τοῖς δὲ ὀπλοφόροις πόλεμον. Ταῦτα μὴ δὲ τὸν ἐργά-

Cyrus perfecit, iunctis partibus suis si vellent in ditione sua collocare iussit: hostium vero ditionem populari undecimque possent, ut militia sociis iucundior esset. Nam tametsi comeatus nullus pararetur, tamen eadem pericula proposita erant: at ipsam militiam leuiorem efficere videbatur, quod ex hostium regione annonas haberent. Quum autem Cyrus se iam ad discessum pararet, aderat Gadatas, & quum alia dona multa variaque secum adferebat & adducebat, velut ex ampla copiosaque domo; tum permultos equos, suis equitibus ademtos, quibus iam proprie illas infidias fidem non habebat. Vbi propius accessisset, ita loquutus est: Hæc ego iam adduco tibi, mi Cyre, quibus in hoc tempore velim utaris, si quidem horum aliquo tibi sit opus. Existimare vero debes, etiam alia, quæ meas sunt, esse tua. Quippe nemo est, nec umquam erit, cui ex me nato domum meam sim relicturus: sed necesse est, inquit, memoriente, me cum & genus nostrum, & nomen extingui. Atque hæc perperissum; mi Cyre, (Deos iuratus testor, qui & vident & audiunt omnia) quum tamen nihil iniustum, nihil turpe, neque dixerim, neque fecerim. Simulque hæc dicens, fortunam suam cum lacrimis deploravit, neque loqui plura potuit. Quibus auditis Cyrus, commiseratus hominis calamitatem, dixit: Evidem equos accipio. Non utile tibi hoc erit, quod eos daturus sum hominibus maiori te studio prosequentibus, quam quorum modo erant, ut quidem adparet: & Persicum equitatum, cuius desiderio iam dudum incensus sum, celeriter explebo ad decein equum millia. Reliquas illas pecunias & opes tecum auctoritas seruato, donec datum habere me videris, ut remunerando te non sim inferior. Quod si ita abeas, ut plura mihis, quam a me acceperis: nescio profecto, quo pacto facere possim, ut pudore non adficiar. Ad ea Gadatas: Evidem hæc tibi credo, ait nam ingenium tuum video. Verum consideres, an satis ad hæc conseruanda sim idoneus. Etenim quam diu inter nos & Assyriū amicitia constabat, paterna ditione pulcherrima videbatur esse. Quippe quum ab urbe maxima Babylonia prope absit, quicumque fructus ex urbe ampla capi potest, eum nos capiebamus: quidquid autem molestum esse poterat, ab eis nos domum profecti longe aberamus. Nunc quum hostes simus, planum est, ubi tu discesseris, futurum, ut & nobis, & toti domui nostræ infidiae struantur: adeoque

Cyrus e-  
quitatum  
Perficum  
mirifice  
est.

σόδια, οὐλως τοῖς ἐπράσκη πλοῖον ἔχοντες, οὐ  
χρείζεται προμάντειον ὁράνες. ταῦχον τοῖς εἰποῖς  
αἱ, ταῦτα δὴ ταῦτα γένεσιν, τοῖν διποτῆναι  
ὅτι, ὡς Κύρε, οὐ ψυχή μή, οὐδὲ δύνειται καὶ ὄργη  
ζεῖται, οὐδὲ αὐτοῖς σκοπόν τα διῆμον, διλ  
αῖται τούτους, οὐδὲ ποτὲ ἔσται διποτοῖς τοῖν  
τοῖς θεοῖς ἐπρόσκη αἴθρωποις, οὐδὲ γένεσιν μισῶν  
οὐκτιών τι αὐτὸν αἰδική, διλλαῖται πατέσσον  
πλεον βλέποντα ἔμαχον. τοιγάρων, οἵμεν, αὐτοῖς  
πονηροῖς φέν, πᾶσι πονηροτέροις ἔμαχον μι-  
μάχοις χείσεται) οὐδέ τις ἀρχαὶ βλέποντας αὐτοὺς  
φαῖται, θαρρεῖ, ἐφη, ὡς Κύρε, οὐδέποτε δεῖσθαι ταῦ  
αγαθῶν αἰσθηταί μάχεσθαι, διλλαῖται εὐεσθος αρχέσθαι τοῖς  
μηχανισμοῖς, τέως αὐτὸν τοῦτον βελτίωνα  
\* τοῦτον τοις ἐμὲ αἰσθάν, καὶ σὺ τοῖς πονηροῖς πα-  
δίως, οἵμεν, κρείτινον ἔσται. αἰκάσταν τῷ Κύρῳ  
ταῦτα ἐδόξει αἴσια διπομελείας λέγεσθαι δύτης  
εἶπε, οὐδὲν, ἐφη, ὡς Γαδάτη, οὐχὶ τοὺς μὲν τείχη  
φυλακῆς ἔχειται ἐποίησας, οπως αὖτοι εἰναι  
σφραγίδες χειροῖς, οπότεν εἰς αὐτοῖς αὐτοὶ δέ  
στριψον τραβελητή, οὐαὶ οὐδὲ τοῖς θεοῖς αἰσθητοῖς σὺν  
ημῖν ὄντοι, τούτοις τοῖς φοβεροῖς, διλλαῖται τοῦτον;  
οὐ ποτὲ οὐδὲν σοι ὅρατό τον, οὐδὲ τοις σὺν αὐτοῖς  
ἔχων, σὺνέμοι πορθμός. καὶ σύτονταί είμοι, οὐ γε  
μοιδοκέα; πάθει χειροτομος εἴης, ἐγὼ τέ σοι ως  
εἴαδιναρεψ περισσομεν. αἰκύνθας ταῦτα ὁ  
Γαδάτης αἰέπινθε τεκνά εἰπεν ἀρρεῖν, ἐφη,  
διωαίρειν αὐτούς τούς τοις πεντασάμηνος φτάσον, τοῖν  
οι διείσειν, βλέποντα γέρασθαι, ἐφη, καὶ τούτην τοι  
αἴχνυμεν ἐμπλεῖται. ταῦτα δέ, ἐφη, φτάσεις  
μηδε τοι. ἐγὼ γένδι διπομελονταί αἰκάλωσον φῆς  
ἐχειν. διποτεῖται οὐδὲ Γαδάτης ἀπελθεῖται, ἐφύλαξε  
μηδε τείχη τοῦ Κύρου αὐτούς τούς τοις πεντασάμηνος  
οικεῖσθαι τοῦ πορθμοῦ, οπόσοις αὖτοις μέρες  
καταλαβοῦσιν πορθμόν. οὐτε τοῦτο γένεται τοῖς τοις  
οἰσθετοῖς, οὐδὲν ποτέ πολλάς, αἰσθητοῖς τοῖς  
μηδε τοι. αἰτοντος οὐγεναῖται καὶ τοῦτο γένεται  
δελφοῖς, οὐδὲν μηδοτεῖται τοῖς κατέχοις αὐτούς.  
καὶ τοῦτο μηδε Γαδάτης οὐδὲ τοῖς πεντασάμηνος  
τοῦτο γένεται, καὶ οὐδὲν φρεστεῖται, καὶ οὐδὲ ποτε, καὶ οὐ  
λοῦ, καὶ οὐτοῦ, ως αἰτεῖται τοῖς αὐτονοματοῖς  
\* εργατικοῖς. ἐπειδὴ πορθμόν μηδενὶ καθεδείται  
τοῦ τοῦ Βασιλευούσιον πόλιν, καὶ ἐδόξει αὐ-  
ταῖς οὐδεσσι, οὐδὲν, παρὰ διποτεῖται τοῖς φέρεται,

Astra, qui & omniq[ue] vicinos habituri simus  
hostes, & eosdem nobis etiam potentiores  
conspicuntur. Fortasse dixeris, cur ista  
non cogitarim prius, quam desicerem?  
Quia, mi Cyrc, animus meus propter accep-  
tam iniuriam, & propter iram, non  
quod esset tutissimum considerabat, sed  
huiusmodi quiddam perpetuo parturie-  
bat: Ecquando licebit ylcisci hunc & Diis,  
& hominibus inuisum, qui non desinit o-  
disse, non si quis eum laedat; sed si quem se  
præstantiorem suspicetur? Itaque quym i-  
gnauis ipse sit, omnes etiam mea sententia  
sedeteriores socios habebit. Quod si quis  
inter hos eo præstantior esse visus fuerit  
certus esto, mi Cyre, nequaquam tibi adi-  
uersus eiusmodi virum egregium dimi-  
candum esse; sed ipsius Assyrij machinati-  
ones sufficient, ut illum præstantiorem se-  
perimat. Verum vt mihi molestus sit, in eo,  
quamvis ignavis & improbis hisce sociis  
vratatur, facile superior est, vt opinor, futu-  
rus. Hæc quum Cyrus audiisset, visus est ei  
digna consideratione dicere. Itaque statim:  
Quid ais, inquit, mi Gadata, nonne  
castella præsidiis muniisti, quibus esse tu-  
tus possis, quum ea fuitis ingressus? Ipse  
vero nonne nobiscum es in expeditione,  
vt si Dij perinde nobiscum fuerint, ac mo-  
do, hic te metuat, non tu ipsum? Quintu[m]  
inecum proficiscitor, & quidquid tuorum  
adspicu[t] tibi iucundum est, aut cuius con-  
suetudine delectaris, id tecum habeto. Ni-  
mirum & tu mihi, vt arbitror, admodum  
visui fueris, & esse tibi ego conabbr, vt po-  
refo? Quæ Gadatas quum audiisset, respi-  
rauit ac dixit: Num possum res meas citius  
colligere, quātu[m] discedas? Nā & matrem  
mecum abducere volo. Possis, inquit, pro-  
fecto citius. Etenim subsistam, donec tibi  
commodum esse dixeris. Itaque digressus  
inde Gadatas castellis, quæ communie-  
rat, vnamcum Cyro præsidia impoluit, & o-  
mnia, quibus ampla domus instrui com-  
mode posset, collegit. Præterea suorum  
plerosque secum abducebat, tum fidos,  
quibus delectabatur, tum quibus diffiden-  
bat; quorum alios cogebat secum uxores  
ducere; alios sorores, vt his quasi vincul-  
atis eos constrictos teneret. Itaque Cyrus  
cum Gadata, & quos ille secum haberet,  
abibat; qui & index ei viarum esset, & a-  
quarum, & pabuli, & frumenti; quo castra  
semper ubertimis in locis haberet. Quum  
vero pefgens in itinere Babyloniorum  
at, ducere propter urbis ipsa mœnia videretur;

Cyrus B.  
bylonensis  
adit iterū

arcessito Gobrya Gadataque, aliane via es-  
set, interrogabat; ut tam prope ad mœnia  
non accederent. Et Gobryas: Sunt, inquit,  
mi domine, permulta quidem viæ: sed ex-  
istimabam equidem, te quā proxime iam  
ad urbem ducere velle, quo ipsis cōmon-  
strares, exercitum tibi nunc & numero  
sumesse, & præclarum. Nam quū is etiam  
minor esset, ad murum ipsum accessisti, &  
nos illi haud multos numero spectabant.  
Nunc tametsi paratus sit Assyrius, quem-  
admodum aiebat, adparatum ab se fieri ad  
pugnam: scio futurum, ut si copias tuas cō-  
spexerit, imparata ipsi sua videantur. Ad  
hæc Cyrus ait: Videris mihi, mi Gobrya,  
mitati; quod id temporis, quo multo cum  
minori exercitu veni, ad ipsa usque mœ-  
nia duxerim: nunc maioribus copiis in-  
structus, ducere sub muros nolim. Verum  
id tibi mirum ne sit, ait. Non enim idem  
est adducere, & præterducere. Omnes e-  
nī sic instructas copias adducunt, vt si  
quam optime pugnatores arbitrantur: at  
qui sapiunt, sic abducunt, ut quam tutissi-  
me, non quam celerrime abscedant. In  
prætereundo autem, exporrigi plastra ne-  
cessē est, & impedimenta quoque cetera  
multum laxari: atque hæc omnia tegi ar-  
matis, nec uspiam impedimenta hostibus  
ab armis nuda conspici. Sic vero proce-  
dētibus copiis, necessē est aptos pugnæ  
milites iuxta debiles & imbecillos colloca-  
ri. Si ergo velint ex munitione conferti  
hostes in aliquos prætereuntes imperium  
facere, ubicumque tandem manus con-  
seruent, multo validiores erunt in conflictu,  
quā qui prætereunt. Præterea quum longū  
agmen trahitur, etiam subsidia ferri nō ni-  
fi longo ex interuallo possunt: qui vero ex-  
tra munitionem erumpunt, breui spatio ad  
illos, qui prope absunt, & excurrere pos-  
sunt, & rursus abscedere. Quod si non mi-  
nor ex interuallo præteribimus, quam ex  
quo nos conspecturi sunt, & vt nunc  
extensis ordinibus procedimus: multi-  
tudinem illi nostram conspiciunt, & o-  
mnis multitudine propter armatos adtextos  
formidabilis adparet. Quod si nobis hoc  
modo incidentibus, tacite nos inuident:  
quia multo eos ante prospicimus, imparati  
minime deprehendemur. Quin potius ne  
quidem nos adgredientur, quum ipsis pro-  
cul a muro erit recedendum; nisi se cum  
vniuersis copiis suis futuros toto exercitu  
autēs, sūt aī aī πολεῖσθαι οὐκ εἰπεῖσθαι. μᾶλλον δὲ, ἐφη, ὡνδρες, οὐδὲ ἔπιχρίσου-  
σιν, ὅποτε μετέστωσι δέσι τῷ τείχῳ αἴπεια, οὐ μὴ παῖδες πολεῖσθαι τῷ πολεῖσθαι

*Cyrus  
ed mœnia  
propriū iā  
mollit ac  
cedens.*

καλέσας τὸν Γαβρύαν καὶ τὸν Γαδάτην, ὥρα-  
γει ἄλλη ὁδὸς εἴη, ὡστε μὴ πόδιν πλησίον ἀ-  
γάν τῷ τείχοις. καὶ ὁ Γαβρύας εἶπεν· εἰσὶ μὲν,  
ὦ δέσποτα, καὶ πολλῷ ὁδὸι, δὲλ ἔγωγε, ἐφη,  
ὦ μητέρα τῷ βούλεαται αὐτοῖς πᾶν ὅπις ἐγύρτα-  
τε ἄγρυπνος πόλεως, ἵνα καὶ ἔπιδεξις αὐτοῖς  
δράτθη, ὅπισι ἕπον πολύ τε ἔστι καὶ πε-  
λέντε πολεῖσθαι εἰλεπτοῖς εἰχεῖσθαι,  
πολλοῖς οὖταις· πᾶν δὲ καὶ εἰ παρεοκβιασμένος  
τε ὄστιν, ὥστε τοὺς σὲ εἶπεν, ὅπις πολύτε-  
πολοῖς οὖταις· πᾶν δὲ καὶ εἰ παρεοκβιασμένος  
αὐτῷ τὸν σὸν διώματιν, πάλιν τὰ πολεῖσθαι  
σκιάζασα τὰ αὐτῷ φανεῖται. καὶ ὁ Κρέστορος παῖς τῷ  
τάῦται εἶπε· δοκεῖ μοι, ὡς Γαβρύα, θαυμά-  
ζει ὅπις τὸ μὲν χρέων πολὺ μείονα ἔχων ερ-  
γατῶν πολεῖσθαι αὐτῷ τῷ τείχεις πολεῖσθαι  
πᾶν δὲ πλειωδεῖσθαι διώματιν ἔχων σύκετελων τοῦ  
αὐτῷ τὰ πειχτάγαντι. δὲλλα γέρμη ταύτας  
ἐφη· οὐ γέρμη τὸν πολὺ τοῦτο τούτη πα-  
ράγει. πολεῖσθαιοις μὲν γέρμη ἀπομίλεις, οὐτω  
ταξιάνθει, τὰς αἱ σινταὶ αἱ σιναὶ μάχαδαι· αἱ αἱ  
ἀπάγγειοι μὲν τοις οἱ στάφηρες ἢ αἱ αἰσφαλέ-  
σταὶ, οὐχ ἢ αἱ τάχιστα αἴπειδειν. πατείας εἰσοί-  
δε αἰάγκηστι σύκτελαιδίας μὲν ταῦς αἰδ-  
έσταις, \*αἰδρυμένοις δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις σκιά-  
φοσις ἔπιπολύ. ταῦτα δὲ δῆποτα πολεῖσθαι  
κεκαλύφθασι τοῖς ὅπλοφόσεις, καὶ μηδαμῆ  
τοῖς πολεμίοις γυρνά ὅπλων τὰ σκιάφο-  
εις φανεῖσθαι. αἰάγκη σὺν οὐτῷ πορθμού-  
νων, ὅπις λεπτὸν καὶ ἀσθενὲς τῷ μέχριν τε-  
τέλεσθαι. εἰ δέπι βούλειτο σὺν τῷ τείχῳ αἱ  
δρόσι πη πολεῖσθαι, ὅπη προσμένειν, πολ-  
λῶν αἱ ἐρρωμένεσσι συμμιγνύοιεν τῷ πα-  
ρόντων. καὶ τοῖς μὲν ὅπις μακρὰν πορθμού-  
νοις μακραὶ καὶ αἱ ἔπιστροφα, τοῖς δὲ σὺν τῷ τεί-  
χῳ βερχόμενοις τὸς ἐργάσις καὶ πολεῖσθαι  
δραμεῖν καὶ πάλιν αἴπειδειν. οὐδὲ μηδεῖον  
αἴπειχοτες πατείαδι μὲν ἐφ' ὅσον τὰς ποτίσ-  
ται μηδεῖς, καὶ οὐ σύκτελαιδίοις πορθμού-  
νεια, τῷ μὲν πλῆνος καταφοραῖς οὐδὲν, τῷ δὲ  
τῷ παρυφασμένων ὅπλων πᾶς ὄχλος δει-  
νός φανεῖται. τέλος δὲ αἱ σιναὶ οὐτας ιότων αἱ σιναὶ  
επεξίωσι σιναῖς, σὺν πολλοῖς πολεῖσθαι τοῖς πολεῖσθαι  
μᾶλλον δὲ, ἐφη, ὡνδρες, οὐδὲ ἔπιχρίσου-  
σιν, ὅποτε μετέστωσι δέσι τῷ πολεῖσθαι τῷ πολεῖσθαι

χρεῖσθαι

χρείσθιας εἴ). Φοβερόγυρχρή ή ξπολωρόμοις. ἐπεὶ  
δὲ τῶντα εἶ πεν, ἔδοξε τε ὄφις τοῖς παρεύ-  
σι λέγειν, καὶ ὁ Γαλερίας ὡς ὡρίσκελβους  
ηγέτο. οὐχι μεταβολή δὲ τίνι πόλιν τῷ τρα-  
τεύεις, αἰσὶ δὲ πάντας πόλιντας ισχεύετε.  
εγν ποιούμενος ἀπεχώρη. ἐπεὶ δὲ πορθύμε-  
νος οὖτες εἰς τὰς γεννούμνας ἡμέρας αὐτι-  
κυνθαντας τοῖς Τὰ μεθόεια τῷ Τάσιοντας  
καὶ μήδων, ὅτενδε ὠρμάτο. οὐτείδη δὴ  
τεία ὅτα τῷ Τάσιοντας φεγύεια, εἰν μὲν  
ἀντὸν Τάσιοντας τεοςβαλὼν βίᾳ ἔλει B  
66,\* τῷ δὲ δύο φεγυείων φοβεν μὴ Κο-  
ρεσ, πείθων δὲ Γαδάταις ἐπεισε τοῦδεδοιμα  
τύς φυλαχθίσινται. ἐπεὶ δὲ τῶντα μεταρρά-  
ξατο, πέμπτος τοῖς Κυαλέαριν, καὶ ἐπέ-  
τελεν ἱκειν αὐτον δῆτε δὲ τράτθμα, ὃπως  
καὶ τε τῷ φεγυείων ὃν εἰλίφεσσαν Βου-  
λεύσαντο, πι χρήσαντο, καὶ ὃπως θασά-  
μος δὲ τράτθμα, καὶ αὖτις τῷ διγωνούμ-  
ιουλος γίγνοντο ὅ, πι αὖ δοκείν εἰς Σύπου  
ταράσσειν. εἰ δὲ κελύη, εἰπε, εφη, ὅτι ἐγα-  
πᾶς ἐκείνοντομι τραπεζόδοντομος. οὐδὲν  
δὴ ἀγέλεος ὥχει Σύτι ἀπαγέλλων. οὐ δὲ  
Κορεσ σκέλβους εἰς Σύτω τὸν Γαδάτην  
τὴν τὸν αἰσιούσιον τοικεν, εἰν Κυαλέαρδοι  
μῆδοι δέξειλον, Σύτην κατασκύδοντας ὡς  
κέλλισα τῇ τε ἀλλῃ κατασκύδη, εἰ δέ  
καὶ τῷ γυμάγκε εἰσαγαγεῖν εἰς τὸν γυμάγκ-  
να τῆν σκύδην, καὶ σὺν αὐταῖς Τὰς μουσούρ-  
γεις, αἵτη Κηρυριδίμα τοσαν Κυαλέαρδοι. οἱ  
μὲν δὴ Σύτης ἐταράσσον. οὐ δὲ πεμφθεὶς τοῖς Ι  
τὸν Κυαλέαριν, ἐπεὶ ἔλεξε Τὰς σκτελ-  
λιμά, ἀκούσας ὁ Κυαλέαρης αὐτον, ἐγνω Βέλ-  
πον εἴ) δὲ τράτθμα μῆδον εἰς τοῖς μεδο-  
είοις. καὶ γύρη οι πέρσαν, οὺς μετεπέμψα-  
το ο Κορεσ, πηγεν τοσαν δὲ μυειάδες πέτ-  
ταρες Σύτης καὶ πελατεῖν. ορμὸν δὲν εἰς Σύ-  
την πολλὰ σινομένας τὴν μηδικεν, τέτων αὖ  
ἔδοξε πῆδεν απαλλαγῆναι μῆλον, η ἀλλον  
οὐχιλον εισδέξασθαι. οὐ μὲν δὴ εἰς αρσονά-  
χων τὸν τρατὸν, ἐργάμνος τὸν Κυαλέαριν,  
ἄπολιν, καὶ τὰ Κύρευτης επισολιν, εἰπι δέοντο τῷ  
τρατθύματος, ἐπεὶ σὸν ἐφη δέοισθαι, αὐθημε-  
ρεῖν, ἐπεὶ ἕκουσε παρέστατο Κορεσ, ὥχειος τοῖς  
τέσπειδος αὐτον ἀγαν δὲ τράτευμα. οὐ δὲ Κυαλέαρης τῷ  
αρσονά-  
χων τοις πατεδον οὐδετο ο Κορεσ προσίστατο,

A nostro superiores, existimauerint. Nam  
receptus, res quādam est plenā formidi-  
nis. Quæ quū dixisset, visus est iis, qui ad-  
erant, recte dicere, & Gobryas ita, ut ius-  
serat, ducebat. Quumque præteriret vr-  
bem exercitus, sic abscedebatur, vt semper  
Cyrus postremum agmen firmius efficeret.  
Hoc modo pergens, diebus insequen-  
tibus ad Affyriorum Medorumque limi-  
tes peruenit, vnde initiu expeditionis fe-  
cerat. Ibi quum essent Affyriorum castel-  
laria, vnum, quod erat infirmissimum, vi-  
B adoptus cepit: reliqua duo, Cyro metum  
incutiente, suadente Gadata, perfectum  
est, vt præsidarij dederent. Quibus rebus  
confectis, ad Cyaxarem misit, atque ut ad  
exercitū adesset, per epistolam petuit: quo  
& de castellis captis quid esset agendum,  
deliberarent; & exercitum ipse contem-  
platus, de ceteris etiam rebus consule-  
ret, quid deinceps agendum arbitraretur.  
Quod si iusserit, ait, dico me ad ipsum  
venturum, & istic castra locaturum. Ita-  
que nuntius, qui hæc exponeret, abibat.  
Cyrus interea Gadata mandat, vt taber-  
naculum Affyri, quod Cyaxari Medi se-  
legerant, cum adparatu reliquo, quem  
habebat, instrueret elegantissime: tum  
vtramque mulierem in conclave taber-  
naculi muliebre deduceret, & cum his  
etiam musicasillas, quæ Cyaxari exemptæ  
fuerant. Hæc illi exsequebantur. Qui ve-  
ro missus erat ad Cyaxarem, quum man-  
data exposuisset, ea que Cyaxares audiis-  
set: visum est ei potius, vt istic in finibus  
exercitus maneret. Nam & Persæ, quos  
Cyrus arcessuerat, aderant: qui quidem  
Derant numero ad quadragies mille sagit-  
tarij & cetrati. Quamobrem quum vide-  
ret, hos etiam magnum Medorum agro  
detrimentum adferre; libentius his quo-  
que liberari velle videbatur, quā vt aliam  
turbam insuper admitteret. Quimque is,  
qui e Persia copias hasce ducebat, Cyaxa-  
rem interrogaret, quemadmodum Cyrus  
præceperat, an opus ipsi hoc exercitu esset,  
atque is opus esse sibi negaret: eodem die  
ad Cyrum pergebat exercitum ductitans,  
quo illum adesse audierat. Cyaxares po-  
stridie cum iis, qui secum maledicabant, equi-  
tibus Medis, iter est ingressus: quem vbi  
Cyrus aduenire sensit, summis secum &  
Persicis equitibus, qui iam multi erant,

& Medis omnibus, & Armeniis, & Hyrcaniis, & qui reliquorum sociorum equis & armis instructissimi erant, obuiam prodit, & copias ei spectandas exhibuit. Cyaxares, vbi multos & egregios fortesque viros in Cyri comitatu conspicit, secum vero & exiguum, & non magni aestimandam famulorum manū: id sibi dedecori esse putauit, adeoq; dolorem ex eo cepit. Quumque Cyrus ab equo iam descendisset, ac de more osculatus ipsum accederet: descendit ille quidē ex equo, sed auertit se: nec osculatus est eum, sed lacrumas palā profudit. Tum vero Cyrus alios quidē omnes secedere iussit & quiescere: ipse dextra Cyaxaris prehēsa, de via sub palmas quasdam eum abduxit, & stragula quædam ei Medica sub sterni iussit, in quæ quum eum collocasset, & ad sedis sit ipse, sic interrogavit: Dic mihi, per Deos immortales, mi auncule, quamobrem irasceris mihi? quid rei molestæ vides, quod vsque adeo fers grauiter? Heic Cyaxares huiusmodi quædam respondit: Quia quum, Cyre, existimer inde vsque ab omni hominum memoria tum maioribus iam olim regibus, tum patre rege procreatus esse, atque etiam ipse rex habear, me quidem adeo vi liter indigneque aduehi conspicio, te vero famililio meo, ceterisq; copiis magnū & magnificum adesse. Atque haec, measentia, vel ab hostibus pati graue est; sed multo, pro Iupiter, grauius ab illis, a quibus perpeti minime decebat. Evidem arbitror esse satius, decies sub terram condi, quam adeo vilem me conspic, meorumque neglectionem & irrisiōnem cernere. Non enim nescius sum, non te solum me maiorem esse: sed etiam seruos meos maioribus cum copiis, quam mea sint, mihi occurrere, atque ita paratos esse, vt facilius me lædere possint, quam a me lædi. Quæ dum proferret, multo etiam magis eum superabant lacrumæ: adeoque Cynam ipsum eo pertraxit, vt oculi eius lacrimis implerentur. Quium autem paulum se cohibusset, ita Cyrus loquitus est: Tu vero, mi Cyaxares, nec vera dicis, nec recte iudicas, quū Medos existimas propreterea, quod adfuerint mihi, sic instruetos esse, vt ad te lædendū satis viriū habeat. Te quidem & irasci, & in metu esse, nō miror.

Cyri ex-  
cusatio.

�τιναγ δαχρύων τὰ ὄμματα. ὀπίσχων ἐμπρὸν ἐλέξει τιάδε οὐ Κυαξάρη, οὔτε λέγεις τάλπως, οὔτε ὄρθως γιγνώσκεις, εἰ οὐ τῇ ἐμῇ παροσίᾳ μήδους κατεληθεῖς, ὡς λειχθεὶς εἰς τοις ποισταῖς.

εἰ μὴ τοι

καὶ τὸς μῆδους πολὺ τε καὶ τὸς σφραγίδες, καὶ τὸς ὑργανίδες, καὶ τὸν ἄλλων συμμάχων τὸς τάλπων παστότοις τε καὶ διοπλοπάτοις, απίνακας τε καὶ θηρεύκηνοι τῷ Κυαξάρῳ τὸν διάπολον. ὁ δὲ Κυαξάρης, ἐπεὶ εἶδε σὺν μὲν τῷ Κύρῳ πολλοῖς τε καὶ παλαιάσ παγαδοῖς σωματίδοις, σὺν ἔστι δὲ ὀλίγων τε καὶ ὀλίγους αξιαρχεαπειάν, απέμον τι ἐδόξει αὐτῷ εἴπει, καὶ ἄχος αὐτὸν ἐλασσον. ἐπεὶ δὲ καταβαῖς οὐ Κύρης διπλὸν τὸν πατέρα τοιούτον τοιούτον φιλόποτον μὲν οὐ, δαχρύων δὲ φανερὸς οὐ. ἐκ τούτου δὲ οὐ Κύρης τὸς μὲν ἄλλοις ἀποτελεῖται πάσαις αἵρεσις, αἱρεσίας σκέλελουσ αἰαπαύσασθαι αὐτὸς δὲ λαζόποδας τὸν διδόνει τῷ Κυαξάρῃς, καὶ αἴπαγαντον τὸν διδόνει τῷ Φοίνικας πόλεας, τὸν τε μηδικῶν πόλων τοσούταλφι σκέλελουσ αὐτῷ, καὶ καθίσας αὐτὸν καὶ τοῦτον διδόνειον τὸν πρετόλην οὐδὲ εἰπει μοι, ἐφη, τοῦτος εἰπει οὐδὲ, Στήνθειν, ὡς θεῖ, τί μοι ὄργιζη; καὶ τί χαλεπὸν ὄραν οὔτε χαλεπῶς φέρει; αἰτεῖται δὲ οὐ Κυαξάρης απεκρίνατο τιάδε· οὐπι, ἐφη, οὐ Κύρες, δοκῶν γε δὲ, ἐφ' οὐσον αἰτεῖται μηδέπιτελον οὐταντα, καὶ τὸν παλαιότερον τοῦτον καὶ πατέρα βασιλέως πεφυκέναι, καὶ αὐτὸς βασιλές νομίζοντος εἴπει, ἐμευτὸν μὲν ὄρα οὔτε τοπεινῶς καὶ αὐτὸς ἐλαύνοντα, σὲ δὲ τῇ ἐμῇ περιποτείᾳ καὶ τῇ ἄλλῃ διαμάρτυρι μέχρι τε καὶ μεγαλεφερῆ παρέστη. καὶ τοῦτα χαλεπὸν μὲν σίματα καὶ τοσούτα πολεμίων πατεῖν, πολὺ δὲ, ὡς ζεῦ, χαλεπότερον, οὐφὸν ὥν τοιςαὶ ἐχεῖν τοῦτα πεποιθέναι. ἐγὼ μὲν γέρος δοκεῖνακις αὐτὸν τὸν τύπον διέβοι διωκαὶ, οὐ φένειας οὔτε τοπεινῶς, καὶ ίδειν τὸς ἐμοὶς διωκαὶ, οὐ διωκαὶ, οὐδὲ οὐδὲν τοιςαὶ ποιησαὶ μᾶλλον ἐμέποιον εἰ, διλλά καὶ οἱ ἐμοὶς δοῦλοι οὐδυρέτεροι εἰ μοῦ τοιςαὶ ιδεῖν μοι, καὶ κατεσκευασμένοις εἰτοιεῖσιν οὐτε διωκαὶ ποιησαὶ μᾶλλον ἐμέποιον εἰ. Εκακῶς, οὐ παθήσαστος ἐμοῦ. καὶ ἀμαρτιών τοιςαὶ λέγων, πολὺ οὐ πατέλλοντες εἰτοιεῖσιν τοιςαὶ τὸν διωκόνων. ὡς λειχθεὶς τῷ Κύρῳ ἐπεσσόσατε ἐμπληκτούς, τοιςαὶ λέγων, οὐτε λέγεις τάλπως, οὔτε ὄρθως γιγνώσκεις, εἰ οὐ τῇ ἐμῇ παροσίᾳ μήδους κατεληθεῖς, ὡς λειχθεὶς εἰς τοιςαὶ ποισταῖς.

εἰ καὶ τοι γε δικαίως ή ἀδίκως αὐτοῖς χαλεπά  
πάντες, παρήσω τόπο. οἶδα γέροντα Βαρέας  
αἱ φέροις ακηγών ἐμοὶ δύσπλαστου μήντος  
αὐτῷ. Εἴ μή τοι αὔδρα δέχονται πᾶν ἄμα  
χαλεπάντι τοῖς δέχοντινοις, τόπο ἐμοὶ δο-

οὐδὲ μὲν οὐδὲ αὐτὸς τιμαῖς). αὐτούς καὶ γέρες  
το παλλάξεις οὐδὲ μὲν Φοβεῖν, πολλοίς εὔχροοίς ποιεῖ-  
σθερούς

Θα, οὐδὲ δέ ὁ ἄλιτρος πᾶσι χαλεπάντι, πᾶ-  
σιν αἵτινις ὅμονοιαν ἔμβαλλε. ὃν ἔγενε, διὸ ί-  
δι, ἐγὼ σύχει απεπεμπον αἷδος ἐμαντίζει-  
τος, φοβούμενος μή τι θύμοις Διὸς τὴν σὺν  
ὅργειν Γό, η πομπαὶ ἡμαῖς λυπησοῦ. \* Ταῦτα  
τέλος σῶν τοῖς θεοῖς ἐμοὶ παρέγιτος αὐτο-  
τοῖς λαβεῖς τέλεσσοι. Θελόμενοι τοις νόμοις εἰς τὸν ἐμοὶ  
ἀπίκειαται, τοῦτον ἐγὼ χαλεπῶς πολὺν φέρω,  
εἰ δοκεῖ ὅσον διώματος τὸς φίλους ὡς πλε-  
σταί ἀγαθὰ ποιεῖ, ἐπειτα τούτων τούτου δο-  
κεῖ ἐργάζεσθαι. Διλατά γέροντος, μή οὐ ταῖς  
εἰκῇ ἡμαῖς αἵτινις αἰτίωμετα, διλατά, εἰ διω-  
πον, σαφέστα κατέδωμεν ὁ ποιόν τοις θεοῖς θεωρ-  
έμοις αἴσιοντα. καὶ τὸν σὺν φίλοις δικαιοτά

τὸν παῦθεον τέχναν παραπλεμεῖ· ἵνα γέρει  
πάντας· οὐ εἶτα φαῖται κακὸν πεποιηκάς, ὁμολογῶ ἀ-  
ποφασίων· δικεῖν· οὐδὲ τοι μηδὲ φαίνομεν κακὸν πε-  
ποιηκάς, μηδὲ βουλητέis, οὐ καὶ σὺ αὖ ὁμο-  
λογήσεις μηδὲν ταῦτα ἐμοὶ αἰδίκειαται; Διλ-  
αίγηκτο, ἔφη. ἵνα δὲ δὴ καὶ αὐτὸν πεποιη-  
κάς σοι δῆλος ὁ, καὶ πεποιημόντας πεποιη-  
ζαί σοι πόσα πλέσα ἡδυάριν, οὐκ αἱ ἐπαγ-  
γεῖσαι σοι ἀλλιούς εἴτε μᾶλλον, η μέμνησας; δι-

καπον τεσσαριν, εφη. αὐτοὶ θεῖαι, εφη οἱ Κυρέες, σχε-  
πῶμεν Ταῦτα ἐμοὶ πεπεριγμένα πόντα καθ'  
ἐνέχεσσον. οὗτοι γάρ δὴ μελισσαὶ δῆλοι οἵτι-  
οι, πιτὲ αὐτῷ Μάγαδον ὢντα, καὶ οἱ πικάκοι. Δέ-  
ξιώμενα δὲ, εφη, σὺ τοῦ δε τῆς δέκτης, εἰ καὶ  
οὐδὲ δοκεῖ προκείμενας εἶχεν. οὐ γάρ δὴ που ε-  
πεὶ οὐδου τολλοῖς τολεμίους ή δειρομέ-  
νους, καὶ τούτους δῆλοι σὲ καὶ τὴν σὺν χάρακι  
ωρμημένους, διῆς ἐπεμπτες περέστε διαφ-  
σῶν κεινὸν, συμμετέχεις αὐτούμνος, καὶ περ-  
έμειδία, δεօμνος πειρᾶσθαι αὐτὸν με ἐλ-  
θεῖν ιησούμνον, εἰ τινες καὶ σῶν ιοιεν. Σόκοι οἱ  
γὰρ ἐπειδή τε τούτα ταῦτα σοῦ, καὶ παρεγ-  
νόμνην. αἴδης αἴγανος τοι τὸς ἐδυνάμνην πλεί-  
στος τῇ γαίσισσος; Ηλίας γάρ οὖν, εφη. σὺ τούτῳ  
τοινα μοι περιστον εἰπε, εφη, πότερον αἰδίκιαν

A Vtrum autem iure, an iniuria eis succen-  
seas, equidem omittam. Quippe scio te  
grauiter laturum, si me agere caussam ho-  
rum audias. Sedenim hominem, qui cum  
imperio sit, subiectis sibi pariter omnibus  
succenfere, magnum equidem errorem  
arbitror. Est enim necesse, multos infestos  
fieri, quum quis terrorem multis incutit:  
& omnibus ineundæ concordiae occasio-  
nes suggeri, quum quis omnibus succen-  
set. His de caussis me scire debes hos ad te  
sine me non remissis, quod metuerem, ne  
B quid ob iracundiam tuam accideret, quod  
nobis vniuersis dolorem adferret. Itaque  
Deum ope nullum hæc tibi me præsente  
periculum creabunt. Quod vero existi-  
mas, iniuria te affectum a me esse: graui-  
ter admodum fero, si dum in eo pro virili  
laboro, ut in amicos plurima beneficia  
conferam, contrarium huic facere videar.

Verum enim uero ne nos met, ait, adeo temere criminemur & insimulemus: sed, si fieri potest, planissime videamus, qualis illa sit a me illata iniuria. Atque equidem aequissimam inter amicos condicionem ferro. Nam si me pareat quidquam mali fecisse, iniustum me fatebor: si me nihil admis-isse pareat, ac ne cogitasse quidem, an non & ipse fatebere, nulla te affectum a me iniuria? Id vero necesse fuerit, ait. Quod si autem pareat, etiam boni me auctorem exstitisse tibi, studioseque in id incubuisse, ut quampluima beneficia possem, in te conferrem; an non potius laude tibi dignus habear, quam reprehensione? Aequum scilicet ait. Age igitur. inquit Cyrus consi-

Cyri ergo  
Cyaxas ē  
meritorum  
commendo  
ratio.

deremus singillatim omnia, quæ a me ge-  
sta sunt. Sic enim maxime parebit. quid in  
iis boni sit, quid mali. Atque ordiamur sa-  
ne ab hoc principio, si quidem tibi suffici-  
re videtur. Tu enim, quum animaduerte-  
res, multos hostes conuisse, & quidem ad-  
uersus te, tuamque ditionem domo pro-  
gressos esse: illico tum ad Persas publice  
misisti, qui subsidiarias copias poscerent,  
tum ad me priuatim rogans, ut operam da-  
rem, quo venirem ipse, copiarumque Per-  
sicarum, si quæ ad te irent, ductor essem.  
An igitur in his non abs te persuasus sum,  
E non adfui, nō militē adduxi numero, quā  
potui, maximo, & eundē præstantissimum?  
Venisti vero, inquit. Ergo, ait, mihi primū  
dicito, vtrum in hoc iniuriam aduersum  
te meam deprehenderis, an beneficium?

Cyrus ex Plut. πεδίον τις  
axarim διασχίζει τούρκον  
refusa. Λαρνακή φίλα. p. 120

Cyri ergo  
Czaxa &  
meritorium  
commendo  
ratio-

Planum est, inquit Cyaxares, ex his beneficium me tuum cognouisse. Quid vero, vbi venerunt hostes, & dimicandum aduersus eos erat, an tum animaduertisti, me vel laborem illum detrectasse, vel pepercisse periculo? Non profecto, non equidem. Quid? vbi Deum ope victoria penes nos stetit, hostesque iam cederent, atque ego te rogarem, ut communibus eos copiis insequeremur, communis opera in eos vindicaremus, communem denique siue boni, siue mali fructum caperemus, quidquid tamdem accidisset; in his an accusare me possis, quasi proprij emolumēti plus a quo cupidus fuerim? Ad hæc Cyaxares subtricit. Et Cyrus rursus ita locutus est: Quādō tibi ad hoc tacere potius lubet; quam respondere: id mihi dico, adfectumne te sis arbitratus iniuria, quod, quum tibi tutum nō esse videretur persequi, te quidem ipsum periculi huius participem fieri non sum passus, sed ut equites mihi quosdam de tuis mitteres, rogaui? Num enim id abs te petens, iniuste fecerim, præsertim qui iam ante me tibi socium belli præbuisssem, abs te, inquit, demonstretur. Ad quæ Cyaxares quum itidem taceret: Quod si ne ad hoc quidem, inquit, respondere vis; deinceps dico, an iniurius fuerim, quod quū tu mihi responderes, nolle te, qui Medos hilaritati operam dare videres, ab hac reuocatos cogere, tūc ad profectionem cum periculo coniunctam: an inquam videar molestum aliquid tibi fecisse, quod irasci tibi noluerim; sed post hæc rursus abs te id petiuerim, quo sciebam nihil a te mihi tribui posse leuius, neque Medis imperati facilius? Rogabam enim, ut eos mihi dares, qui sequi vellent. Quod quum abs te impetrasset, perfeci nihil, extraquā persuadendo. Itaque eos accessi, persuasi, persuasos accepi atque abij, tuo permisu. Quod si hoc merito culpādum existimas, ne quidem culpa vacat, vti videtur, aliquid abs te accipere, quod dederis. Sic igitur profecti sumus. At postquam discessimus, quid gestum a nobis est, quod omnibus notum nō sit? an non hostium castra capta sunt? non plures eorum interficti sunt, qui contra te venerant? Quin & viuis adhuc hostibus an non plerisque ademta sunt arma, plerisque equi? Fortunas quidem corū, qui antehac ferebant, agebant res tuas, iā vides amicos tuos & possidere, & secum adferre partim tibi, partim sibi, qui tuo tamē imperio con-

χειν. Τὸν πόμπων μέγιστον καὶ κάλλιστον, τὸν A tinetur. Quid vero longe omnium maximum est & præclarissimum, vides ditionem tuam ampliorem fieri, hostiū imminui: vides illorū castella teneri, ac tua, quæ auilia Syri suam in potestatem redigerant, nunc e contrario tibi cessisse. An horum aliquid vel bonum, vel malum sit, cognoscere velle, equidem quid sibi velit, dicere nequeo: quo minus tamen audiam, nihil impedit. Dic igitur, quæ tua de his sententia sit. Hæc quum dixisset Cyrus, finem fecit, Cyaxares vero ad hæc respondebat: Nescio qui dici possit, Cyre, ea quæ fecisti, mala esse. Verum scire te volo, hæc bona eiusmodi esse, ut quanto plurimi speciem habent, tanto magis mihi sint ὄντες. Nam malum equidem ditionē tuam copiis meis ampliorem facere, quam vide re tali modo abs te augeri meam. Quippe tibi hæc gerenti honesta & laudabilia sunt, mihi quodammodo ignominię notam inurunt. Etiam opes, ait, tibi me donare malim, quam abs te accipere, quæ tu nunc mihi tribuis. Nam iis abs te locupletari me plane sentio, quibus ipse pauperior fio. Quod si subiectos mihi viderem modica quadam abs te affectos iniuria, minus dolorē, mea sententia, quam nunc, vbi magnis abs te affecti sunt beneficiis. Ac si quidem hæc parum humaniter & absque iudicio tibi cogitare video, non ea in me, sed in te conuersa, qualia tibi videantur, considera. Quid enim, si quis canes, quos tu aleres custodiæ tuæ tuorumque caussa, tales commode curatō reddat, vt illum magis, quam te norint; an hoc curationis genere te delectaturus sit? Quod si exiguū hoc tibi videtur, id etiam considera; si quis tuos e familia ministros, quos & custodiæ & præsidij catiba, & vt te colant, tecum habes, eiusmodi efficiat, vt ipsius esse malint, quam tui; an pro eo beneficio gratiam illis habiturus? Quid vero, quod vnum amore maximo complectūtur homines, & curæ in primis vt sibi proprium habent, si quis vxorem tuam sic obsequiis detinere tur, vt tandem efficeret eam sui magis amantem, quam tui; num hoc beneficio te delectaret? Nihil, mea quidem sententia, minus. Immo iniuriam tibi hoc facto maximam inferret. Ut autem quod dolori meo simillimum est, dicam; si quis Persas

eos, quos tu ad nos duxisti, sic demeretur, ut ipsum lubentius, quam te sequeretur, an hunc tibi amicū duceres? Evidē haud arbitror, sed infestiorē putares, quam si multos tuorum occideret. Quid si amicus quispiam tuus, te amanter dicente, Accipe de rebus meis, quātum voles; posteaquam id audisset, iret, atque omnia, quae posset, acciperet; tuisque adeo rebus ditaretur, quum tu ne modicum quidem earum frumentum perciperes: an posses expertē culpā amicum hunc existimare? Nūc autem abste, mi Cyre, si non hæc, tamen his similia perpeccum me arbitror. Nam vera narras, quum ego dixisse, posse volentes abducī, discessisse te ita; vt omnes meas copias acciperes, & me solum relinqueres. Iam autē, quae opera mei exercitus cepisti, adfers sane mihi, ac meis viribus ditionem hanc auges: atque equidem nullius boni tecum auctor, instat feminæ me offerre videor, & exhibere, vt beneficia tum ab aliis hominibus, tum etiam ab his imperio meo subiectis accipiam. Tu viri specie habes, ego indignus iudicor imperio. Hæc cinet tibi, Cyre, videntur esse beneficia? Ignorare profecto nō debebas, si te vlla mei cura tangeret, in primis tibi caendum, vt nulla reminus me spoliares, quam auctoritate ac dignitate. Nā quid accedit ex eo mihi, si maxime regio mea dilatetur, ipse per ignominiam cōtemtui sim? Nec enim idcirco Medorum ego potitus sum imperio, quod vnuſ præstatiōr vniuersis essem; sed potius, quia ducerent illi, nos in omnibus se meliores esse. Tum Cyrus, adhuc loquente Cyaxare, sermonem ipsius excipiens, ait: Per Deos immortales, mi auuncule, si quid ego tibi antehac feci, quod gratum esset; etiam tu in his mihi gratificare, quae petam. Finem scilicet de me querendi hoc tempore facito. Vbi vero periculum de nobis feceris, quo pacto affecti erga te simus: si quidem paruerit ea, quae sunt a me gesta, tui boni causa gesta esse, me amplectēte te vicissim amplectere, beneq; de te promeritum existima: sin aliter, de me queritor. Fortassis, ait Cyaxares, recte dicas; atq; equidem hoc faciam. Quid igitur, ait Cyrus, an etiam te osculabor? Si voles, inquit. Neque me auersaberis, vt modo? Non auersabor, ait. Itaque Cyrus eum est osculatus. Quod quum Medi, Persæ, ceteri viderent, (erant enim omnes solliciti, quid de his futurum esset) statim affecti læticia, & exhilarati sunt.

Cyriusque  
rellas Cy-  
axaris ab-  
rumpit.

Cyaxares  
cum Cyro  
redii in  
gratiam.

A οὐτως τε πολύ σφεν κόστε αὐτῷ οὐδέν επειδη  
ησσι, ἀρ' αὐτὸν φίλον αὐτὸν νομίζοις; οἶμα γάρ οὐ,  
διὰ πολεμιώτερον αὐτὸν εἰ πολλοὶ αὐτῷ  
καταχθόνοι. Πέρι δέ, εἰ περ τῷ σῶν φίλων, φίλο-  
φρέγων σου τείποντος, λαζαρετῷ εἰδὼν ἐπίποντος  
πόσα ἔθελες, εἰ τῷ πολεμούσας οἰχοῖς λαζεών λαζαρά-  
ποντα ὁ πόσα διώαγο, καὶ αὐτὸς μὴν τοῖς σοῖς ἐσελθεῖ  
γε πλαισίον, οὐδὲ Γριπέ \* μετεῖοις ἔχοις  
χεῦσας ἀρ' αὐτὸν διώαγο τὸν τοιούτον ἀμεμπτον  
φίλον νομίζειν; νῦν τούτοις ἐγώ, Κύρε, εἰ μὴ  
B Ταῦτα, διὰ ποιῶντα ταῦτα σοῦ δοκῶ πεπον-  
θεῖσαι. οὐ γάρ αλλοδῆ λέγεις, εἰπόντος εμοῦ τὸς  
ἔθελοντας ἄγαν, λαζεών φύχει πᾶσαι μου τὴν  
διωνάμην, εμέ τοι ἔρημον κατέλιπες. καὶ τοῦ ἀ-  
λαζεώς τῇ ἐμῇ διωνάμῃ, ἄγαν δέ μοι, καὶ τὴν ἐ-  
μοῦ χώραν αὔξεσσιν τῇ ἐμῇ τῇ διωνάμῃ ἐγάραμψ.  
οὐδοκῶ, οὐδὲν συνάγοις ὡν τῷ άγαθαν, παρ-  
έχειν εμεῖστον ὥστε γυνὴ δέ ποιεῖ καὶ τοῖς πε-  
άλλοις αὐτοῖς ποιεῖσθαι, καὶ τοῖς δέ τοῖς εμοῖς ταῦ-  
τα. οὐδὲν γάρ αλλοτρό φάμη, ἐγώ δέ οὐδὲν αὔξεσ-  
C στραχής. Ταῦτα διῶ \* σοι δοκεῖ εργετήματα  
ἔτι, καὶ Κύρε, δέ τοι δέ, εἰπε εμοῦ ἐκίνδου, δε-  
νός αὐτῷ τῷ με δύστερον ἐφυλάξτη, ὡς αὔξιό-  
μελος καὶ πυρῆς τί γάρ εμοὶ πλέον δὴ τὴν γῆν  
πλαταιέσθαι, αὐτὸν δέ πιμαχεῖσθαι; οὐ γάρ  
τοι ἐγώ μηδαν ἔρχομαι, δέ τοι δέ πρεπειν πομπών  
αὐτῷ εἴτι, διὰ πάλιον τὸ δέ τοι δέ τοι τὸς πομπῶν  
τοις αὔξιοις ἡμαῖς αὐτῷ πομπά βέβητος εἴτι. τὸς τού-  
τος αὔξιον  
καὶ Κύρος ἐπιλέγοις αὐτῷ ταῦτα λαζεών εἰ-  
πε πομπῶν τῷ δειλινῷ, ἐφη, καὶ δεῖ, εἰπικαγάσσοις αὐτῷ.  
D ταῦτα τερεντούς εὐχεισάμενοι, καὶ σὺ νῦν εμοὶ χά-  
σισκα ὡν αὐτὸν δειπνό. πάνσα, ἐφη, δέ νῦν  
εἴτι μεμφόριον μοι επειδή δέ πειραγμένη  
λαζεώς, δέ πως ἔχομεν ταῦτα σὲ, οὐδὲν σοι  
φάγηται. ταῦτα εμοῦ πειραγμένα δέ τοι δέ τοι τῷ  
τῷ άγαθῷ τῷ σῷ πεποιημένα, αὐτοαρμέ-  
νου τὲ εμοῦ σὲ δύτασάσου με, δέ εργέτην τέ ζομένου  
νομίζε[ εἴτι]. \* οὐδὲ δέ τοι δάπεδο, πότε μοι  
μέμφου. διὰ τοις τοι, ἐφη Κυαλεάρης, κα-  
λως λέγεις. ταῦτα ποιόντα Ταῦτα. Πέρι δέ  
εἴτε οἱ μηδοι καὶ οἱ πέρσαι καὶ ἄλλοι [ πολ-  
λοί], \* (πάντοι γάρ ἔμελεν ὅ, πάντα τούτων εσσο-  
το) διῆς παθησά τε καὶ ἐφαυδριῶνται.

χεῦσας

A Cyaxares & Cyrus consensis equis præbant, Medis Cyaxare sequētibus, (sic enim nutu Cyrus eis significarat) Persis Cyrum: post alij sequebantur. Vbi ad castra per- uētum esset, Cyaxarem in tabernaculum paratum collocarunt; & ei, quibus hoc da- tum erat negotij, necessaria parabant: Me- di ceteri, quamdiu ante cœnam otioius Medi Cy- axari dāb mantrā, Cyaxares erat, accedebant eum, partimq; sponte sua, partim mandato Cyri, quorum erat maximus numerus, munera ferebant; alius bellum pocillatorem, alius bonum coquum, alius pistorem, musicæ artificem alius, alius pocula, vestem alius elegatēm. Maxima quidem ex parte quilibet vnum quiddam eorum, quæ ceperat, ei donabat: vt Cyaxares adeo sententiam deinde mu- taret, ac neque Cyrum eos ab se auertisse, neque minus, quam ante, a Medis se ob- seruari duceret. Quum autem cœnæ tem- pus adpetiisset, accessit Cyrum Cyaxares, ac rogat: vt, quando iam longo tempotis ex interuallo eum videret, secum cœna- ret. Cui Cyrus: Ne iussēris hoc, inquit, mi- Cyrus de- Cyaxares. An non vides, hos omnes qui lica: am adsunt, a nobis impulsos adesse? Quamob- cœnam re- rem non recte fecero, si hos negligens, vo- luptati meæ indulgere videar. Nimirum vbi se negligi putant milites, tum & fortis qui sunt, multo animis deiectiores euadūt, & improbi petulantiores. Verum tu, qui præsertim longo itinere confecto adueni- sti, cœnato iam; & si qui te colunt, illos vi- cissim complectere, cœnaque excipito, vt per eos animo bono sis. Ego vero ad ea me conuertam, quæ dixi. Cras autem mane heic ad portam tuam omnes, quos conue- nit, aderunt; vt tecum deliberemus, quid- nam deinceps agendum sit. Tu vero præ- sens de hoc referto, videaturne amplius bellum esse gerendum, an opportunum sit iam dimittere exercitum. Post hæc Cy- axares cœnabat. Cyrus vero conuocatis a- micis, qui maxime & ad intelligendum, & ad nauandum operam, si quid v̄lus postu- laret, idonei erant, huiusmodi eos oratione compellauit: Quæ primum optauimus, a- mici, ea Deum benignitate nobis adsunt. ENam quoctimque tandem pergimus, ho- stium agro potimur: atque etiam hostes imminui videmus, quum nos & numero & robore augeamur. Quod si manere no- biscum socij velint, qui ad nos iam acces- ferunt: multo magis pleraq; perficere po- terimus, siue quid opportuna vi agendum,

» siue persuadendo sit obtinendum. Qua-  
» propter non tam mei, quam vestri munc-  
» ris fuerit molifi, ut maximę sociorum par-  
» ti nobiscum manere placeat. Quemadmo-  
» dum vero, quum pugnandum est, is, qui  
» plurimos capit, fortissimus existimatur: ita  
» qui plurimos nostram in sententiam ad-  
» ducit, quum consilium ineundum est, is  
» iure tam dicendi, quam agendi peritissi-  
» mus haberi debet. Neque tamen in hoc  
» vos exercueritis, ut orationem nobis ostē-  
» tetis, qua vsuri ad quemque sitis: sed ita eos  
» parate, ut se persuasos a quolibet vestrum,  
» factis declarent. Ac vobis quidem hæc cu-  
» ræ sint. Ego pro mea virili curare conabor,  
» vt milites a commeatū instruēti, de expe-  
» ditione deliberent.

τωμαγκ, οἱ ἑράκλινῶποι τὸν ἑράκλεοθα βελτίωνται, τὸν πλεύσομεν ὅπερι μήδεια.

Αὐτὸν πάσιν δέοις. ὅπως διαν οὐδέν  
εστιν συμβοκῆτη συμμάχων, τοῦτο μᾶλλον τό<sup>το</sup>  
ἔμοι ἔργον τὴν κύριον τερψίν μηχανᾶς, ἀλλ' ὡς  
αριθμὸς \*ότου μάχεας δέη, οἱ πλείστους χρω-  
στάκους, δήκινοι μετά τούς δοξάζεται τῇ, γάτων καὶ  
Τότου περιδέη Βελῆς, οἱ πλείστους ὄμοι γάμονται τοις πε-  
ντινοῖς πυρίσας, τοῖς δικτίων αἰλαγκιώτατος τέ  
καὶ ταχακιώτατος κρίνοτο αἱ τῇ. μὴ μὲν τοι  
ως λαζαρίν ήμιν τηνίδες ζόμπροι, οἵ τινες εἴποιτε  
ταχέστις ἐκεῖνον αὐτῷ, τόπο μελετῆτε, ἀλλ' ὡς  
Βενετοπεπομένις οὐφένεισου, διήλειτος ἐσομέ-  
185 οῖς δινούσι ταχακίωσιν, γάτων ταχακιώταζετε.  
καὶ οὐδέντοι, ἐφη, τέτων τηνίδες μελέσθε ἐγὼ δέ, οὐ-  
πέστις αἱ ἔχοντες τὰ τηνίδα, οὐσα αἱ ἐγὼ δύ-

ΞΕΝΟΦΩΝΤΟΣ ΚΥΡΟΥ ΠΑΙ-  
ΔΕΙΑΣ ΙΣΤΟΡΙΩΝ, ΒΙΒΛΙΟΝ

E K T O N.

XENOPHONTIS HISTORIA-  
RVM DE INSTITUTIONE  
CYRI, LIBER SEXTVS.

V M hoc modo diem  
hunc exegissent, cœ-  
nati quieuerunt. Po-  
stridie mane ad Cya-  
xaris portā socij omnes  
conueniunt. Itaq; dum  
Cyaxares ornaretur,  
qui audifet magnam multitudinē ad por-  
tam adesse; interea adducebant amici ad  
Cyrum, alij quidem Cadusios, rogātes vti  
manceret; alij Hyrcanios, Gobryam hic, il-  
le Sacam: Gadatam castratum adducebat  
Hystaspas, orantem Cyrus, vti maneret.  
Ibi Cyrus, qui Gadatam iam dudum in-  
teriisse nosset præ metu, ne exercitus di-  
mitteretur, cum risu ait: Manifesto patet,  
Gadata, te ab hoc Hystaspa persuasum ea